t.me/HindiNovelsAndComics

माही...

एक अधूरी ज़िंदगी

नंदनी अग्रवाल

t.me/HindiNovelsAndComics

माही एक अधूरी जिदंगी

नंदनी अग्रवाल

t.me/HindiNovelsAndComics

आभार

यह मेरी पहली किताब है। मेरी माँ रेखा अग्रवाल और पिता एच॰ एल॰ अग्रवाल के बिना मैं यह किताब नहीं लिख पाती। मैं उन सभी को तहेदिल से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिनके कारण मेरा यह सपना हकीकत बनकर एक किताब के रूप में आपके सामने है। जिन्होने कभी मेरी तीखी आलोचना की, तो कभी मेरे काम को सराहा भी। मेरे सभी दोस्त, मेडीकल कॉलेज के सभी छात्र जो प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से इस किताब से जुड़े हुए है। प्रत्येक मेडीकल कॉलेज मे आप आदित्य, सोनू और नव जैसे किरदारो से रूबरू होंगे, इसलिये इस किताब को काल्पनिक कहना उन तमाम मेडीकल छात्रों के साथ नाइंसाफी होगी जिनकी जिंदगी इन तीनों के इर्द-गिर्द घूमती है।

यह किसी की जिंदगी से जुडा अटूट सच है। उस व्यक्ति की गोपनीयता को समझते हुए, कई घटनाये तथा नाम काल्पनिक रूप से लिखे गये है। इसे लिखने की प्रेरणा मेरे आसपास मुझसे जुड़े लोगों से मिली है, जिनकी जिंदगी को मैनें इस किताब के कुछ पन्नों पर अंकित करने का भरसक प्रयास किया। उम्मीद करती हूँ मेरी यह पहली कोशिश आप सभी पाठकों के मन को छू जायेगी।

नंदनी

t.me/HindiNovelsAndComics

समर्पण

मेरे दादा स्वर्गीय श्री प्रभु दयाल अग्रवाल को समर्पित।

t.me/HindiNovelsAndComics

विषय सूची

1. शुरुआत 5
2. 2008 7
3. दिल्ली में शिफ्ट 18
4. डायरी की नई शुरुआत..... 30
5. आदित्य की फाइल (कॉलेज का पहला दिन) 32
6. प्रेगनेंसी किट 42
7. रेगिंग 48
8. फाइल डिसेक्शन हॉल 55
9. ड्रिंक 58
10. सोनू का पोपट 65
11. वेलकम पार्टी 83
12. क्रोनिक पेरोटाइटिस डिसीस 86
13. मिशन ऑफ मिडनाइट वॉक 90
14. डिसेक्शन हॉल 98
15. ऑपरेशन 114
16. माँ पापा की कहानी 124
17. चुनरी ,पोइट्रेट,लेटर 133
18. भानगढ़ ट्रिप 142
19. आदित्य का प्रपोजल 145
20. 29 फरवरी 174
21. आदित्य के एक सबजेक्ट में बेक 179
22. आखिरी फाइल 187
23. आखिरी लम्हें 200

t.me/HindiNovelsAndComics

शुरुआत

माही का जन्म 1 फरवरी, 1984 को मुंबई के एक संपन्न परिवार में हुआ और 5 सितम्बर, 2008 को उसकी मृत्यु हो गई।

शनिवार **1** फरवरी**, 1992**

डायरी, यह मेरी सबसे प्यारी दोस्त बनकर रहेगी, तुम्हें बता दूँ, मेरी लिखावट कितनी खराब है, किसी को समझने में भी कितनी मुश्किल होगी और अच्छा भी है किसी को समझ में ना आए। मैं नहीं चाहती, मेरी डायरी कोई भी पढ़े लेकिन तुम मेरी दोस्त हो। तुम मेरी लिखावट समझ लेना।

मैं आज सुबह सात बजे ही उठ गई और जैसे ही आँख खुली दादी, दादू, मम्मी को अपने पास पाया, लेकिन इस बार पापा मेरे पास नहीं थे जो हर बार मेरे जन्मदिन पर मेरे पास होते हैं। दादू ने डायरी दी, मम्मी ने फ्रॉक तोहफे में दी, जो बहुत ही सुंदर है। मैं इस सफेद फ्रॉक को पहनकर राजकुमारी के जैसा महसूस कर रही हूँ, दादी ने मेरे लिए केक बनाया और आज सब कुछ मेरी पसंद का बन रहा है। आज शाम को दादू सबको घर पर बुला रहे हैं। घर की डेकोरेशन भी शुरू हो गई है। घर में हो रहे हर एक काम को मैं रोमांचित होकर देख रही हूँ। मुझे शाम का बेसब्री से इंतज़ार है क्योंकि मैं पापा से मिलूंगी और जितने भी मेहमान होंगे वो मुझे सुंदर-सुंदर तोहफे देंगे, लेकिन मम्मी ने पहले ही मुझे समझा दिया है कि मेहमानो के सामने तोहफों को नहीं खोलना है और तोहफे लेते वक्त थैंक्यू बोलना है। मेरी मम्मी इन सब दकियानूसी बातों को बहुत मानती हैं, लेकिन ये बातें मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती, अब जब गिफ्ट्स मेरे लिए हैं तो खोलकर देखने में क्या हर्ज़ है।

शाम का वह वक्त भी करीब आ गया जब मुझे केक काटना है। सबके बीच आज मैं बहुत खास महसूस कर रही हूँ। दादू, मम्मी, दादी सब पास हैं लेकिन पापा अभी तक नहीं आये, आज पूरा दिन मैंने उनका इंतजार किया। “माही बेटा केक काटो,” दादू ने मेरे पास आकर कहा।

“दादू, मैं अभी केक नहीं काटूँगी, पापा को तो आने दो।”

“माही 9 बज चुके हैं, मेहमान कितना इंतजार करेंगे, तुम ऐसा करो पापा के लिए केक का एक बड़ा हिस्सा रख दो, पापा आयें तो फिर से उस केक को काट लेना।”

पापा के बिना मेहमानों के बीच मैंने बेरूखा जन्मदिन मनाया। देर रात तक सभी मेहमान चले गये। घर पर मैं, दादू, मम्मी और दादी अभी भी पापा का इंतजार कर रहे थे। 12 बजने में अभी पंद्रह मिनट बाकी थे और जैसा कि मुझे महसूस हो रहा था पापा इन पंद्रह मिनट में नहीं आएँगे, और वैसा ही हुआ “दादू, पापा नहीं आये। देखो अब 12 भी बज चुके हैं, मेरा बर्थ-डे निकल गया,” मैंने रोते-रोते अपनी सारी बात दादू से कह दी।

“बेटा, पापा को जरूर कोई काम होगा। चलो अब ऊपर सोने चलो,” दादू ने मुझे गोद में उठा लिया।

“दादू, पापा नहीं आये,” मैंने अपने दोनों हाथो से दादू के चेहरे को थामते हुए कहा।

“आने दो पापा को मैं खबर लूंगा उसकी। तुम सो जाओ।”

रात के 3 बजे अचानक हुए शोरगुल से मेरी आँख खुल गयी। मैं अपनी आँखो को मलते

t.me/HindiNovelsAndComics

हुए बाहर आयी। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था, घर में हो क्या रहा है? पापा सूटकेस लिए कहीं जा रहे थे और दादू, मम्मी, दादी सब रो रहे थे।

दादू कह रहे थे "क्यों जा रहा है?

मैं ऊपर से यह सब कुछ देख रही थी। मैंने जोर से आवाज लगाकर कहा "पापा क्यों जा रहे हो? मेरा बर्थडे केक..." मेरी बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि पापा मेरी बात को अनसुना कर चले गये। मुझे सिर्फ इतना समझ आया कि पापा हमेशा के लिए चले गये है। मैंने तय कर लिया था मैं अपना जन्मदिन कभी नहीं मनाऊंगी और अपने कमरे में आकर डायरी को हमेशा के लिए बंद करके रख दिया।

t.me/HindiNovelsAndComics

2008

गुरूवार 4 सितम्बर, 2008

"दादी आज का पूरा दिन कोर्ट में केस सॉल्व करते-करते निकल गया," मैंने घर के अंदर घुसते ही कहा।

"फिर आज तूने कुछ खाया भी नहीं होगा," दादी ने मेरे हाथ में पानी का गिलास थमाते हुए कहा और नाराजगी जताते हुए किचन में चली गयी।

"सॉरी दादी, बिल्कुल भी टाइम नहीं मिला," मैं दादी के पीछे-पीछे किचन में चली गयी।

"आज क्या केस था?" दादी ने पूछा।

"मेरे क्लाइंट पर झूठा मानहानि का दावा कर दिया है।

एक महीने पहले मेरे पास अपना केस लेकर आया था। आज कोर्ट में उसकी पहली सुनवाई की डेट थी, केस थोड़ा टिपीकल लग रहा है। लेकिन मैं पूरी जान लगा दूँगी सॉल्व करने में, मैं अपने स्टडी रूम में जा रही हूँ। टोर्टस... की बुक्स रूम में यूँ ही पड़ी होंगी, कल रात पढ़कर वहीं छोड़ दी थी। मॉर्निंग में टाइम ही नहीं मिला रूम में बुक्स जमाने का।"

"माही, तू सारी बातें एक ही साँस में बोलती चली जाती है। रूक कर थोड़ी मेरी बात भी सुनेगी, पता नहीं दूसरे वकीलों को भी कुछ बोलने देती है या खुद ही बोलती रहती है। हर वक्त तेरे दिमाग में स्टडी, कोर्ट, केस, बस यही घूमता रहता है। कभी अपना भी तो ख्याल रखा कर, कभी मुस्कुरा भी लिया कर" दादी ने डांटते हुए कहा।

मैं एक मुजरिम की तरह दादी की अदालत में सिर झुकाए, कोने में ऐसे खड़ी हूँ जैसे कोई कटघरे में खड़ा रहता है।

"अब क्या सोच रही है? चुपचाप यहाँ बैठ और पहले तू अपना पसंदीदा हलवा खत्म कर फिर जब तेरा पेट भर जाएगा, तो तसल्ली से तेरी खबर लूंगी," दादी ने कहा।

मैं अपनी चप्पलों की तरफ घूर रही थी और किसी मूर्ति की तरह स्थिर खड़ी थी। दादी के कहने पर मैं पास में रखे स्टूल पर ही बैठ गयी।

"आउच गरम है!" मैंने प्लेट हाथ में थामते हुए कहा।

"ध्यान से माही, मैंने तेरे स्टडी रूम की सारी बुक्स टेबल पर जमा दी हैं। पर कोई है जिसे तेरा स्टडी रूम में बड़ा बेसब्री से इंतज़ार है," दादी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या दादी," मैंने हलवे से भरे हुए मुँह से कहा। मेरा अब तक सारा ध्यान हलवे पर था और हो भी क्यों न, एक तो इतना लजीज़ हलवा और सुबह से कुछ खाया भी नहीं था।

"प्लीज दादी मजाक मत करो, आपके और दादू के अलावा और है ही कौन मेरी जिंदगी में, जो मुझे प्यार करे और इस तरह मेरा इंतज़ार करे" मैंने हँसते हुए कहा।

दादी ने कुछ कहा नहीं, सिर्फ मुस्कुराने लगी।

जितनी जल्दी ये क्षणिक हँसी मेरे चेहरे पर आयी, उतनी ही जल्दी गायब हो गयी। जब मैंने दादी की ये अजीब मुस्कुराहट देखी जो मुझे अंदर तक झकझोर गयी; "आखिर कौन हो सकता है जो मेरा इंतजार करे।" ये जानने के लिए हाथ में थामी हुई प्लेट छोड़कर तेज़ कदमों से मैं अपने स्टडी रूम की तरफ कदम बढ़ाने लगी। शायद आदित्य हो सकता है। जैसे

t.me/HindiNovelsAndComics

ही यह ख्याल आया मैं अगले ही पल में सम्भल गई, नहीं वो यहाँ कैसे आ सकता है।

जैसे ही मैंने स्टडी रूम का गेट खोला वैसे ही कोई जल्दी से आकर मेरे गले लिपट गया और धीरे से कान के पास आकर फुसफुसाया "मैं परी।"

एक पल के लिए मेरी साँसे ही थम गयी। परी का नाम सुनते ही मुझे एक अज़ीब सा अहसास हुआ। मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि मुझे हँसना चाहिए या रोना। उस वक्त की मेरी हालत कुछ शब्दों में बयान करना असंभव है। मेरा दिमाग जैसे परी के ख्याल से ही सुन्न हो गया, परी मेरे गले लिपटी हुई क्या कह रही है। मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा। ऐसा तो मेरे साथ तब भी नहीं हुआ जब मैं कोर्ट में अपना पहला केस लड़ रही थी। घबराहट थी, डर था पर ऐसी हालत तो मेरी उस वक्त भी नहीं हुई थी। 6 साल बाद एकदम से अपनी दोस्त से मिलना, मेरी जिंदगी में इन 6 सालों में जो कुछ भी हुआ उसके बाद परी से मिलना एक सुखद अहसास है।

परी मेरे बचपन की दोस्त है। मुझे एक भी अपना सुखद लम्हा याद नहीं, जो मैंने परी के बिना बिताया हो। हम 11 क्लास तक एक साथ एक ही स्कूल में थे, जहाँ भी जाते साथ में ही जाते। सभी हमें ट्वीन्स कहते थे और यह शब्द सुनना हमें बहुत अच्छा लगता था। परी के पापा गवर्नमेंट जॉब में थे। ट्राँसफर के बाद परी अलवर (राजस्थान) चली गई, फिर भी हम डेली फोन पर बात किया करते थे।

"माही कुछ बोलेगी भी या चुप रहेगी," परी ने मेरी बाहों से दूर हटते हुए कहा, जिसे उसने थोड़ी देर पहले बहुत कसके पकड़ा हुआ था, जैसे हमारा साथ फिर से ना छूट जाए, "माही बहुत वक्त हो गया तुझे देखे हुए," परी ने भरी हुई आँखो से मेरी तरफ देखा।

"हाँ, परी" मैंने रूँआसे होकर कहा- हम जहाँ खड़े थे वहीं ज़मीन पर बैठ कर एक दूसरे से फिर लिपट कर रोने लगे। आज मेरे पास खुश होने की वजह है परी, करीब 10 मिनट तक हमारा रोना चला होगा। लड़किया अगर भावुक हो जाएँ और साथ देने वाली भी कोई लड़की हो तो चाहे रोना हो, हँसना या बातें करना, कुछ भी थम नहीं सकता; जब तक कि कोई हमें आकर टोके नहीं।

आखिर हमारे विलाप में विघ्न डालने के लिए दादी ने रूम में आकर कहा "अब रोना बंद भी करो और बाहर चलो, बैठ कर आराम से बातें करो।"

"नहीं, दादी कहीं यह फिर से ना चली जाए मुझे छोड़कर," मैंने रोती हुई आवाज में कहा।

"मैं वादा करती हूँ अब नहीं जाऊँगी," परी ने मेरे आँसू पोंछते हुए कहा। हम दादी के साथ बाहर रूम में सोफे पर आकर बैठ गए और मेरा स्टडी रूम, पानी का एक सुनहरा दरिया बनने से रह गया।

"तुम बिल्कुल भी नहीं बदली हो परी; बस थोड़ा मैच्यौर हो गई हो," मैंने कहा।

"लेकिन तू बदल गयी है," परी ने कहा।

"नहीं तो," मैंने कहा।

"नहीं तो क्या पूरी दुःखी आत्मा लग रही हो, इन छह सालों में कुछ हुआ है क्या?" परी ने मेरा हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

"नहीं," मैंने चेहरे पर झूठी मुस्कुराहट बिखेर ली।

t.me/HindiNovelsAndComics

"तुम, इन छह सालों में माहिर एडवोकेट बन गई हो," परी ने कहा।

"हाँ तुम बताओ तुमने इन सालों में क्या किया?" मैंने पूछा।

"मेरी एम॰बी॰बी॰एस॰ कम्प्लीट हो गई है। अब एम.डी. करने के बारे में सोच रही हूँ," परी ने गहरी साँस लेते हुए जवाब दिया।

चंद सेकेण्ड की खामोशी के बाद परी ने ही बात करना शुरू किया, "माही तुम इन बीते सालों में कुछ बदल-सी गयी हो," परी ने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे अपने खुराफाती दिमाग से मुझे समझने की नापाक कोशिश कर रही हो।

"परी, तुम्हें यहाँ का पता कहाँ से मिला? और यहाँ तक कैसे पहुँची? और इतने सालों में एक बार भी तुझे मेरी याद नहीं आयी," मैंने बात बीच में ही काटते हुए पूछा।

"ओह! एक साथ इतने सारे सवाल, माही अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि तुम एडवोकेट बन गयी, घुमाफिरा कर बातें करने लगी हो, मेरी बात बीच में ही काट देने से कोई फायदा नहीं। मैं तुम्हें बचपन से जानती हूँ जब तू कोई बात छुपाती है या झूठ बोलती है तो तेरे पैर का अंगूठा कपकपाने लगता है। अपने पैरों को देख, मुझसे कोई भी बात छुपाने की तेरी कोशिश बेकार जाएगी। इसलिए साफ-साफ बता, क्या बात है।"

"मैं खुश हूँ यार," मैंने आँखे चुराते हुए जवाब दिया।

"कोई तो बात है जो तुम मुझसे छुपा रही हो, मैंने सोचा यार इतने सालों बाद जब तुझसे मिलूंगी तो मुझे मेरी पुरानी चुलबुली हँसती रहने वाली माही से मिलूंगी जो मुझसे हर बात शेयर किया करती थी, लेकिन तू बहुत बदल गयी है।"

"चलो परी," मैंने फौरन सोफे से उठते हुए कहा और परी का हाथ कसकर थामते हुए उसे अपने रूम तक ले गयी, "देखो परी" मैंने अपने कम्प्यूटर की तरफ इशारा करते हुए कहा। कम्प्यूटर में आदित्य नाम से आई.डी. खोलकर परी के सामने रख दी और डायरी मैंने अपने हाथों में थाम ली।"

"यह सब क्या है?" परी ध्यान से कम्प्यूटर में देखने लगी। "माही यह आदित्य अरोड़ा कौन है? और ये फाइल, कॉलेज, रैगिंग, डिसेक्शन हॉल ये इतनी सारी फाइल, ये सब क्या है? ये आदित्य कौन है? और ये डायरी क्या है?"

"आदित्य मेरे लिए एक अनदेखा लेकिन जाना पहचाना अजनबी था, मैं नहीं जानती कि क्या चीज थी जो चुंबक की तरह मुझे आदित्य की ओर आकर्षित कर रही थी और उसके मेरी जिंदगी में आने के बाद मैं अपनी जिंदगी अपने सपनों के अनुरूप जी रही थी। उसकी उपस्थिति मुझे ऊर्जावान बनाती थी, उसके साथ बिताया वह वक्त मेरे लिए बहुत कीमती था। उसका अहसास ही मेरी हर साँस को महका देता था, वो मेरे लिए अनमोल था आदित्य के साथ गुजारे वक्त में, मेरी जिंदगी में ना ही कभी 'पॉज' आया और ना ही कभी 'स्टॉप' बस मेरी जिंदगी उसके साथ बिताये इन सालों में धारा प्रवाह चलती रही..."

"माही इन छह सालों में क्या-क्या हुआ?" परी ने मुझे पूरी तरह झकझोर दिया, और मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगा अपने भूतकाल से वर्तमान में आने में। परी मेरे चेहरे पर निराशा के कुछ छिपे हुए अंश खोजने का प्रयास कर रही है जिसे चाहकर भी मैं झुठला नहीं सकती।

"तुम मुझे अपनी सारी बातें कह सकती हो।" परी ने मुझे बैड पर बिठाते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

“मोहब्बत, जैसी खतरनाक गलती मुझसे हुई है। परी, मैं जानती हूँ मेरा इस कदर जज्बाती होना ठीक नहीं है।”

“परी, तुम्हारे अलवर जाने के बाद कुछ महीनों तक तुमसे बात होती रही फिर अचानक तुम्हारे नं॰ पर बात होना बंद हो गया।”

“हाँ, उस वक्त मेरा मोबाईल नं॰ चेंज हो गया था,” परी ने कहा।

- 6 साल पहले 2002

एक दिन जब मैं दादी से अपने सर की मालिश करवा रही थी

“माही बेटा तेरा फोन बज रहा है,” दादी ने सर की मालिश करते हुए कहा।

“जानती हूँ दादी लेकिन आप मालिश करो अच्छा लग रहा है, मैं फोन पर बाद में बात कर लूंगी।”

“तेरे दादू की दवाई का टाइम भी हो गया है।”

“हऽऽम!”

कुछ ही सेकेण्ड में दादी कमरे से ओझल हो गयी, “इस फोन को भी अभी बजना था,” मैंने बड़बडाते हुए कहा।

“हैलो,” मैंने फोन रिसीव करते हए कहा।

सामने से एक अजनबी की आवाज़ सुनाई दी। “तुम समझती क्या हो अपने आप को? मैं लड़कियों की बहुत इज्ज़त करता था, जब तक मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानता था। लेकिन अब मुझे नफरत है लड़कियों से, तुम ऐसा कैसे कर सकती हो, तुम जानती भी हो तुम्हारे कारण आज क्या हो जाता?”

“आप कौन बोल रहे हैं? और आपको किससे बात करनी है?” मैंने शांति से नरम लहजे में पूछा क्योंकि ये अजनबी लग रहा था।

“मुझे तुमसे ही बात करनी है तुम कितनी घटिया लड़की हो। तुम्हें शर्म नाम की कोई चीज है भी कि नहीं और तुम तो ऐसे रियेक्ट कर रही हो जैसे इस मोबाइल नं॰ को जानती ही नहीं?”

“हाँ, मैं नहीं जानती और तुम जो भी हो ज़रा तमीज से बात करो, तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है।”

“मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई है। यह नं॰ मेरे दोस्त के मोबाइल से ही मिला है। जिसके कॉल रिकॉर्ड चेक करने पर पता चलता है कि इस नं॰ पर कुछ ही महीनें पहले घंटों बातें हुआ करती थी और अचानक तुमने बात करना बंद कर दिया। मुझे, मेरे दोस्त ने सुसाइड के कुछ दिनों पहले तुम्हारे बारे में बताया भी था।”

“उसकी बातों से मुझे लगता था कि वो तुम्हें पसंद करता है फिर तुमने उसे हर्ट क्यों किया, क्या वजह थी?”

“तुम समझने की कोशिश करो, मैंने कभी किसी लड़के से घंटों बातें नहीं की है।”

“तो क्या वो तुम्हारा भूत था? जो तुम्हारे नम्बर से मेरे दोस्त से बातें किया करता था।”

t.me/HindiNovelsAndComics

"अब बहुत हो गया अपना मुँह बंद रखो। तुम और तुम्हारा दोस्त दोनों जाओ भाड़ में," मैंने चीखते हुए कहा।

"अब आयी हो ना तुम अपनी सही औकात पर, बताओ तुमने मेरे दोस्त के साथ ऐसा क्यों किया? जानती हो अंशू तुम्हारे कारण कितना डिप्रेश रहने लगा था। तुम्हें कुछ अंदाजा भी है तुमने क्या किया है?" फोन पर उसने उसी रूखे लहजे में बात की।

"क्या नाम बताया तुमने अपने दोस्त का?" मैंने बात को काटते हुए पूछा। उन बातों को जो मेरी समझ से परे थी। जिसका अंशमात्र भी मैं समझ नहीं पा रही थी।

"अंशु, जिससे तुम बात करती थी, अब प्लीज मिताली, अब तुम यह मत कहना कि यह नाम तुमने नहीं सुना।"

"हाँ, ये नाम मैंने नहीं सुना और मैं तुम्हें बता दूँ, मैं मिताली नहीं माही बोल रही हूँ। अब तुम अपना मुह बंद रखो... और तुम्हारी सेवा हाथ से की जाये या चप्पल से या आपके लिये कोई नये अत्याधुनिक औजार मंगाने होंगे। जो मोबाइल से ही तुम्हारा वोल्यूम बंद कर दे।"

"ओह गॉड! तुम कितनी ड्रामेबाज लड़की हो..."

"एक मिनट, क्या तुम थोड़ी देर होल्ड करोगे?" मैंने कहा।

मैं अपने दिमाग पर जोर देते हुए यही सोच रही थी कि मिताली नाम तो परी अपने फ्रेंड को फोन पर बात करते समय, अपना नाम मिताली बताया करती थी। मैंने फटाफट अपनी ड्रॉअर को खंगाल डाला। परी अक्सर अपनी डायरी मेरी ड्राअर में ही रखा करती थी जिसे ढूँढने में मुझे ज्यादा मसक्कत नहीं करनी पड़ी।

"ये आवाज कैसी है, तुम क्या कर रही हो?"

"एक मिनट होल्ड करो," मैंने कहा। मैं परी की डायरी को बड़े ध्यान से पढ़ने लगी, उसमें मिताली और अंशु के बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ था जिसे पढ़कर परी का चेहरा मेरे सामने घूम गया। परी अक्सर मेरे फोन से घंटों बात किया करती थी। यह उसी लड़के की बात कर रहा है। परी ने मुझे कभी बताया नहीं, मैं फोन को आहिस्ता कान के पास ले गई। लेकिन मैं चुप थी, मेरे पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं।

"मैंने हमारी आज की सारी बातें रिकॉर्ड कर ली है," फोन पर उस लड़के ने कहा और फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

- **2008**

"परी, तुम मुझे बताओ, तुमने उस लड़के के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया?" मैंने परी को एकटक देखते हुए पूछा।

"मैं जानती हूँ, मुझसे गलती हुई है। मैं अपने टाइम पास के लिए अंशु से गलत नाम से बातें किया करती थी। जब मुझे महसूस हुआ यह गलत है। मैं किसी की भावनाओं को हर्ट नहीं कर सकती। मैंने बात करना बंद कर दिया। एक दिन मैंने अंशु से बात की जब मैं अलवर में थी। तब मुझे पता चला गलतफ़हमी के चलते अंशु के दोस्त ने तुमसे बत्तमीजी से बात की। मैं शर्मिंदा हूँ, मेरे कारण तुम्हें यह सब सुनना पड़ा, यह जानकर में फिर तुमसे और अंशु से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पायी," परी ने अपनी बात जारी रखते हुए

t.me/HindiNovelsAndComics

कहा, "मुझे माफ कर दो माही," परी के आँखों के किनारो से आँसू गालों तक लुढ़क आए।

मैंने परी का हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

"फिर क्या हुआ?" परी ने अपने आँसू पोंछते हुए पूछा।

"तुम ठीक तो हो ना?" मैंने परी से पूछा।

"हाँ मैं ठीक हूँ," परी ने कहा।

- **2002**

करीब 10 दिन बाद उसी नंबर से फोन आया। पहले मैंने सोचा कि इस बत्तमीजी का फोन रिसीव ही ना करूँ फिर उसके दोस्त अंशु की हालत जानने के लिए फोन रिसीव कर लिया।"

"मैं तुमसे माँफी मांगना चाहता हूँ, जिसके लिए मेरे पास आधा दर्जन वजह है लेकिन मैं क्या कहूँ... प्लीज मुझे माफ कर दो," अंशु के दोस्त ने धीरे से कहा।

मेरी तो पूरी खोपड़ी के गेंगलिया हिल गये। जब मैंने उस लड़के की आवाज सुनी, यह वही लड़का है जो कुछ दिन पहले बड़ी बत्तमीजी से चीख-चीख कर बोल रहा था, आज इतने शांत तरीके से कैसे बात कर रहा है। मैं फोन कान के पास रखकर उसकी बातें सुन रही थी। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

"प्लीज तुम मेरी बात का कुछ तो जवाब दो, मैं जानता हूँ मैंने गलतफहमी में तुमको बहुत भला बुरा सुना दिया। एटलिस्ट मुझे तुम्हारी बात सुननी चाहिए थी। जब अंशु को तुम्हारी रिकॉर्डिंग सुनाई, तब मुझे पता चला मैंने गुस्से में तुम्हें बहुत कुछ कह दिया है। अब मुझे मेरी गलती के लिए अपने आप पर बहुत गुस्सा आ रहा है।"

"ठीक है, ये बताओ अंशु कैसा है?" मैंने पूछा।

"अब वो पहले से ठीक है, उसे हॉस्पीटल से डिस्चार्ज कर दिया है लेकिन अभी भी वो डिप्रेशन है।"

कुछ ही सेकेण्ड़ की खामोशी के बाद उसने अपनी बात ज़ारी रखते हुए कहा, "तुमने मुझे माफ कर दिया ना?"

"हाँ, माफ कर दिया। गलतफ़हमी किसी को भी हो सकती है," मैंने कहा।

"तुम पिछली सारी बातें भुला दो, उस दिन मैं बहुत गुस्से में था, मैं ऐसा लड़का नहीं हूँ।"

"हम्म, तुम्हारा नाम क्या है?"

"आदित्य अरोड़ा, मैं चित्तौड़ से हूँ।"

"अगर तुम चाहो तो अपने बारे में बता सकती हो," आदित्य ने हिचकिचाते हुए कहा।

"मैं माही हूँ, मुबंई में रहती हूँ।"

"मुझे तुमसे बात करके खुशी हुई," आदित्य ने कहा।

"मुझे भी।"

"अगर तुम चाहो तो हम दोस्त बन सकते हैं," आदित्य ने धीरे से कहा।

"मैंने अभी कुछ सोचा नहीं है।"

"क्या मैं तुम्हें मेसेज या कॉल कर सकता हूँ?"

t.me/HindiNovelsAndComics

"मुझे कोई प्रोब्लम नहीं है लेकिन उम्मीद करती हूँ, तुम मुझसे बत्तमीजी से बात नहीं करोगे।"

"हाँ, बिल्कुल मैं अपनी पुरानी बातों के लिए बहुत शर्मिंदा हूँ और मैं पूरी कोशिश करूंगा, मैं तुम्हारा अच्छा दोस्त बन सकूं," आदित्य ने कहा।

मुझे आदित्य से बात करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी बरवस ही वो मेरा ध्यान अपनी और आकर्षित कर रहा था। हम धीरे-धीरे दोस्त बनने लगे, मैंने नोटिस किया, आदित्य बिल्कुल भी वैसा लड़का नहीं था जैसा उसने पहले दिन मुझसे बात की थी। आदित्य मेडीकल ऐंट्रेंस एग्जाम की तैयारी कर रहा था और मैं 12 वी क्लास के बोर्ड के एग्जाम दे रही थी। आदित्य अपने फर्स्ट अटेम्प्ट में सिलेक्ट होने के बाद काउन्सलिंग में नहीं जा पाया, इसलिए यह उसका दूसरा मेडिकल अटेम्प्ट था। आदित्य से मेरी लगातार 2 महीने से चेटिंग हो रही थी। हम डेली रात 9 बजे से चेटिंग किया करते थे, यह हमारा चेटिंग टाइम था। रात 9 बजने का हमें बड़ा बेसब्री से इंतजार रहता था। कब हमें बात करते-करते 2 महीने बीत गए पता भी नहीं चला, लेकिन इन दो महीनों में, मैं आदित्य के बारे में काफी कुछ जान चुकी हूँ। आदित्य को नॉवल पढ़ना बहुत पसंद है। उसने नॉवल खरीद-खरीद कर एक छोटी लाइब्रेरी अपने घर में बना ली है। आदित्य एक अच्छा राइटर है, उसके स्केच, पेंटिंग, बेहतरीन है और वह एक बेहतरीन कुक भी है। आदित्य ने कुकिंग की ट्रेनिंग अपनी मम्मी से ही ली है, जो अक्सर किचन में मम्मी की हेल्प करके मिली है और सबसे अच्छी बात वो बहुत कम समय में मेरा अच्छा दोस्त बन गया है। आदित्य ने अपनी फैमिली के बारे में बताया, पापा गवर्मेंट जॉब में हैं, माँ को बागवानी पसंद है। छोटा भाई जिसे रंगों से बेहद लगाव है वह पेंटिंग और स्केच बनाता है। वह घर के फालतू सामान से कुछ क्रिएटिव बनाता रहता है। उसकी एक छोटी बहन है जो बहुत शरारती है।

एक दिन चेटिंग के दौरान आदित्य ने बताया उसके ऑल इंडिया पी॰एम॰टी॰ के एग्जाम की डेट आ गयी है तब तक मेरे 12वीं के बोर्ड एग्जाम कम्पलीट हो चुके थे। मैंने डिसाइड किया जब तक आदित्य के एग्जाम नहीं हो जाते हम चेटिंग नहीं करेंगे। आदित्य ने कहा भी था कि हमारी चेटिंग से उसकी पढ़ाई में कोई डिस्टरवेंस नहीं होगा। मैंने आदित्य से उसके एग्जाम होने तक चेटिंग करना बंद कर दिया, आखिर आदित्य के करियर का सवाल था।

मैंने आदित्य से कह तो दिया कि जब तक तुम्हारे एग्जाम नहीं हो जाते तब तक बात नहीं करेंगे। लेकिन एग्जाम होने तक मैं आदित्य की कमी महसूस करने लगी थी। जब से आदित्य मेरी लाइफ में आया है मुझे आदित्य से बात करना बहुत अच्छा लगने लगा। परी से मैं अपनी फीलिंग शेयर करती थी। परी के जाने के बाद में बहुत गुमसुम-सी हो गयी थी। मुझे मम्मी पापा का प्यार कभी नहीं मिला शायद इसलिए ही मैं थोड़ा इन्ट्रोवर्ट थी। मैं अपनी लाइफ में एक हदतक कह सकती हूँ कि उदासीन लड़की थी, लेकिन आदित्य मेरे कुछ ना कहते हुए भी मेरी फीलिंग्स समझ जाया करता था। आदित्य के प्रति मेरा आकर्षण सिर्फ इसलिए भी था क्योंकि आदित्य से मुझे भावनात्मक रूप से सहारा मिलता था।

t.me/HindiNovelsAndComics

दिल्ली में शिफ्ट

"माही बेटा, दिल्ली कॉलेज के लिए तूने जो एन्ट्रैंस एग्जाम दिया था। उसका कॉल लेटर आ गया," दादू ने लेटर मेरे हाथ में देते हुए कहा।

"हाँ, दादू मैं दिल्ली लॉ कॉलेज में सिलेक्ट हो गयी हूँ," मैंने चहकते हुए कहा-मेरी आवाज सुनते ही दादी भी किचन से बाहर आ गयी।

मेरी खुशी दादू-दादी को देखकर एकदम से दुःख में बदल गयी, "आप लोगों से दूर जाना पड़ेगा। दादू, मैं यहीं से लॉ कर लूंगी।" मैंने दादू के कंधे पर, अपना सर रख दिया। "यहाँ भी तो कॉलेज है, मुझे आप दोनों से दूर नहीं जाना है, मैं दिल्ली नहीं जाऊँगी, यहीं रहूँगी," मैंने अपना फैसला सुनाते हुए कह दिया, पर दादू-दादी के सामने भला मेरा फैसला कहाँ टिकने वाला था।

दादी, जो इतनी देर से शांत हमारी बातें सुन रही थी उन्होंने कहना षुरू किया, "दिल्ली यहाँ से दूर नहीं है और पढ़ने के लिए तो जाना ही पड़ता है। हम तुमसे थोड़ा दूर हो जाएँगे बस, और दिल्ली में तो तेरी माँ शालिनी भी है। जब तू वहाँ पहुँच जाएगी, तो तेरा जब मन करे अपनी माँ से मिल लिया करेगी। हर महीने तेरे दादू तो शालिनी से मिलने जाते ही हैं। तेरे दादू के साथ मैं भी तुझसे और शालिनी से मिलने आया करूंगी।" दादी ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

"मैं, आपको बहुत मिस करूँगी, मैं वहाँ अकेले नहीं रह पाऊँगी," मैंने रूँआसे होकर कहा।

"शुरू-शुरू में ऐसा लगेगा, पर बाद में अपने आप तेरा मन लग जाएगा। तुझे पढ़ाई से फुरसत ही नहीं मिलेगी हमें याद करने की," दादी ने मेरे माथे को चूमते हुए कहा।

"आपको मुझसे मिलने आना पड़ेगा, वादा करो," मैंने अपना हाथ दादी के सामने फैला दिया।

"वादा," दादी ने झूठी मुस्कान चेहरे पर लाते हुए कहा-दादी को मेरा जाना अच्छा नहीं लग रहा है, लेकिन मज़बूरी में उन्हें हँसना पड़ रहा है और दादू जो चुपचाप इतनी देर से हमारी बातें सुन रहे थे, उनके चेहरे पर कोई भी भाव नहीं है। दादू ज़रूर कुछ सोच रहे हैं इतना तो जानती हूँ। दादू अपनी फीलिंग्स जताते नहीं हैं, लेकिन मेरे जाने से वो भी दुःखी हैं।

"कितने दिनों बाद जाना है दिल्ली?" दादी ने मुझे मेरे विचारों से जगाते हुए पूछा।

"दस दिन बाद क्लास शुरू हो जाएगी," मैंने कहा।

5 दिन से मेरी पैकिंग चल रही है मुझे समझ नहीं आ रहा, पैकिंग पूरी ही नहीं हो रही, दादी बैग रखते हुए बोली, ये आखिरी बैग है। अब लगता है हो गयी पैकिंग।

यही बात दादी ने कल भी कही थी 'ये आखिरी बैग है' उसके बाद दो बैग और पैक कर दिए। पता नहीं क्या हो रहा है इस घर में, मेरे पढ़ने जाने की तैयारी हो रही है या विदाई की।

दादी ने कहा, "जरा एक बार लिस्ट तो दिखा।"

"अब लिस्ट किसलिए दादी? अब हो गयी है पूरी पैकिंग," मैंने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"लिस्ट इसलिए कहीं कोई सामान रह ना जाये।"

"दादी वहाँ सब कुछ मिलता है। मैं ले आऊँगी, अब मैं छोटी बच्ची भी नहीं हूँ," मैंने लिस्ट दादी को देते हुए कहा।

"हाँ, मैं सब जानती हूँ कितनी बड़ी है तू," दादी आँखों पर चश्मा लगाते हुए लिस्ट देखने लगी। "लिस्ट तो लगभग पूरी हो गयी, इस डिब्बे में लड्डू, मठरी है याद से खा लिया करना, अपने खाने पीने का अच्छे से ध्यान रखना," दादी ने मेरे कानों को खींचते हुए कहा।

"पक्का ध्यान रखूँगी, अब कान छोड़ो दर्द हो रहा है," मैंने अपना कान दादी के हाथ से छुड़ाया।

"एक चीज रह गयी," दादी ने कहा। "दादी, अब क्या रह गया?"

दादी ने मुझे एक खाली प्लास्टिक बॉक्स लेकर आने को कहा।

"पर क्यों दादी?"

"मैंने कहा ना जा लेकर तो आ।"

"अभी लायी दादी," दादी की किचन में गये अभी मुझे कुछ ही सेकेण्ड हुए थे मैंने पूरी किचन का सामान तहस नहस कर दिया, "कहाँ रखा है?" मैंने किचन से ही ऊँची आवाज लगाकर दादी से पूछा।

"तीसरी अलमारी में मसाले के बर्तन के पास रखा होगा। रूक मैं ही आती हूँ, तूझे नहीं मिलेगा।"

"हाँ दादी, मुझे मिल गया, ला रही हूँ" मैंने कहा।

"इस डिब्बे में खूब सारी डांट भर रही हूँ जब मैं तेरे पास नहीं रहूंगी तुझे डांटने के लिए, समझाने के लिए, तब तू इस डिब्बे को खोलकर एक डांट निकाल लिया करना, मैं तुझे तेरे बचपन से जानती हूँ। तेरे नाटक, हर बात में लापरवाही, बिना डांट खाये सुनती कहाँ है। अपना तो कभी ख्याल ही नहीं रखती है। तू कब बड़ी होगी, अपना ख्याल रखना कब सीखेगी?" कहते-कहते दादी के आँख में आँसू आ गये।

"ओह दादी! आप रो क्यों रही हो?" मैं दादी से लिपट गयी, "मेरी प्यारी दादी।"

"अब दादी, जन्मजात आदत कहाँ जाएगी," मेरी बात पर मैं और दादी ठहाका लगाकार हँसने लगे। दादू दूर कोने में खड़े चुपचाप हमारी बातें सुन रहे हैं और दुःखी हैं। तभी फोन की घंटी बजी, दादू अपने कमरे में बात करने के लिए चले गये।

"दादी, दादू किससे बात कर रहे हैं? बहुत देर हो गयी है अभी तक बातें कर रहे हैं" मैंने दादू की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"पता नहीं, होगा कोई," दादी ने जवाब में कहा।

"दादी जरा यहाँ तो आओ, देखो दादू खिलाखिला रहें हैं, दादू मुस्कुरा रहे हैं। इतना हँस-हँस के किससे बात कर रहे हैं? दादी पता करो कौन है, कहीं दादू की कोई गर्लफ्रेंड तो नहीं?" मैंने गंभीर चेहरा बनाकर कहा।

"चुपकर शैतान, जब देखो तब मसकरी करती रहती है," यह कहते हुए दादी का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"दादी, मैं सही कह रही हूँ अगर ऐसा हुआ तो मुझे फायदा है क्योंकि आने वाली नई दादी, मुझे डाटेंगी भी नहीं और दो-दो दादियों का प्यार भी मिलेगा," इतना कहकर मैं

t.me/HindiNovelsAndComics

अपने रूम की तरफ भागने लगी।

"रूक जा, कहाँ भाग रही है? मेरे साथ मजाक कर रही है।"

"दादी, भागो मत! देखो दादू अपनी दोस्त से बात करके कितने खुश दिख रहे हैं। यहीं आ रहे हैं?" मैंने अपने रूम के गेट पर खड़े होकर कहा।

"मीना क्या हो गया तुझे, क्यों बच्चों के जैसे माही के पीछे भाग रही है? वो तो बच्ची है, लेकिन तू भी कम नहीं है। इस उम्र में बच्ची बन रही है। घुटनों में दर्द होगा, दौड़ क्यों लगा रही है, हुआ क्या? देख अपनी हालत कितना हाँफ रही है, आ इधर आकर बैठ," दादू ने कहा।

"हाँ मुझमें अब दौड़ने की शक्ति नहीं है," दादी ने हाँफते हुए कहा।

"तुमको दौड़ने के लिए किसने कहा था? बेटा माही तू भी रूम से बाहर आ," दादू ने आवाज लगायी।

"आयी दादू।"

"अब बताओ क्या चल रहा है, तुम दोनों क्यों पूरे घर में दौड़ लगा रही हो?" दादू ने सोफे पर आराम से बैठते हुए कहा।

"बता दूँ! दादी आप क्या कह रही थीं?" मैंने दादी को छेड़ते हुए कहा।

"मैंने क्या कहा, तू ही कह रही थी," दादी थोड़ा खींझते हुए बोली।

"अब तुम दोनों जरा मेरी बात सुनो। पता है मैं अभी फोन पर किससे बात कर रहा था?"

"हाँ दादू बताओ, आप किससे बात कर रहे थे? यही बात तो दादी जानना चाहती हैं" मैंने कहा।

दादी अपने मुँह से कुछ अल्फाज तो नहीं कह पायीं, बस मुझे आँखे दिखाने लगी।

"माही, तेरे पापा से बात हुई, राजवीर का फोन आया था, मैं उसी से बात कर रहा था," दादू ने मेरी और दादी की तरफ देखते हुए कहा।

पापा का नाम सुनते ही हमारे चेहरे से हँसी गायब हो गयी, यह हमारे घर का ऐसा विषय है जिस पर हम चाहकर भी खुश नहीं हो सकते। मुझे और दादी को पापा के फोन आने से कोई खुशी नहीं हुई थी। आज सिर्फ दादू हैं जो पापा के फोन आने से बेहद खुश हैं लेकिन मुझे और दादी को अब पापा से केई खास लगाव नहीं है।

"अब माही दिल्ली जा रही है और आप ये क्या बातें लेकर बैठ गये हैं," दादी ने गंभीर होते हुए कहा।

"क्या तुम मेरी पूरी बात सुनोगी?" दादी की बात बीच में काटते हुए दादू ने कहा।

"हाँ सुनाओ," दादी ने रूखे अंदाज में कहा।

"देखो कुछ दिनों में माही दिल्ली चली जाएगी, माही के बिना इस पूरे घर में हम दोनों ही रह जाएँगे। बिना माही के रहना बहुत मुश्किल होगा। हमारी जिंदगी, हम तीनों में ही सिमटी हुई है। इसलिए मैंने राजवीर से बात की, हमने यही फैसला किया कि हम सब दिल्ली जाकर रहेंगे। वहाँ राजवीर ने एक फ्लैट खरीदा है, वो कागजात और पैसे भी भेज देगा। राजवीर कह रहा था, हम सबको अकेले भी नहीं रहना पड़ेगा और शालिनी से भी हम मिल लिया करेंगे।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"पापा को अब मेरी और मम्मी की फिक्र क्यों हो रही है? अगर उन्हें इतनी ही फिक्र थी तो..." मैं आगे एक शब्द नहीं कह पायी, मेरा गला आँसूओं से भर गया, मैं दादी की गोद में सर रखकर रोने लगी।

दादी बड़े प्यार से मेरे बालों को सहलाने लगी; "देख माही हम जानते हैं राजवीर ही तुम दोनों का दोषी है। तेरा और तेरी माँ शलिनी की हालत का जिम्मेदार राजवीर ही है, लेकिन उन बातों को, उस बीते हुए समय को याद करके क्यों अपना दिल दुखा रही है।"

"मैं कभी नहीं भुला सकती, मैंने अपना पूरा बचपन बिना माँ पापा के बिताया है सिर्फ पापा की एक भूल की वजह से। अब उस बात पर पापा पछतायें तो क्या मेरा बीता हुआ वक्त वापस मिल जाएगा? अब क्यों उन्हे हमारी फिक्र होती है?"

"माही बेटा रोना बंद कर। बीता हुआ वक्त कभी वापस नहीं आ सकता, लेकिन राजवीर जब भी मुझसे बात करता है मैंने महसूस किया है उसे अपनी गलती का अहसास है। वो तुमसे, तुम्हारी दादी मीना से बात करना चाहता है पर उसकी गलती इतनी बड़ी है कि मैं जानता हूँ ना ही मीना और ना ही तुम, उससे बात करोगी," दादू ने कहा।

"मैं अब आखिरी बार बोल रही हूँ आज के बाद राजवीर का नाम तक घर में नहीं लिया जाएगा। वो हमारा पूरा घर तबाह कर चुका है। अब हम जैसे भी हैं हमें अपने हाल पर जीने दे। मैं तुमसे मना नहीं करती हूँ, जानती हूँ शालिनी के हालातों के बाद तुम भी राजवीर को जरा भी पसंद नहीं करते हो, लेकिन बेटे का मोह नहीं छोड़ पा रहे हो। तुम्हें बात करनी है करो पर घर पर जिक्र मत करो," दादी ने कहा।

"मीना, मैं समझ सकता हूँ, तुम सब पर क्या बीती है। अब उसकी घर में कोई बात नहीं होगी लेकिन तुम उस घर में रहने तो चलोगी ना?" दादू ने हम दोनों की तरफ आशाभरी निगाह से देखते हुए पूछा।

"ठीक है। अब जैसा तुम ठीक समझो, लेकिन तुम्हें अपनी पेंशन और यह मुंबई वाला घर बेचकर उसे फ्लैट के पैसे देने होंगे" दादी ने कहा।

"उसे फ्लैट की पूरी कीमत दे दूँगा, पर ये सब इतनी जल्दी नहीं हो पाएगा, थोड़ा वक्त तो लग ही जाएगा। माही के कॉलेज अभी शुरू हो रहे हैं तुम चलो मैं वादा करता हूँ जल्द-से-जल्द उसके सारे पैसे चुका दूँगा।"

हाँ, कहते हुए दादी मुझे अपने साथ कमरे में लेकर चली गयी, मैं भी दादी का अनुसरण करने लगी क्योंकि इस वक्त हालात कुछ ऐसे हैं कि मैं सोचने समझने की स्थिति में नहीं हूँ।

कुछ ही दिनों में हम अपना सब कुछ पैक करके दिल्ली जा रहे हैं, इस घर को छोड़कर जहाँ मैं पैदा हई, मम्मी पापा का प्यार पाया, और इसी घर में उन दोनों से दूर हो गयी। इस घर के हर एक कोने से मेरी यादें जुड़ी हुई हैं। हम इस घर को नहीं यहाँ से जुड़े अपने हर सुख-दुःख के लम्हें को छोड़कर जा रहे हैं। हर वो पल जो यहाँ मैंने बिताया... वो पल कभी वापस नहीं आयेंगे। सिर्फ एक ही बात की खुशी है दिल्ली जाकर माँ के नजदीक रहूंगी।

दिल्ली आये हमें एक महीना पूरा हो चुका है। यह नया घर सुंदर है लेकिन अभी बना ही था तो पेंट की बदबू, फर्श पर पड़े पेंट की कुछ बूंदें, फर्नीचर की स्मैल बहुत तंग कर रही

t.me/HindiNovelsAndComics

थी, दादी और मैंने घर की सभी खिड़कियां खोल दीं जिससे ताजी हवा आये और कमरे की बदबू, घुटन भरे माहौल को दूर कर सके। सफाई और सामान जमाने में हमें कई घण्टे लग गये।

इस घर में सारी सुख सुविधाएँ हैं, बजाए पुराने घर के। यहाँ चार रूम, एक किचन, एक बड़ा हॉल है जो हम तीनों के लिए पर्याप्त है। जब से दादी दिल्ली आयी हैं, यहाँ दादी का मन नहीं लगता, दादी पुराने घर को बहुत मिस करती हैं। दादी, दादी के बाद मम्मी भी उसी घर में दुल्हन बनकर आयी थी। स्वभाविक है दादी को यहाँ घुलने मिलने में वक्त लगेगा। दादू यहाँ आकर बहुत खुश हैं क्योंकि दादू अपने बचपन के दोस्त से जब चाहें मिल सकते हैं जो कि एम्स हॉस्पीटल में सर्जन हैं। दादू और डॉ॰ अंकल की ताश की महफिल में... मैं भी कभी-कभी शामिल हो जाया करती हूँ।

आज पूरे तीन महीने बाद मैंने आदित्य को कॉल किया, लेकिन आदित्य ने कॉल रिसीव नहीं किया। रात के 9 बज चुके थे। मेरी आँखों में नींद का अंशमात्र भी नहीं था। मैं आँख बंद किए लेटी थी तभी आदित्य का कॉल आया।

“हैलो,” मैंने कहा।

“ओह माही, ये तुम्हारा मोबाइल नम्बर है और यह तुम ही हो ना?” आदित्य ने चौंकते हुए पूछा।

“हाँ।”

“मुझे तो लगा तुम मुझसे दूर चली गयी, अब बात भी नहीं करोगी। मैंने तुम्हें एग्जाम के बाद कितने फोन किए, तुम्हारा फोन भी नहीं लग रहा था। मैं डेली इंतजार करता था कि आज तुम्हारा मैसेज आएगा। तुम जानती हो पूरे तीन महीने हो चुके हैं। तुम अब जाकर मुझसे बात कर रही हो, लगता है तुम मुझे भूल ही गयी थी।” आदित्य अपनी सारी बातें एक ही साँस में कह गया, जैसे वह कई दिनों से मेरे कॉल का इंतजार कर रहा हो और यह सब कहना चाहता हो।

“माफ़ कर दो, मैं मुंबई में नहीं हूँ, दल्ली में हूँ, इसी बीच मैं तुमसे बात नहीं कर पायी,” मैंने कहा।

“दिल्ली में क्या कर रही हो, वहाँ अकेली हो?” आदित्य ने पूछा।

“हम परमानेंट दिल्ली में शिफ्ट हो गये हैं और साथ में दादू-दादी भी हैं। मुझे दिल्ली लॉ कॉलेज में एडमिशन मिला है और मैं फाइव वाय.डी.सी. कर रही हूँ,” मैंने कहा।

“यह क्या होता है?” आदित्य ने असमंजस की स्थिति में पूछा।

“फाइव इयर डिप्लोमा कोर्स, लॉ ऑनर्स से यह डिग्री फाइव इयर की होती है। यह सॉर्ट फार्म है; फाइव वाय॰ डी॰ सी॰।”

“खैर यह लॉ मुझे कभी समझ नहीं आएगा,” आदित्य ने कहा।

“और मुझे मेडिकल कभी समझ नहीं आएगा,” मैंने हँसते हुए कहा।

“मुझे पूरा यकीन है, मैं तुम्हें मेडिकल के बारे में समझा दूँगा,” आदित्य ने जवाब दिया।

“ओह! मैं तो भूल ही गयी तुम्हारा एग्जाम कैसा रहा?”

“एडवोकेट मैडम, मेरा एग्जाम भी हो चुका है, उसका रिजल्ट भी आ चुका है और काउन्सलिंग भी हो चुकी है और मुझे मेडिकल कॉलेज भी मिल चुका हैं। एग्जाम के बारे में

t.me/HindiNovelsAndComics

पूछने में आप थोड़ा सा लेट हो चुकी हैं।"

"हाँ, वाकई मैं लेट हो चुकी हूँ," मैंने धीमे स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं, अब तुम इतना भी बुरा फील मत करो," आदित्य ने कहा।

"कॉलेज कौन-सा मिला है? मुझे नहीं लगता कि मैं कॉलेज पूछने के लिए भी लेट हूँ।"

"हाँ, बिल्कुल भी नहीं, मुझे जयपुर राजस्थान का गवर्नमेंट कॉलेज मिला है। एस.आर.एस. मेडिकल कॉलेज सवाई राव सिंह, मैंने नेट पर कॉलेज की डिटेल निकाली है, यह एस.आर.एस. हॉस्पीटल से अटैच्ड है और राजस्थान के बेहतरीन कॉलेजों में से एक है।"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात हैं, तो दोस्त पार्टी तो बनती है, कब दे रहे हो पार्टी?" मैंने पूछा।

"तुम जब चाहे पार्टी ले सकती हो," आदित्य ने कहा।

"आदित्य, मैं बहुत देर से नोटिस कर रही हूँ, तुम्हारी आवाज कुछ साफ नहीं आ रही है, तेज हॉर्न की आवाजें आ रही हैं क्या तुम बाहर हो?" मैंने पूछा।

"मैं बस में हूँ। इसलिए तुम्हें ऐसी आवाजें आ रही होंगी, एक मिनट रूको मैं विन्डो बन्द कर देता हूँ। हऽऽम हो गयी विंडो बंद, क्या अब आवाज साफ आ रही है?" आदित्य ने पूछा।

"हाँ अब ठीक है तुम बस से कहाँ जा रहे हो?"

"मैं जयपुर से चित्तौड़ जा रहा हूँ।"

"क्यों?"

"कुछ ही दिनों में कॉलेज शुरू हो जायेंगे। रूम देखने के लिए जयपुर गया था।"

"तो फिर मिला?"

"जयपुर में सस्ता टिकाऊ अच्छा फ्लैट मिलना बहुत मुश्किल है। यह तो पी.एम.टी. फाइट करने से भी ज्यादा टफ लग रहा था, आज जैसे-तैसे एक फ्लैट मिला, फ्लैट अच्छा है तीन रूम है जिसमें हम सात लोगों को रहना होगा, तब जाकर कहीं बजट बनेगा।"

"तुम्हारे रूम में कौन-कौन रहेगा?" मैंने पूछा।

"मेरे रूम में एक क्यूट-सी लड़की रहेगी," आदित्य ने मूड़ी अंदाज में कहा।

"क्या बकवास कर रहे हो," मैंने चौंकते हुए कहा। अगले ही पल मैं अपने पूछे हुए सवाल पर असहज महसूस करने लगी।

"तुम लड़कियाँ भी कभी-कभी थोड़ा सा अजीब हो जाती हो, इतने खतरनाक सवाल तो पी.एम.टी. में भी नहीं पूछते वरना मैं तो फैल ही हो जाता," आदित्य ने हँसते हुए कहा।

"मेरा मतलब ये नहीं था," मैंने कहा।

"एडवोकेट साहिबा, मेरे रूम में कॉलेज के ही फ्रेंड रहेंगे, अभी तो मुझे भी नहीं पता। फ्लैट, कॉलेज के पास ही है कोई-ना-कोई तो रहने आएगा, देखते हैं कौन कमबख्त आता है। दो दिन में ही मुझे फ्लैट में शिफ्ट होना है, मैं पहले से ही लेट हूँ, कॉलेज का पहला दिन मिस नहीं करना चाहता," आदित्य ने लम्बी सांस लेते हुए कहा।

"ठीक है डॉ॰ साहब," मैंने कहा।

"अभी से डॉ॰? अभी नाम के आगे डॉ॰ लगाने में बहुत वक्त है, इस नाम के लिए मुझे

t.me/HindiNovelsAndComics

जी तोड़ पढ़ाई करनी होगी और ना जाने कितने पापड़ बेलने पडेंगे।"

"मैं तो डॉ॰ ही कहूँगी।"

"जैसा तुम ठीक समझो," आदित्य ने कहा।

"हाँ, क्योंकि क्या पता जब तुम डॉ॰ बन जाओ तो मुझसे बात करने के लिए भी तुम्हारे पास टाइम ही ना हो, मुझे अपॉइंटमेंट लेना पड़े,"

"ऐसा नहीं होगा," आदित्य मेरी बात पर जोर से हँसने लगा और अचानक ही हँसते-हँसते चुप भी हो गया।

"तुम एकदम से चुप क्यों हो गये?" मैंने पूछा।

"मैं इतनी जोर से हँस रहा था कि मेरे बगल वाली सीट पर जो बंदा सोया हुआ था, जाग गया। बेचारे की नींद खराब हो गयी, जरूर वो मुझे कोस रहा होगा," आदित्य धीमी आवाज में फुसफुसाया। कुछ ही सेकेंड़ की खामोशी के बाद आदित्य ने कहना शुरू किया, "माही एक मोबाईल ही है जिससे हम आपस में कॉन्टेक्ट में हैं। मैंने तुम्हें बाई फेस देखा भी नहीं है। कभी गलती से मोबाइल कॉन्टेक्ट टूट जाये, तो हम मिल भी नहीं पाएँगे।"

"तुम क्या कहना चाहते हो? साफ-साफ कहो," मैंने कहा।

"मेरा मतलब तुम दिल्ली आकर शिफ्ट हो गई, इसी दरमियाँ तुम्हारा मोबाइल नं॰ चेंज हो गया। अगर मेरा भी मोबाइल नं॰ चेंज हो जाता, तो हम फिर कभी एक दूसरे से बात भी नहीं कर पाते। इन तीन महीनों में यह बात मेरे जहन में आयी।"

"अब ऐसा नहीं होगा। मैं कान पकड़कर सॉरी बोलती हूँ । जब भी नं॰ चेंज करूंगी तो तुम्हें मेसेज कर दूँगी।"

"वो सब तो ठीक है। यह बताओ क्या नेट पर तुम्हारी कोई प्रोफाइल है?" आदित्य ने बेसब्री से पूछा।

"हम्म नहीं।"

"कोई बात नहीं अगर तुम चाहो तो मेरी जी-मेल प्रोफाइल यूज कर सकती हो।"

"ठीक है, मुझे कोई प्रोब्लम नहीं," मैंने कहा।

"मैं अपनी आई. डी. और पासवर्ड तुम्हें मेसेज कर दूंगा। मैंने अपनी प्रोफाइल पर नोट बनाकर लिखे हुए हैं, मुझे लिखना बहुत पसंद है। अब मैं तुम्हारे लिए लिखा करूँगा, अपने से जुड़े हर पहलू को फाइल बनाकर सेव कर दिया करूगा, तुम देख लेना," आदित्य ने कहा।

फोन रखने के बाद मैं बेसब्री से आदित्य के मैसेज का इंतजार करने लगी, इतनी बेसब्री तो कभी एग्जाम रिजल्ट की भी नहीं हुई और मैंने अपनी निगाहें मोबाइल स्क्रीन पर टिका ली। थोड़ी देर में आदित्य का मैसेज तो मिल गया लेकिन ना ही मेरे पास कम्प्यूटर है और ना ही नेट, मैं कैसे आदित्य की फाइल देखूँगी। थोड़ी ही देर में मैं आदित्य के बारे में सोचते सोचते सो गयी।

अगले दिन जब मेरी आँख खुली, सबसे पहले मेरी नजर दीवार पर टंगी घड़ी पर गयी जिसमें 9 बज रहे थे। मैंने अपने दिन की शुरूआत अपने आप को कोसते हुए की। मुझे खुद भी यकीन नहीं हो रहा था कि इतनी देर तक मैं कैसे सोती रही। मैंने चादर एक तरफ फेंक दिया क्योंकि मुझे दादू से अपने नये कम्प्यूटर खरीदने की बात करनी थी। मुँह धोकर मैं

t.me/HindiNovelsAndComics

दादू को ढूँढते हुए सीधे छत पर गयी। दादू छत पर ही थे, पौधों को पानी दे रहे थे। दादू को घर पर देख कर मैंने राहत की सांस ली।

“गुड़ मॉर्निंग दादू,” मैंने प्यार जताते हुए कहा।

“गुड़ मॉर्निंग बेटा,” दादू ने अपना ध्यान पौधों से हटाते हुए कहा और मेरे पास आकर बैठ गये।

“मुझे आपसे कुछ बात करनी है,” मैंने दादू की तरफ देखते हुए कहा।

“हाँ बोलो।”

“मेरा मतलब है मुझे आपसे कुछ माँगना है।”

“इसमें इतना सोचने वाली क्या बात है, क्या चाहिए? बोलो।”

“कम्प्यूटर।”

“बस इतनी सी बात, आज शाम तब तक आ जाएगा।” दादू ने मुस्कुराते हुए कहा।

“कम्प्यूटर के साथ नेट कनेक्शन भी।”

“मैं कोशिश करूँगा आज ही सारा काम हो जाए, पर एकदम से तुम्हें कम्प्यूटर की क्या जरूरत पड़ गयी। कल तक तो तुमने मुझे बताया नहीं।”

“वो क्या है ना दादू, मुझे नेट पर नोट्स बनाने में, पढ़ाई में हेल्प मिल जाएगी।” मैंने दादू से आँखें चुराते हुए कहा।

“अच्छा है तुमने मुझे सुबह ही बता दिया, शाम तक मैं कुछ देखता हूँ। दादू फिर से अपने पौधों में व्यस्त हो गये।”

मुझे दादू से झूठ बोलते हुए बुरा महसूस हो रहा है। आज आदित्य के लिए मैंने पहली बार दादू से झूठ बोला है। पता नहीं क्यों मैं आदित्य के बारे में जानने के लिये उत्सुक रहती हूँ। आदित्य के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानने की कोशिश करती हूँ। मुझे आजकल आदित्य के बारे में सोचना अच्छा लगता है। हथेली पर ठोढ़ी टिकाए जिस स्थिति में जहाँ बैठी थी वहीं बैठी रही, अपने विचारों में डूबी हुई।

t.me/HindiNovelsAndComics

डायरी की नई शुरूआत

मुझे अचानक ही अलमारी में पड़ी मेरी डायरी मिली जिस पर धूल की एक परत जमी हुई थी। मैंने अपने आप से वादा किया कि मैं अपनी प्यारी दोस्त (डायरी) का साथ कभी नहीं छोड़ूँगी।

सोमवार **5** अगस्त**, 2002**

"मेरी प्यारी दोस्त"

मैंने आज फिर से लिखना शुरू किया है। मैं तुम्हारे साथ जुड़ कर फिर एक नयी खुशी, नया सुकून हासिल कर रही हूँ। तुममें बहुत धैर्य है बजाए औरों के, तुम मेरी सभी बातें बड़े इत्मिनान से सुनती हो। अब मैं अपने हर सुख दुख तुमसे साझा करूँगी। इतना बता दूँ मेरे हर सुख दुख की राजदार तुम ही रहोगी। मेरे अंदर दर्द का एक भयानक विस्फोट है जो दिल की गहराई तक समाया हुआ है। जिसे एक अरसे से मैंने अपने अंदर दफन कर लिया। जिंदगी के तमाम लम्हें किसी के इंतजार मे बिता दिये, उस कमी का अहसास आज भी कहीं-ना-कहीं बरकरार है। मैं एक अधूरी जिंदगी जीती आयी हूँ। एक तमन्ना दिल में लिये वो कभी तो मेरी जिंदगी का हिस्सा बनेंगे।

मैं अपने साथ-साथ आदित्य के बारे में भी लिखूँगी। अब तुम मेरी ही नहीं आदित्य की भी दोस्त हो, आज मैं फिर से लिखने की स्थिति में हूँ क्योंकि अब मेरी जिंदगी में एक ऐसा शख्स है जो तुम्हारी तरह मेरी भावनाओं को समझता है और इन्हें संजोए रहता है, तो क्यों ना आज तुम्हें भी एक नाम दिया जाए जो आदित्य और मुझसे जुड़ा हुआ हो, 'डायरी ऑफ मेडीको एण्ड लॉ स्टूडेंट।' उम्मीद है तुम्हें यह नाम पसंद आएगा। भाग्य ने यही फैसला किया है कि आदित्य तुम इस डायरी का और मेरी जिंदगी का खूबसूरत हिस्सा बनो... कहने को ये मेरी डायरी के कुछ पन्ने ही हैं। लेकिन है आत्मीयता से परिपूर्ण।

आदित्य ये मेरे जिंदगी के कुछ गिने चुने पन्ने सिर्फ तुम्हारे नाम।

3 दिन बाद मेरी स्टडी टेबल पर कम्प्यूटर था और मेरा पहला काम था आदित्य की फाइल देखना, जिसका मुझे कल रात से ही इंतजार था। मैंने जैसे ही अकाउंट खोला वहाँ आदित्य की एक फाइल मिली जो उसने मेरे लिए ही लिखकर रखी थी ।

t.me/HindiNovelsAndComics

कॉलेज का पहला दिन

आदित्य की फाइल
8 अगस्त, 2002

आज मैं जल्दी-जल्दी कॉलेज के लिए तैयार हुआ। मैं कॉलेज के लिए लेट नहीं होना चाहता, आज कॉलेज का पहला दिन जो था। जब मैं अपने फ्लैट पर आया, तब तक मेरे ही कॉलेज के पांच लड़के वहाँ आकर रहने लगे। वो सभी कॉलेज के लिए निकल चुके थे सिर्फ मैं ही रह गया रूम पर, कल रात फ्लैट पर लेट आया तो आज थोड़ा देरी से उठा और उन सभी लड़कों से मिल भी नहीं पाया। मैं तैयार होकर फ्लैट से निकला और तेज कदमों से कॉलेज की तरफ बढ़ने लगा।

फ्लैट से कॉलेज पैदल केवल दस मिनट का ही रास्ता है, देर ना हो जाए, इसलिए ये रास्ता भी लम्बा लग रहा था। मेडीकल कॉलेज की यह पहली क्लास थी, पता नहीं क्यों हर पहली चीज की अपनी अलग ही खासियत होती है; चाहे स्कूल का पहला दिन, कॉलेज का पहला दिन, पहला दोस्त हो या पहला प्यार।

सुबह 8 बजे फिजियोलॉजी की क्लास है, मेरी नजर घड़ी पर पड़ी जिसमें 8:10 हो चुके थे। घड़ी देखते ही मन किया कि अपने बाल नोंच लूँ।

मैंने अपने कदमों की रफ्तार को और बढ़ा दिया, तभी मैं अपने पापा की उम्र के व्यक्ति से टकरा गया।

"ओह! माफ़ करना मैं थोड़ा जल्दी में हूँ,"

मैं उस व्यक्ति के कंधे को हाथ से पीछे धकेलते हुए आगे की ओर बढ़ा ही था कि पीछे से उस व्यक्ति ने मेरा कॉलर पकड़ के खींच लिया और मुझे घृणा की दृष्टि से देखने लगा।

"ऐ लड़का तोम किधर को जाता है, मुझे धक्का देकर?" वह व्यक्ति घूरते हुए बोला। उस व्यक्ति की लैंग्वेज से साफ जाहिर होता है कि वह बंगाल से है।

मैंने सॉरी बोला। "मैं क्लास के लिए पहले से ही लेट हो रहा हूँ।" मेरी निगाह नीचे पड़ी बुक्स पर गयी, जिस पर सुनहरे अक्षरों से अंग्रेजी में बायोकैमेस्ट्री लिखा था। यह किताब उस व्यक्ति के हाथ से तब गिरी, जब उसने अपने बूढ़े शरीर का पूरा जोर लगाते हुए कॉलर पकड़ कर मुझे खींचा था। मैं उस व्यक्ति से नजरें चुराते हुए यही सोच रहा था भगवान ना करें, ये मेरे बायोकैमेस्ट्री के प्रोफेसर हों। वो अभी भी एकटक मुझे खा जाने वाली निगाहों से घूर रहे थे।

अगर ये प्रोफेसर हुए तो मेरा मेडिकल कॉलेज का पहला दिन ही मनहूस हो जाएगा और पता नहीं यहाँ पाँच साल तक मेरे साथ क्या-क्या होगा?

"ऐ लड़के तोम फर्स्ट इयर का छात्र है और होमको धक्का देकर जाता है। हम चाहूँ तो तोमको *10* साल तक फर्स्ट इयर में पास ना करूँ, समझा तोम," सर के ढीले ढाले कोट जिसमें दो इंकपैन लटक रहे थे और सर ने व्हाइट पैंट पहना हुआ था।

मैं अब समझ चुका था यह एस.आर.एस. कॉलेज के प्रोफेसर हैं।

सर का गुस्सा मुझ पर और निकले उससे पहले मैं नीचे पड़ी हुई किताब को उठाने लगा। जिस बुक के पेजों के बीच से एक येलो आई.डी. कार्ड निकला, जिस पर सर का नाम,

t.me/HindiNovelsAndComics

एस.आर.एस. कॉलेज की सील लगी हुयी थी। उस कार्ड पर लिखा था एच. ओ. डी. ऑफ बायोकैमेस्ट्री, जो हमारे कॉलेज के सीनियर प्रोफेसर हैं। यह पढ़ते ही मेरा सिर चकराने लगा और इस बात के लिए मैं समय और भगवान को कोसने लगा। मेरा समय ही खराब चल रहा था।

भगवान मुझे किसी लड़की से टकराता, यही एच.ओ.डी. मिला मुझसे टकराने के लिए। मैंने बायोकैमेस्ट्री की बुक सर को दे दी और सर के सामने इस तरह सर झुकाकर खड़ा हो गया जैसे सर की बेटी या उनकी वाइफ को लेकर भागा हूँ, और पकड़े जाने के बाद मुजरिम के जैसे सर के सामने खड़ा हूँ।

"तुम्हारा नाम क्या है लड़के?" सर ने मुँह चढ़ाकर पूछा।

मेरा ध्यान सर के दाँतों पर गया जिसमें एक दाँत सोने का था, जिसे देखकर अंदर-ही-अंदर मुझे हँसी आ रही थी, लेकिन इस वक्त मैं हँसने-हँसाने की स्थिति में नहीं था।

"सर, आदित्य अरोड़ा चित्तौड़ से।"

"ओऽऽह बच्चा, मैं भी चित्तौड़ से ही हूँ," सर के चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गयी।

सर की मुस्कान से मैंने थोड़ी राहत की सांस ली। वरना मुझे आज कॉलेज का पहला दिन ही आखिरी दिन जैसा प्रतीत हो रहा था।

"मैं बंगाल से हूँ, पर बीस सालों से चित्तौड़ में रह रहा हूँ। वहाँ मेरी वाइफ कॉलेज में प्रोफेसर है और मैं यहाँ जयपुर में बायोकैमेस्ट्री डिपार्टमेंट का एच.ओ.डी. हूँ," सर ने हँसते-हँसते अपनी बात पूरी की। फिर सर मुझे अपने साथ लेकर कॉलेज के लिए चलने लगे।

उस वक्त मैं सोच रहा था कि मैं चित्तौड़ से हूँ, उनके ही शहर से हूँ, इसलिए मुझे माफ़ कर दिया और मुझे अपने साथ कॉलेज भी ले जा रहे हैं। काश मैं बंगाल से होता तो सर पक्का अपने घर डिनर पर इंवाइट कर देते या मुझे बायोकैमेस्ट्री में अच्छे मार्क्स मिल जाते...! मुझे ये बात कभी समझ नहीं आयी कि लोग अपने शहर के लोगों से जब बाहर या दूसरे देश में मिलते हैं तो इतना खुश क्यों होते हैं? जैसे कोई अपने शहर से हैं तो अपना ही है, चाहे कभी उसे देखा भी ना हो पर अपनापन-सा लगता है।

जैसे ही मैं कॉलेज में एंटर हुआ, सीनियर्स और कुछ प्रोफेसर मुझे बड़े ध्यान से देख रहे थे। सीनियर्स सोच रहे होंगे ये लड़का बायोकैमेस्ट्री के एच.ओ.डी. के साथ क्या कर रहा है। शायद सर की पहचान का ही कोई छात्र है।

मैं गर्व से एच.ओ.डी. के साथ का फायदा उठाते हुए सर ऊँचा करके चल रहा था।

"चलो बेटा, कोई प्रोब्लम हो तो मुझसे कॉन्टैक्ट करना वैसे इस कॉलेज में तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी।"

"जी सर!"

सर अपने केबिन के लिए मुड़ गये और मैं अपनी क्लास की तरफ, हालाँकि मैं क्लास के लिए 20 मिनट लेट था, फिर भी मैं लैक्चर अटेंड करने के लिए क्लास के गेट तक पहुँचा।

"मैम, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?" मैंने कहा।

मैम और पूरी क्लास मुझे घूर-घूर के देखने लगी, जैसे मैं अबनोर्मल या किसी जू से भागा हुआ जानवर हूँ। फिर मैम ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी में देखा और अपनी चुप्पी

t.me/HindiNovelsAndComics

तोड़ते हुए कहा। "आ जाओ, आज तो तुम्हारी पहली क्लास है। इसलिए कोई बात नहीं, आकर बैठ सकते हो, लेकिन आगे से वक्त पर लैक्चर अटेंड किया करो," मैम ने मुझे घूरते हुए कहा और वापस अपना टॉपिक जो चल रहा था शुरू किया। मैम स्टेथोस्कोप के बारे में समझा रही थीं लेकिन मैं अभी भी थोड़ा घबराया हुआ था अपनी इस लेट लफीत की आदत से।

"डॉक्टर्स, आज आपका पहला लैक्चर है। मैं आप सभी को स्टेथोस्कोप यूज कैसे करते हैं उसके बारे में बताऊँगी" मैम ने अपने हाथ में रखे स्टेथोस्कोप की तरफ इशारा करते हुए कहा।

किसी के मुँह से अपने लिए डॉ. सुनना कितना अच्छा लगता है और फिर वो मेडिकल कॉलज की मैम हो तो बात ही कुछ और है।

मैम ने उंगली से इशारा करते हुए कहा। "हाँ तुम खड़े हो जाओ," मैम की उंगली का इशारा मेरी तरफ था मेरी धड़कने बढ़ गयी। पहले मैं बायोकैमेस्ट्री के एच.ओ.डी. से टकराया अब फिजियोलॉजी के लैक्चर में मैम की पनिसमेंट!

मैं खड़ा होने ही वाला था कि मेरे पीछे बैठा लड़का खड़ा हो गया, मैं पाँचवी पंक्ति में बैठा था और वो लड़का छठी पंक्ति में मेरे पीछे ही बैठा था। हमको अपने नाम के हिसाब से अल्फाबेटिकली ऑर्डर में बैठना होता है शायद उस लड़के को लगा मैम उसे कह रही हैं।

"यस मैम," उस लड़के ने खड़े होते हुए कहा। भगवान का शुक्र है आज आपने मुझे दूसरी बार बचा लिया। मैं पीछे मुड़कर उस लड़के को देखने लगा।

"मैंने तुमसे नहीं, तुम्हारे आगे बैठे लड़के से कहा जो मेरे लैक्चर में बीस मिनट लेट था, लेकिन कोई बात नहीं तुम ही आ जाओ यहाँ।"

"लेकिन मैम।"

"लेकिन क्या, आ जाओ प्लेटफोर्म पर और रिलेक्स, मैं तुम्हारा डिसेक्शन नहीं करूँगी," मैम हँसने लगी, मैम के साथ पूरी क्लास भी हँसने लगी, लेकिन चंद ही सेकेण्ड में पूरी क्लास शांत भी हो गयी।

वो लड़का मैम के पास प्लेटफोर्म पर जाकर खड़ा हो गया, वह दिखने में सीधा-साधा लग रहा था, उसको देखकर ही लग रहा था कि वो कितना डरा हुआ है। आज पहली ही क्लास में मैम ने उसे सबके सामने खड़ा कर दिया। मैं उसे बड़े ध्यान से देख रहा था उसका कद 5'3" और वह ज्यादा मैच्योर भी नहीं लग रहा था। गेहूंआ रंग का चेहरा, घने बाल, उसके मुँह में आगे के दो दाँत थोड़े से बड़े थे। जो उसके 'यस मैम' बोलने पर दिख रहे थे।

"शायद उस लड़के के पापा घर बनाने के लिए, फावड़े की जगह इसके दाँतों का ही इस्तेमाल करते होंगे। दाँतों से रेत, सीमेंट का गारा मिलाने में हेल्प करता होगा बेचारा, एक मजदूर-की-मजदूरी भी बच जाती होगी। बेचारे पर बाल अत्याचार होता होगा," मेरे बगल में बैठा लड़का धीरे से फुसफुसाया जो कि लम्बा और दुबला पतला-सा था और जिसने चेहरे पर मोटा चश्मा लगा रखा था। मैं उसकी बात को ध्यान से सुन पा रहा था। मेरे बगल में बैठा हुआ लड़का अपनी कही हुई बात पर खुद ही हँसने लगा। उसकी बात सुनकर मुझे भी हँसी आ गयी, पर मैंने ये सोच कर अपनी हँसी रोक ली, कि अगर ये लड़का खड़ा नहीं होता तो शायद इस वक्त मैं, मैम के पास खड़ा होता और ये लोग मुझ पर हँसते।

t.me/HindiNovelsAndComics

“नाम क्या है तुम्हारा?” मैम ने अपने पास खड़े उस स्टूडेंट से पूछा।

“नवदीप।”

“ओके नवदीप, अपनी शर्ट उतारो।”

“मैम!”

नवदीप ने रूंआसे होकर कहा और पूरी क्लास शांत थी जैसे क्लास में कोई है ही नहीं। नवदीप को देखकर यही लग रहा था अगर मैम ने आगे कुछ और कहा तो वो लड़का पूरी क्लास के सामने रो पड़ेगा।

“तुम इतना घबरा क्यों रहे हो? शर्ट उतारो, ताकि मैं सभी स्टूडेंट को स्टेथोस्कोप कैसे यूज करते हैं, बता सकूं,” मैम ने नवदीप से कहा।

नवदीप अपनी शर्ट के बटन खोलता जा रहा था और पूरी क्लास को देख रहा था। नवदीप का चेहरा इस वक्त बहुत दयनीय स्थिति में था। सिर्फ लड़के क्लास में होते तो नवदीप को बुरा फील नहीं होता क्योंकि हम लड़के घर पर तो लोवर बनियान या टॉवेल बनियान में ही घूमते हैं। ना ही शर्म आती है और ना ही बुरा फील होता है लेकिन पूरी क्लास में शर्ट उतारना थोड़ा शर्मनाक लगता है जबकि क्लास में मैम और गर्ल्स भी हैं।

मैं इस वक्त नवदीप की मनःस्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझ पा रहा हूँ। मेडिकल कॉलेज का पहला दिन, पहली क्लास नवदीप अपनी पूरी जिंदगी में कभी ना भुला पाएगा।

नवदीप ने अपनी शर्ट उतारकर रख दी।

नवदीप दिखने में 12वीं क्लास का बच्चा लग रहा था। जैसा कि मैं उम्मीद कर रहा था। नवदीप की वॉडी न सलमान जैसी थी और ना ही शाहिद जैसी! नवदीप का बदन दुबला-पतला दिखाई दे रहा था नवदीप को इसलिए भी शर्म आ रही होगी क्योंकि वो दिखने में दुबला-पतला था।

अगर नवदीप की बॉडी अच्छी होती तो उसको इतनी शर्म नहीं आती। बल्कि शर्ट उतारकर अपनी बॉडी दिखाना अच्छा लगता। अच्छा इंप्रेशन बनता क्लास में। खासकर लड़कियों के सामने जैसा कि हमारे फिल्म इंड्रस्टी के हीरो करते हैं।

मैम, नवदीप के हार्ट पर स्टेथोस्कोप रखकर दिल की धड़कन के बारे में हमें समझाने लगी। पूरी क्लास मैम को ध्यान से सुन रही थी।

वैसे इस वक्त नवदीप की धड़कन सुनने के लिए स्टेथोस्कोप की जरूरत नहीं थी, वो तो बिना स्टेथोस्कोप के भी सुनाई दे रही थी।

“मैम का नाम क्या है?” मेरे पास बैठा लड़का मेरे कान में धीरे से फुंसफुसाते हुए बोला।

“डॉ॰ प्रतिभा चौधरी।” मैंने कहा।

“तुम्हें कैसे पता?” उस लड़के ने अपना 7 नं॰ का मोटा चश्मा आँखों पर चढ़ाते हुए कहा।

“मैंने एस.आर.एस. कॉलेज व यहाँ की टीचर फैकल्टी के बारे में यहाँ आने से पहले नेट पर देखा था, इसलिए मुझे पता है एनाटोमी, फिजियोलॉजी और बायोकैमेस्ट्री हमें कौन पढ़ाएगा?”

t.me/HindiNovelsAndComics

"मुझे तुम्हारी हाजिर जवाबी अच्छी लगी। वैसे मेरा नाम सोनू है। मैं कॉलेज के पास ही फ्लैट जे-86 में रहता हूँ।"

"ओह! मैं भी जे-86 फ्लैट में ही रहता हूँ" मैंने सरप्राइज होते हुए कहा।

"मैं कल यहाँ मॉर्निंग में ही फ्लैट पर आ गया था और शायद तुम ही हो जो एक रूम में अकेले रहते हो, कल रात को आये थे?" सोनू ने कन्फर्म करने के लिए पूछा।

"हाँ, मैं वही हूँ, कल रात को देर से आया था, तुम लोगों से मिल नहीं पाया, आकर सो गया।" मैंने कहा।

"क्या तुम्हें तुम्हारा रूम पाटर्नर मिला?"

"नहीं, अभी तक तो नहीं मिला, लेकिन कोई-ना-कोई मिल जाएगा। मुझे यहाँ आए हुए अभी एक ही दिन तो हुआ है।"

"ओह! देख लेना। वैसे मैं तुम्हें अपना रूममेट बना लेता लेकिन मैं और प्रताप एक रूम में है।"

कॉलेज में पहला दिन खत्म होते 2 बज चुके थे। मेरे पेट में जोरों से चूहे दौड़ने लगे थे। मैं बैग लेकर कॉलेज से निकला तभी मैंने महसूस किया, मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा, मैं यस कहते हुए पीछे मुड़ा यही सोचते हुए आखिर कौन हो सकता है, यहाँ कॉलेज में मुझे जानने वाला।

"ओह हाय!" मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया। यह वही लड़का है जिसने आज पूरी क्लास में मेरी इज्जत बचाई, वरना इसकी जगह आज मैं शर्ट उतारकर खड़ा होता।

"मुझे अपने आप को इन्ट्रड्यूज करने की जरूरत नहीं है क्योंकि आज पूरी क्लास मेरे बारे में जान गयी होगी, फिर भी मैं कुछ अपने बारे में तुम्हें बता देता हूँ। मैं नवदीप जैन अलवर से हूँ।"

"मैं आदित्य अरोड़ा चित्तौड़ से।" मैंने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, पर नवदीप ने हाथ नहीं बढ़ाया, शायद वो अभी भी सदमें में ही है।

"वैसे तुमने, मुझे आज थैंक्स नहीं बोला। आज तुम्हारी मुसीबत मैंने गलती से अपने सर लेली।" नवदीप ने अजीब-सा मुँह बनाते हुए कहा, शायद नवदीप को जब बुरा लगता होगा तो वो ऐसा ही मुँह बनाता होगा।

"आई एम रियली सॉरी, मैम ने मुझे उठने को कहा था, पर तुम गलती से उठ गये, थैंक्यू नवदीप..."

"ठीक है। अब जो हो गया सो हो गया। तुम्हारे थैंक्स सॉरी बोलने से कुछ बदलेगा नहीं," मैं और नवदीप साथ-साथ चलने लगे। नवदीप अभी भी सर झुकाए उदास-सा चल रहा था। शायद आज का दिन नहीं भुला पा रहा होगा। इस गमगीन माहौल से बाहर निकलने के लिए मैंने ही बात करना शुरू किया।

"तुम जयपुर में कहाँ रहते हो?"

"अभी तो मैं होटल में रूका हुआ हूँ, कल ही यहाँ आया, रूम, फ्लैट हॉस्टल देखे, कुछ समझ नहीं आया। मेरा सारा सामान होटल में रखा है आज फिर ढूँढने निकलूंगा।"

"हाँ, मुझे उम्मीद है जल्दी मिल जाए तुम्हें कोई अच्छा रूम।"

"हाँ, पर यहाँ इतनी जल्दी रूम मिलना थोड़ा मुश्किल है, तब तक होटल में ही

t.me/HindiNovelsAndComics

रूकूंगा।”

अचानक मुझे याद आया, “क्यों ना तुम मेरे साथ मेरे फ्लैट में रहो, मेरे फ्लैट में अभी एक लड़के के लिए जगह है। मेरे रूम में मैं अकेला हूँ, मुझे भी रूम मेट चाहिए। अब तुम्हारी मर्जी जैसा भी तुम ठीक समझो।”

“मुझे कोई प्रोबलम नहीं है, मैं तुम्हारे साथ रहने को तैयार हूँ। क्या तुम मुझे अपना फ्लैट दिखा सकते हो?” नवदीप ने मेरी ओर देखते हुए कहा।

“हाँ जरूर, मैं फ्लैट पर ही जा रहा हूँ, मेरा फ्लैट, जे-86 है।” मैंने जे-86 तो ऐसे कहा जैसे मैं अपनी पी.एम.टी. की रैंक बड़े गर्व से बता रहा हूँ।

“तुम रूम लेकर रह रहे हो या पी.जी.?”

“हम रूम लेकर रह रहे हैं, पास में ही मैस है, वहाँ लंच, डिनर, के लिए चले जाते हैं।”

“पूरे फ्लैट का कितना किराया है?” नवदीप ने पूछा।

“2000 पर हेड,” बातें करते-करते हम, जे-86 पहुँच गए।

“नवदीप, ग्राउंड फ्लोर पर मकान मालिक आंटी रहती हैं। उन्होंने कह दिया है अगर हमें मैस का खाना अच्छा ना लगे तो उनके यहाँ भी खा सकते हैं। मेरे फ्लैट में हम 6 लड़के हैं, जिनसे मैं अभी मिल नहीं पाया हूँ। कल देर रात यहाँ आया था, आज मिलूंगा, अगर तुम्हें रूम पसंद आता है, तो हम 7 लड़के हो जाएँगे।” सीढ़िया चढ़ते-चढ़ते मैंने सारी बातें नवदीप को कह दी।

नवदीप भी मेरी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। जैसे कोई एनाटोमी का लैक्चर हें, अगर ध्यान से नहीं समझा तो फिर बाद में खुद से पढ़ने पर समझ ही ना आये। नवदीप मुझे पहली नजर में ही अच्छा लगने लगा। अच्छा लगने लायक मुझे उसमें कोई खासियत तो नहीं दिखी लेकिन नवदीप की मासूमियत अच्छी लगी। वह मुझे थोडा मेरे छोटे भाई के जैसा मासूम लगा। इसलिए मैं नवदीप को अपना रूममेट बनाने के लिए तैयार हो गया।

मैंने रूम की तरफ इशारा किया। “ये मेरा रूम है, तुम देख सकते हो और रूम के बाहर बालकनी भी है।” मैं हॉल में पहुँचा, सोनू मुझे हॉल में ही मिल गया।

हमारे फ्लैट पर 3 रूम है। एक बड़ा हॉल है और एक किचिन है जो हम 7 लड़को के लिए काफी है। दो रूम में दो-दो लड़के और एक रूम में 3 लड़के रहेंगे।

सोनू ने सभी फ्रेन्ड्स के बारे में बताया जो हमारे फ्लैट में रहते हैं। प्रताप और सोनू एक रूम में रहते है। सोनू का रूम दोनों रूमों के बीच में है। सोनू के राईट साइड वाले रूम में, मैं अकेला हूँ। रूममेट की तलाश है और लेफ्ट साइड वाले रूम में शुभ, विश्वास, यश रहते हैं। प्रताप से भी आज बात हुई, सोनू से भी, सोनू से बात करते वक्त मैंने शुभ के रूममेट के बारे में पूछा।

“शुभ से हाय हैलो ही हुआ, पर शुभ के रूममेट ने बात तक नहीं की। कॉलेज से आने के बाद भी अपने रूम में बुक्स लेकर पढ़ने चले गये। मुझे थोड़ा-सा उनका बिहेवियर अजीब लगा,” मैंने कहा। बातें करते-करते हम मेरे रूम आ गये।

“आदित्य, शुभ के रूममेट शायद कम बोलते हैं। कल मैंने उनसे बात की, तो सही से ज़वाब भी नहीं दिया और रूम में चले गये,” सोनू ने कहा।

सोनू का चेहरा इस वक्त यह साफ-साफ बता रहा था कि उनका व्यवहार सोनू को

t.me/HindiNovelsAndComics

बिल्कुल पसंद नहीं आया।

सोनू का व्यवहार हँसमुख और मिलनसार है। सोनू की हाइट 5 फुट 5 इंच है, लेकिन दिखने में एकदम दुबला पतला और आँखों पर सात नं॰ का मोटा चश्मा लगा है, जो अक्सर वह बात करते वक्त चश्में को नाक पर चढ़ाता रहता है। शायद ये उसकी आदत में शामिल है।

“मुझे ये रूम पसंद आया, अगर तुम मुझे अपना रूममेट बनाना चाहते हो तो मैं आज रात को ही सामान लाकर यहाँ शिफ्ट हो जाता हूँ।” नवदीप ने हमारे पास आते हुए कहा।

“हाँ, मैं तो चाहता हूँ कि कोई मेरा रूममेट बनें,” मैंने कहा।

“तो दोस्तों मैं इवनिंग में आता हूँ।” नवदीप कमरे से बाहर चला गया। नवदीप के जाने के बाद, मेरी निगाह सोनू पर गयी।

“चलो जे-86 में एक और नया मुसटंडा आ गया। अब हम पूरे 7 हो गए, अरे नहीं,“ सोनू ने कहा और अपना हाथ बैड मैं जोर से दे मारा। “7 नहीं यार, केवल 5 क्योंकि हमारे फ्लैट में दो लड़के अच्छे नहीं हैं। या तो इन लड़कों को यहाँ से निकालना पड़ेगा या हम 5 ही अच्छे फ्रेंड्स बनकर रहेंगे। शुभ का नेचर भी बहुत अच्छा है,” सोनू ने अपने मोटे चश्में में से अपनी बड़ी-बड़ी आँखें निकालते हुए कहा और नाक सिकोड़ कर मेरे रूम से बाहर चला गया। वह एक छोटे मासूम बच्चे की तरह नाक सिकोड़ रहा था। सोनू के नाक सिकोड़ने की आदत भी मुझे अच्छी लगी। मैं और सोनू साथ-साथ पास की मेस में लंच के लिए गए।

मेस का खाना देख कर तो मेरा दिल खुश हो गया। प्लेट में कलरफुल फूड था, जैसे सारे रंग मेरी ही प्लेट में समा गये हो। भिन्डी, रायता, पुलाव, चपाती, आलू ये सब खाना देखकर भूख दस गुनी और बढ़ गयी। लेकिन थोड़ी ही देर में खाने की असलियत साफ जाहिर थी, खाना स्वादहीन था और जो थोड़ा बहुत स्वाद था वह भी हर चीज का एक जैसा। यह मेस वाले भी कुकिंग में माहिर होते हैं। हर चीज को एक ही स्वाद में ढ़ाल देते हैं। पता नहीं ऐसा हुनर कहा से आता है लेकिन घर से दूर हैं तो यही खाना पड़ेगा।

t.me/HindiNovelsAndComics

प्रेगनेंसी किट

फाइल

"आदित्य, आज तूने कॉलेज में असाइनमेंट जमा नहीं किया? आज लास्ट डेट थी," सोनू के हाथ में बड़ा पाव था। पूरा मुँह बड़ा पाव से भरा हुआ था। मुँह इतना भरा हुआ था, कि जब उसने मुझसे बात करने के लिए मुँह खोला तो बड़ा पाव का एक छोटा टुकड़ा फर्श पर गिर गया, जिसे फर्श पर चल रही चींटियो ने गेंद की तरह लपक लिया।

"सोनू असाइनमेंट बाद में, पहले तो तू मुझे ये बता। तू इतना खाता है वो जाता कहाँ है? दिखने में तू हड्डी का ढांचा लगता है," मैंने सोनू के भरे मुँह को देखते हुए कहा।

"मैं ज्यादा थोड़े ना खाता हूँ," तब तक सोनू मुँह में भरा हुआ बड़ा पाव गटक चुका था।

"मैम से कहना पड़ेगा, कि स्केलेटन के बजाए तुझे कील पर टांग दें, एक-एक हड्डियाँ साफ-साफ दिखाई देंगी," मैंने सोनू को चिढ़ाने के लिए कहा।

"मेरा मजाक मत बना," सोनू भौंहें चढ़ाकर बोला।

"इसमें मजाक की क्या बात है, तेरे शरीर की एक-एक हड्डी साफ-साफ दिखाई देती है। तू जंकफूड, वटर भी बहुत खाता है, कुछ-ना-कुछ खाता ही रहता है। तेरा खाना जाता कहाँ है? इतना खाने के बावजूद भी तू मोटा क्यों नहीं होता?"

सोनू कुछ कहने ही जा रहा था कि गेट पर किसी के आने की आवाज हुई।

"आदित्य तेरा रूममेट आ गया, वेलकम नवदीप जैन आपका जे-86 में स्वागत है।" सोनू गेट की तरफ बढ़ गया और नवदीप के स्वागत में आदर से सिर झुकाया...सोनू ऐसे नौटंकी के जैसा व्यवहार करता रहता है।

"क्या ड्रामा है ये? अब तू अपनी नौटंकी बंद कर," नवदीप सोनू को धकेलता हुआ बैग हाथ में लिए रूम में आ गया।

नवदीप के धकेलने से सोनू थोड़ा ड़गमगाया और अपने आपको गिरने से बचाते हुए नवदीप के पीछे-पीछे आ गया।

"क्यों नव, मैं तुझे आदर से रूम में वेलकम कर रहा था आखिर एक हफ्ते बाद आ रहा है मेरा यार, और तूने मुझे धकेल दिया," सोनू ने कहा। नवदीप का चेहरा देखकर सोनू समझ गया, नवदीप परेशान है, फिर सोनू कुछ नहीं बोला।

नवदीप 15 मिनट अपने बैड पर चुपचाप बैठा रहा, ना ही मुझसे बात कर रहा है और ना ही सोनू से, "अबे चिंतामणि तू घर से आ रहा है, तुझे खुश होना चाहिए। तू इतना उदास क्यों है? हमें बता, बात क्या है?" मैंने रूम में फैली खामोशी को तोड़ते हुए कहा। ये चिंतामणि नामकरण सोनू का दिया हुआ है।

"हाँ क्या," नवदीप ने बुझे हुए लहजे में कहा। नव ने हमारी तरफ भावशुन्य दृष्टि से देखा जैसे उसे मेरे और सोनू के कमरे में मौजूद होने का कोई अहसास ही नहीं है।

"तू हमेशा टेंशन में ही क्यों रहता है? मैंने तेरा नाम बिल्कुल सही रखा है। तू चिंतामणि है और इस वक्त तू दुःखी आत्मा लग रहा है," सोनू ने कहा।

पता नहीं, सोनू को इस वक्त भी मजाक सूझ रहा है। "देख नव, मैं कल पूरी रात बैठकर असाइनमेंट बनाता रहा, बिल्कुल भी नहीं सोया हूँ। आज असाइनमेंट की लास्ट डेट जो थी।

t.me/HindiNovelsAndComics

अगर नहीं जमा करता तो पूरे 15 मार्क्स कट जाते। नव तू सुन रहा है ना," मैंने नव को झकझोर दिया।

"कल सोया नहीं हूँ। इसलिए आज मुझे बहुत नींद आ रही है। अगर तुझे बात करना है तो बोल, अगर तू बात करना नहीं चाहता, अकेले रहना चाहता है तो मैं सोने जा रहा हूँ।"

मैं नव के बैड से उठकर मुड़ा और अपने बैड की तरफ जाने लगा तभी मुझे, धीरे-धीरे सिसकियों की आवाज सुनाई दी। "आदि, नव रो रहा है," सोनू ने कहा।

मैंने पलट कर देखा, नव की आँखों में आँसू थे, आँसू लुढ़क कर उसके गाल पर आ गये। थोड़ी ही देर में नव का पूरा चेहरा आँसूओं से भीग गया।

मैं फटाफट नव के पास गया, और नव को अपना रूमाल दिया, "नव प्लीज रोना बंद कर आखिर हुआ क्या है, तू रो क्यों रहा है? हमें कुछ बताएगा भी, घर पर सब ठीक है ना?"

"हाँ, घर पर सब ठीक है!"

"फिर तू रो क्यों रहा है? अब बता, क्या प्रॉब्लम हो गयी?" मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

नव ने अपना आँसू से भीगा चेहरा पोछा, "मैं क्या बताऊँ क्या हुआ है मेरे साथ," नव का गला अभी भी भरा हुआ था।

"अब घरवाले मुझे गलत समझने लगे हैं। उन्हें लगता है कि मैं मेडिकल कॉलेज में आकर बिगड़ गया हूँ।"

मैं और सोनू दोनों बैड पर तसल्ली से बैठ कर नव का दुखड़ा सुन रहे हैं; तभी प्रताप, सोनू को ढूँढ़ते हुए आ जाता है अब हम तीनों नव की बातों को ध्यान से सुनने लगे आखिर माज़रा क्या है?

"आदित्य तुम तो जानते हो जब रेगिंग हुई थी तब सीनियर्स ने अपनी सिगरेट तुम्हारी शर्ट में डाल दी थी।"

"हाँ, मुझे याद है।" मैंने कहा।

"आदित्य, गलती से मैं तुम्हारी वही शर्ट पहन कर घर चला गया, जब शर्ट उतारी उस वक्त घर के सभी लोग हॉल में बैठकर टी.वी. देख रहे थे। जैसे ही सिगरेट मेरी शर्ट से गिरी बड़े भैया ने देख लिया, भैया ने पूरी कोशिश करते हुए अपने पैर से सिगरेट छुपा ली, ताकि मम्मी-पापा सिगरेट न देख पायें। पर जब भैया सिगरेट छुपा रहे थे तब पापा ने देख लिया। फिर पापा ने हम दोनों भाईयों को बहुत डाँटा। मेरी वजह से भैया को भी डांट खानी पड़ी। डेढ़ घंटे तक पापा ने लेक्चर सुनाया मुझे तो ऐसा लग रहा था कि मैं सुन्न सा हो गया हूँ। कुछ सुनाई नहीं दे रहा था पापा का लेक्चर तो एनाटोमी, फिजियोलॉजी के लेक्चर से भी ज्यादा खतरनाक था। एक जगह खड़े होकर गर्दन झुकाकर चुपचाप पापा की डाँट खा रहे थे। जबकि मेरी कोई गलती भी नहीं थी। मैं उस वक्त दहशत में था।"

"चिंतामणी, तुझे अपनी सफाई में कुछ बोलना तो चाहिए था," प्रताप ने नव की बात खत्म होने के तुरंत बाद कहा।

"पापा से कुछ नहीं कह सकता था। मम्मी और भैया को सारी सच्चाई बता दी कि सीनियर्स की सिगरेट है मेरी नहीं। मैं तो कभी सिगरेट पीता ही नहीं, फिर मम्मी को

t.me/HindiNovelsAndComics

समझाने में भैया ने भी मेरा साथ दिया।"

"तेरी मम्मी मान गयी कि ये सिगरेट तेरी नहीं है?" सोनू जो इतनी देर से उत्सुकता से बातें सुन रहा था, बोला। सोनू का चेहरा देख कर लग रहा था वो अभी और भी मसालेदार बातों का जायका लेना चाहता है।

"हाँ, पर एक उससे भी बड़ी बात हो गयी। जिसके लिए मम्मी इतनी जल्दी ना मानें और भैया ने भी मेरा साथ नहीं दिया। जो हर वक्त मेरा साथ देते थे, वो भी चुप हो गये," अपनी बात कहते-कहते नव की आँखों में फिर से पानी झलक आया।

"चिंतामणि, अब कौन सा नया कांड कर दिया तूने?" सोनू ने कहा।

"अगले दिन, मम्मी ने मेरे सारे कपड़े धोने के लिए माँगे। मैंने सारे कपड़े वाशिंग मशीन में डाल दिए और एक बार वाशिंग मशीन चलाकर किचन में आ गया, पर मशीन में कुछ आवाज होने लगी जैसे कॉइन या प्लास्टिक का कुछ सामान कपड़ों के साथ चला गया है। मम्मी ने मुझसे पूछा, "कोई कॉइन तो नहीं थे तेरे कपड़ों में," मैंने मना कर दिया। फिर चलते-चलते मशीन रूक गयी।"

"मैं और भैया देखते हैं मशीन में क्या अटक गया है?" मैंने मम्मी से कहा।

कपड़े और मशीन का पूरा पानी निकाल लिया, और मम्मी मेरी जेब चेक रह रही थी कहीं कॉइन तो नहीं रखे हैं।

"फिर क्या हुआ?" सोनू ने पूछा।

"भैया ने मशीन में देखा, तो प्लास्टिक का कुछ पडा हुआ था। भैया ने मशीन से प्लास्टिक का टुकड़ा निकाल लिया, 'मम्मी इसमें प्लास्टिक का कुछ पड़ा है'।"

"मम्मी ने कहा कि "नव की जेब में भी कुछ है" प्लास्टिक का दूसरा हिस्सा मेरी जेब से निकाला। मम्मी और भैया ने जब दोनों टुकड़ों को गौर से देखा तो वो समझ गये कि ये प्रेगनेंसी किट है।"

"मम्मी और भैया प्रेगनेंसी किट देखकर बहुत ही गुस्सा हुए, दोनों मुझे घृणा की दृष्टि से देखने लगे। जैसे मैंने बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो। वो पूछने लगी कि ये प्रेगनेंसी किट मेरी पैंट में कहाँ से आयी?"

"ये तो बहुत सदमे वाली बात है, तेरी जेब में यह आयी कहाँ से?" सोनू ने जानबूझ कर पूछा।

"इस वक्त भी सोनू तुझे मजाक सूझ रहा है। रेगिंग की सारी बातें बतायी तो थी तुझे। तू रेगिंग वाले दिन होता तो तुझे मेरी हालत समझ में आती।" नव ने कहा।

"सोनू प्लीज स्टॉप इट, नव की प्रोब्लम समझ। हाँ नव, तू बोल," मैंने नव की मनःस्थिति को समझते हुए कहा।

"भैया उस वक्त मुझे मम्मी की डाँट खाने के लिए अकेला छोड़ कर चले गये। भैया ने मेरा साथ नहीं दिया, वो भी मुझे गलत समझते हैं।"

"मैंने मम्मी को सब कुछ बता दिया, सीनियर्स ने मुझे यह जेब में रखने को कहा था। मजबूरी में रखना पड़ा और मैं घर आने से पहले निकालना भूल गया, मैंने मम्मी को बहुत समझाया कि प्लीज मुझ पर विश्वास कीजिए। लेकिन अब तो मेरे पेरेन्ट्स मुझ पर शक करने लगे हैं। कहते हैं मेडिकल कॉलेज में जाकर उनका नव बिगड़ गया है। पहले तो बहुत

t.me/HindiNovelsAndComics

सीधा था। अगले दिन ही मैं यहाँ आ गया। आदित्य तू ही कुछ बता, मैं घरवालों को अब कैसे समझाऊँ कि मैं अब भी पहले वाला उनका सीधा-सीधा नव हूँ।"

"नव, अब क्या कहूँ। मैं बस इतना ही कहूंगा कि आगे से जब भी घर जाये तो जेब बगैरह सब चेक कर लिया कर और धीरे-धीरे घरवाले भी समझ जाएंगे। उन्हे थोडा समय दे, तू टेंशन में मत ले। थोड़ा रिलेक्स हो जा, मैं समझ रहा हूँ। घरवालों के सामने तुझे कितना बुरा फील हुआ होगा।"

"आदि तेरा फोन आ रहा है, तू मोबाइल साइलेंट मोड पर क्यों रखता है?" सोनू ने पूछा।

"माही का फोन है," मैं मुस्कुरा दिया।

"ओहह! तेरी गलफ्रेंड का फोन है," प्रताप और सोनू ने एक साथ सुर में सुर मिलाकर कहा।

"आदित्य तुझे तो सोना था ना, कल भी नहीं सोया। तुझे तो नींद आ रही थी," सोनू ने छेड़ते हुए कहा।

"मुझे नहीं आ रही नींद और हम सिर्फ अच्छे फ्रेंड है। अब चुप करो, मुझे बात करने दो। खैर मैं भी किससे कह रहा हूँ, मैं ही बाहर बालकनी में चला जाता हूँ।"

"हाय माही,"

"बड़ी देर से फोन उठाया, मुझे तो लगा सो गये हो," माही ने कहा।

"नहीं अभी तो जाग रहा था।"

"क्या कर रहे थे? कहीं बिजी हो?"

"हाँ, हम नव की प्रोब्लम सॉल्व कर रहे थे।"

"क्या हुआ नव को?"

"माही रेगिंग के वक्त हमारे सीनियर्स ने नव को जेब में प्रेग्नेंसी किट रखने को कहा था, ये भी कहा कि कॉलेज के अलावा कहीं बाहर भी मिले तो ये किट उन्हें नव की जेब में मिलनी चाहिए।

सीनियर्स कभी भी नव की जेब चेक कर सकते हैं इसलिए नव हमेशा जेब में प्रेग्नेंसी किट रखता था, तो जब नव घर गया तो उसके घरवालों ने ये प्रेग्नेंसी किट देख ली।"

"क्या मतलब प्रेग्नेंसी किट क्यों रखने को कहा? माही ने थोड़ा आश्चर्य से पूछा। आदित्य तुम सारी बात बताओ रेगिंग के बारे में।"

"क्या तुमने जीमेल पर फाइल नहीं देखी है?" आदित्य ने पूछा।

"नहीं आदित्य, मैंने नहीं देखी है,"

"तुम आज ही मेरी प्रोफाइल खोलना और उसमें मैंने रेगिंग के बारे में डिटेल में लिखा हैं। तुमसे बात नहीं हो पा रही थी तो मुझे लगा तुम प्रोफाइल तो खोलकर देखोगी।"

"मुझे वक्त ही नहीं मिला पढ़ने का। मैं अभी देखती हूँ।"

"पासवर्ड तो तुम्हें पता है ना? आदित्य ने कहा।"

"हाँ, फाइल पढ़कर फिर बात करती हूँ।"

मोबइल फोन एक तरफ रखकर मैंने कम्प्यूटर पर आदित्य की प्रोफाइल खोल ली।

t.me/HindiNovelsAndComics

रेगिंग

फाइल
शुक्रवार **16** अगस्त**, 2002**

माही, आज मैं और नव साथ-साथ कॉलेज के लिए निकले। कॉलेज में एंटर करते ही सीनियर्स खड़े थे। मैंने सीनियर्स को गुडमोंर्निंग बॉस कह कर विश किया, लेकिन नव क्लास की जल्दी के कारण सीनियर्स को विश नहीं कर पाया।

सीनियर्स ने मुझे और नव को पास बुलाया और कहा "ब्लडी फ्रेशर रात को मेरे रूम पर मिलना, 9 बजे।" सीनियर्स को नव का विश ना करना, अच्छा नहीं लगा।

"नव तुझे सीनियर्स की रेसपेक्ट करना नहीं आता। अब तेरे कारण मुझे भी रात को बुलाया है। पता नहीं क्या कहेंगे बॉस," मैंने नव से झुँझला कर कहा।

मैं और नवदीप डरते-डरते रात 9 बजे से 10 मिनट पहले पहुँच गये। देर से जाने पर बॉस और भी गुस्सा हो जाते। मुझे नहीं पता नव की गलती के लिए मुझे क्यों बुलाया, मैंने तो गुडमॉर्निंग विश किया था।

जैसे ही मैं और नव रितेन बॉस के रूम में एंटर हुए तो रितेन बॉस ने आदर से झुककर बड़े उत्साह से स्वागत किया। रितने बॉस के बिहेवियर से मुझे थोड़ा सुकून मिला कि शायद बॉस हम से नाराज नहीं हैं। यूँ ही बुला लिया होगा। पर अगले ही पल हमारे रूम में एंटर होने के बाद रितेन ने गेट लगा दिया। रूम में रितेन बॉस के अलावा 3 सीनियर्स और थे जिनका नाम मैं नहीं जानता। स्टडी टेबल पर वाइन की एक बोटल रखी थी साथ में कुछ स्नेक्स भी रखे थे। सभी सीनियर्स हमारे आने से पहले ड्रिंक कर रखे थे। चेयर पर तीनों सीनियर्स धसकर बैठे थे और नशे की हालत में थे। रितेन हमसे बात करने के लिए जब मेरे पास आया तो उसके मुँह से ड्रिंक की स्मेल आ रही थी। रितेन बॉस के लड़खड़ाते कदम इस बात का सबूत था कि वो बहुत अधिक नशे की हालत में थे।

"ब्लडी फ्रेशर" रितेन बॉस मेरे मुँह के पास आकर जोर से चिल्लाया।

नव का चेहरा पसीना-पसीना हो गया। मुझे डर लग रहा था पर उतना खौफजदा नहीं था क्योंकि मैंने बॉस को विश किया था। मेरी केई गलती नहीं शायद इसलिए मैं थोड़ा बेफ्रिक था। मुझे बॉस कुछ नहीं कहेंगे।

रितेन ने नव की तरफ ऊँगली का इशारा करते हुए पूछा "क्या नाम है तेरा?"

"बॉस, नवदीप जैन।"

"पी.एम.टी. में कितनी रैंक थी?" रितेन ने नशे की हालत में झूमते हुए पूछा।

"बॉस, 451 रैंक ए.आई.पी.एम.टी."

रितेन बॉस नव से उसका इन्ट्रोडक्शन लेने में बिजी थे और मैं नजरें बचाकर स्टडी टेबल पर रखी बोटल का ब्राण्ड बड़े ध्यान से देख रहा था, बोटल पर रेड लेवल पर रॉयल स्टेग लिखा था मैंने धीरे से नाम फुसफुसाया।

"तुम ब्लडी फ्रेशर को अपने सीनियर्स से बात करने की भी तमीज नहीं है" रितेन इतने जोर से चिल्लाया कि उसका पूरा शरीर हिल गया।

मुझे रितने को देखकर थोड़ी हँसी भी आ रही थी, पर वक्त की नजाकत को समझते हुए

t.me/HindiNovelsAndComics

मैं चुपचाप नव के पास खड़ा रहा।

"सबसे पहले तुम लोग सीखोगे सीनियर्स को विश कैसे किया जाता है। तुम दोनों 90 एन्गल पर झुककर हमें विश करोगे, कम-से-कम एक महीने तक, चलो बच्चों विश करके बताओ, शाबाश करो विश।"

"ऐ तू, क्या नाम है तेरा? तू क्यों नहीं झुका?"

"आदित्य अरोड़ा।"

"ओह ए2! चल वे ए2 झुक।"

मैं झुका, पर नव थोड़ा ही झुका।

"अबे तू पेट से है क्या? जो तुझसे 90 झुका नहीं जाता।"

"नो बॉस" नव ने कहा।

"तुझे पक्का पता है कि तू प्रेगनेंट नहीं है।"

"यस बॉस।"

अब बॉस की बातों से मुझे भी घबराहट महसूस हो रही थी ।

"चलो तुम दोनों का टेस्ट लिया जाये, सीधे खड़े हो जाओ," रितेन बॉस ने गुर्राते हुए कहा।

मेरे चेहरा अब सुन्न पड़ने लगा। पता नहीं बॉस क्या करने वाले हैं।

नव के चेहरे पर तो हवाईयाँ उड़ गयी। नव का चेहरा स्टेथोस्कोप वाले दिन से भी ज्यादा भयानक लग रहा था।

(अगले ही पल) "घबरा मत हम तेरा टेस्ट नहीं लेंगे।" रितेन बॉस ने कहा- और अपने लोवर में हाथ डालकर अपनी जेब से कुछ निकाला।

मैं और नव एक दूसरे के चेहरे को ताक रहे थे। आखिर रितेन के हाथ में क्या है?

"देख नव तेरे लिए मेरे पास कुछ है, ये ले इसे तू हमेशा अपनी पेंट की जेब में रखेगा। मैं कभी भी चेक कर सकता हूँ।"

नव ने रितेन द्वारा दी गयी चीज़ को हाथ में लेकर फुसफुसाया, "ये क्या है?"

"अबे साले, ये प्रेग्नेंसी किट है, तुझे इतना भी नहीं पता तो मेडीकल कॉलेज क्या झक मारने आये हो।" रितेन बॉस और चेयर पर बैठे तीनों बॉस जोर-जोर से अपने गंदे दाँत निकाल कर हँसने लगे।

"ब्लडी ए2, तेरे लिये ये सिगरेट है। अपनी जेब में हमेशा रखना अगर तुम दोनों की जेब में यह सामान नहीं मिला तो तुम्हें कभी भी प्रेग्नेंट कर देंगे और हमेशा याद रखो अपने सीनियर्स की इज्ज़त करो।"

रितेन पलट कर स्टडी टेबल पर रखी बोटल से अपने गिलास में वाइन ड़ालने लगा।

"ये बॉस है तो क्या हम उनके कुत्ते हैं, जैसा ये कहेंगे वैसा हमें करना पड़ेगा। समझते क्या हैं ये अपने आप को?" नव रितेन के जाने के बाद हिम्मत दिखाता हुआ और दाँत पीसते हुए बोला, लेकिन वह वास्तव में अंदर तक डरा हुआ था। नव के चेहरे पर पसीने की बूँदे, हकलाते हुए शब्द, कपकपाता हुआ शरीर, उसका हाले दिल बयान कर रहा था। यहाँ हालत तो मेरी भी एकदम खस्ता थी।

"चुप कर वरना सीनियर्स सुन लेंगे। एक तो हम इनके रूम पर अकेले हैं। हमारे इसी

t.me/HindiNovelsAndComics

अकलेपन का ये कुछ भी फायदा उठा सकते हैं।"

"लड़के हैं इसका ये मतलब नहीं की हमारी कोई इज्जत नहीं है। बॉस का मूड बदल गया तो पता भी नहीं चलेगा कब हमारी इज्ज़त तार तार हो जाये। ये कुछ भी कर सकते हैं।" नव की बातें और उसके चेहरे का रंग पल पल गिरगिट की तरह बदल रहा था।

"हमे अकेले यहाँ बॉस के रूम पर नहीं आना चाहिए था। बॉस कुछ भी कर सकते हैं, जैसा बॉस कहते हैं, वैसा कर। तेरे वजह से ही मैं यहाँ पर हूँ," मैंने कहा।

"ये वक्त नहीं है मुझे कोसने का। मानता हूँ मेरी गलती है पर बॉस कितनी बद्तमीजी से बात कर रहा है। बहुत डर लग रहा है ये हमें अकेला छोड़कर उधर ड्रिंक करने चला गया।" नव ने खीजते हुए कहा।

"यही सोच रहे होंगे कमीने कि हमारे साथ क्या-क्या करना है?" रितेन बॉस की दी हुई प्रेग्नेंसी किट और सिगरेट रितेन के वापस आने तक हम अपनी जेब में रख चुके थे।

"तुम लोग क्या खुसर पुसर कर रहे हो? लगता है मेरे पीठ पीछे मुझे गाली दे रहे हो।" रितेन बॉस ने वापस आते हुए कहा और रितेन के हाथ में शराब से भरा हुआ गिलास था।

"नो बॉस, हम कुछ भी नहीं कह रहे थे। प्लीज अब हमें जाने दो," नव रितेन के सामने गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"तुम लोग जो ये खुसर-पुसर कर रहे हो इसलिए तुम दोनों को एक पनिशमेंट और मिलेगी।" रितेन बॉस अपना सर खुजलाने लगा। रितेन बॉस के सर में डेंड्रफ हो रहा था, जब रितेन बॉस अपना सर खुजला रहा था, तो डेंड्रफ उसकी नीली शर्ट पर आ गया। रितेन बॉस शायद हमारे लिये कोई बड़ी पनिशमेंट सोच रहा था। रितेन बॉस ने गंभीर चेहरा बनाते हुए चेयर पर बॉस की तरफ इशारा किया जो कि अब तक चेयर से चिपके बैठे थे।

ऐसे कि फेवीक्विक से चिपके है उठेंगे ही नहीं। पर आखिर में एक बन्दा उठकर अलमारी की तरफ चला गया। जो हमसे दूर थी पर इतना भी दूर नहीं थी कि हम उसे देख ना सके। कुछ कपड़े निकाल रहा था पर इतना समझना मुश्किल था कि वो क्या निकाल रहा है। हमारे पाँच मिनट के इंतजार के बाद बॉस वापस आया और कुछ सामान लाकर रितेन बॉस को दे दिया। "तुम दोनों छुंछुंदरों को मैं ऐसे नहीं जाने दूंगा, अभी तो बच्चे हो। अभी तो तुम्हें बहुत कुछ समझना बाकी है," कहते हुए रितेन ने मोजे और टाई अपने हाथ पर लटका दिए।

"तुम दोनों को पता है ये क्या है?"

"यस बॉस, टाई और मोजे।" नव ने एक छोटे बच्चे की तरह मासूमियत से जवाब दिया।

"यस, बड़ा समझदार है तू। चलो, अब तुम दोनों इसे पहनकर हमें डांस करके बताओ।"

"ओके बॉस," नवदीप ने आगे बढ़कर बॉस के हाथ से टाई ले ली और पहनने लगा।

"अबे बास्टर्ड पूरी बात सुन, ज्यादा हीरो मत बन मेरे सामने वरना तू सोच भी नहीं सकता मैं वो कर सकता हूँ तेरे साथ। तू सिर्फ टाई और मोजे पहनकर डांस कर। समझ रहा है ना, मैं क्या कह रहा हूँ सिर्फ मोजे और टाई पहन। तुझे अकेले शर्म आएगी। इसलिए ये ए2 भी तेरे साथ डांस करेगा। अब जल्दी कपड़े उतारो और टाई मोजे पहन कर शुरू हो जाओ।"

t.me/HindiNovelsAndComics

थोड़ी देर पहले हम थोड़ा-सा नॉर्मल हुए थे, लेकिन रितेन बॉस की बात सुनते ही दहशत में आ गए। मुझे मेरी और नव की हालत के लिए बहुत रोना आ रहा था, पर मैं जता नहीं रहा था। खड़े-खड़े मेरी दोनों टांगे बहुत कपकपा रही थी। सिर्फ मोजा और टाई में डांस... यह बहुत भयानक स्थिति थी।

"चलो, क्या खड़े-खड़े मुझे देख रहे हो, हो जाओ शुरू। मैं अभी म्यूजिक लगवाता हूँ।" रितने बॉस अपने तीनों दोस्तों के पास एक चेयर पर तसल्ली से जाकर बैठ गया।

"माफ़ कर दो बॉस, हम आपकी कही सारी बातें मानेंगे प्लीज ये ना करवाइए। आप कहो तो हम दोनों पूरे कपड़ों में आपको डांस करके बता सकते हैं," कहते-कहते नव फूट फूट कर जोर-जोर से रोने लगा। नव के आँखों में आँसू उसके गाल तक लुढ़क आये थे। "प्लीज बॉस पूरे शरीर पर केवल टाई और मोजे में हम कैसे डांस करें," रोती हुई आवाज में नव ने कहा जिससे नव का पूरा चेहरा कपकपाने लगा। हमारी स्थिति बहुत ही दयनीय थी, लेकिन मैं चाहकर भी कुछ नहीं कर सका।

यह पहली बार था जब मैंने नव को रोते देखा।

रितेन बॉस उठा। शायद उसे नव की दयनीय हालत पर तरस आ गया और रितेन बॉस अब थोड़ा नम्र होकर बोला, "चलो माफ़ किया, ये सब करने की जरूरत नहीं है।" पर अगले ही पल थोड़ा सख्त होकर बोला, शायद रितेन बॉस नशे की हालत में है, इसलिए उन्हे खुद नहीं पता कि नम्र होना है या सख्त। हमें हाथ का इशारा करके अपने पास बुला लिया। "तुम फ्रेशर हो, कल एक डॉक्टर बनोगे तो तुम्हें हमारे रूल्स फॉलो करने होंगे। ये रूल्स हैं...।"

1. "क्लीन सेव करके ही कॉलेज में आओगे।"
2. "एप्ररिन घुटनों तक होना चाहिए।"
3. "एप्ररिन के साथ टी-शर्ट नहीं पहनोगे।"
4. "और ये जॉन के जैसी तुम्हारी लम्बी-लम्बी जुल्फें यहाँ नहीं
चलेंगी। ए2 कल ही जाकर इन जुल्फों को कटवाओ।"
"ओके बॉस" मैंने अपना सर झुकाकर कहा।
5. "जब भी सीनियर्स या डॉक्टर से मिलो उन्हें विश करो, उनकी रेस्पेक्ट करो। गलती से भी सीनियर्स लड़की पर लाइन मारने की भूल मत करना, वरना बुरी हालत करेंगे तुम्हारी।"

"यस बॉस," नव ने कहा अब नव अपने आँसू पोंछ चुका था।

"अब तुम जा सकते हो," रितेन बॉस ने कहा।

"जी बॉस," हम गेट तक पहुँचे ही थे कि रितेन बॉस ने आवाज लगाई। "कहाँ जाओगे?"

मैं पलटा कहीं बॉस कुछ और ना करने को कहे.. "बॉस रूम पर" मैंने हड़बड़ाते हुए कहा।

"सीधा रूम पर जाना समझे।"

मैं और नव सीनियर्स हॉस्टल से जल्दी-जल्दी बाहर निकले। बाहर निकलकर ही हमने

t.me/HindiNovelsAndComics

चैन की सांस ली। हॉस्टल से बाहर निकलकर ऐसा महसूस हो रहा था जैसे जेल से छूट कर आ रहे हैं और हमें आजादी मिल गयी है।

"मुझे बहुत बुरा लगा जब रितेन बॉस ने मुझे प्रेग्नेंसी किट दिया। तीन, चार साल में मैंने अगर इस रितेन के बच्चे को प्रेग्नेंट नहीं किया तो मैं भी नवदीप जैन नहीं।" नवदीप गुस्से से बोला।

हम रास्ते पर चल रहे थे।

"अब बहुत रात हो गयी है। जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा वरना रूम पर सब पूछेंगे हम कहाँ थे? और तुझे जो भी करना है फ्लैट पर जाकर करना।"

"हाँ, पर हम सबको क्या कहेंगे?" नव ने पूछा।

"कह देंगे पास वाली दुकान पर चाय पीने गये थे।"

हम थोड़ी ही देर में अपने फ्लैट तक पहुँच गये। हमें किसी ने भी नहीं देखा सिवाय सोनू के, उसने भी कुछ नहीं पूछा। हम सीधा अपने रूम में गये ओर गेट लगाकर बैड पर लेट गये।

रूम पर पहुँचते ही हमने सोने की बहुत कोशिश की पर आँखों में नींद नहीं, बल्कि सीनियर्स दिखाई दे रहे थे। आज का दिन मेरी लाईफ का सबसे बुरा दिन था। जब से एस.आर.एस. कॉलेज में एडमिशन लिया है तब से कुछ ना कुछ गलत होता जा रहा है। भगवान का लाख शुक्र है टाई और मोजा पहन कर नाचना नहीं पड़ा वरना बुरी हालत हो जाती।

"अब नव तू ध्यान रखना ये चीजें तेरी पॉकेट में हमेशा होनी चाहिए। वरना सीनियर्स को एक और मौका मिल जाएगा हमारी बैंड बजाने का। इस बार तो हम जैसे-तैसे बाल-बाल बचे हैं।" मैं बिस्तर से उठा और नव से झल्लाता हुआ बोला।

"आगे से मैं ध्यान रखूंगा।" नव ने कहा।

अगले दिन जब मैं कॉलेज पहुँचा, तो हमारी रेगिंग की बात पूरी क्लास जान चुकी थी। मुझे नहीं पता ये बात कैसे सभी को पता चली, पर शायद गर्ल्स को पूरी बातें नहीं बताई गयी होंगी।

t.me/HindiNovelsAndComics

डिसेक्शन हॉल

फाइल
मंगलवार 27 अगस्त, 2002

मैं डिसेक्शन हॉल में घुसा। हॉल में केडेवर रखे हुए थे जिनका हमें डिसेक्शन करना था। मैंने सरसराती निगाह से पूरे डिसेक्शन हॉल को देखा, देखने पर मुझे यह डिसेक्शन हॉल कम और लाशों से भरा हुआ कब्रिस्तान ज्यादा लग रहा था। केडेवर से बहुत बुरी स्मैल आ रही थी लेकिन सालभर इस हॉल और केडेवर के बीच रहना हैं, यह सोचते हुए मैंने अपना दिल मजबूत कर लिया। डिसेक्शन हॉल की इंचार्ज रिद्धी मैम और श्वेता मैम हैं, यह दोनों मैम हमें पूरा साल डिसेक्शन के बारे में समझाएंगी। मैं जाकर एक टेबल के पास खड़ा हो गया, जहाँ पहले से ही एक केडेवर रखा हुआ था और उसके पास डिसेक्शन बैग रखा हुआ था जिसमें बॉडी के डिसेक्शन करने के औजार थे। डिसेक्शन ईंस्ट्रूमेंट, स्केल्पल, फोरसेप, ब्लेड, सार्प आदि।

साथ ही डिसेक्शन की टेबल पर केडेवर के साथ डिसेक्शन का सिलेवस भी था जिसे मैंने हाथ में उठाया और ध्यान से पढ़ने लगा, जिसमें डिसेक्शन किस क्रम में करना है, उसकी लिस्ट बनी हुई थी। जिसमें लिखा था, सबसे पहले चेस्ट फिर अपरलिम्स, हार्ट, लोअरलिम्स का डिसेक्शन, इतने डिसेक्शन के बाद टेस्ट होता है जो कि 50 मार्क्स का था जिसके मार्क्स फर्स्ट इयर के रिजल्ट में एड होते हैं।

लोवर लिम्स के डिसेक्शन के बाद थोरेक्स, एवडोमन, स्टोमक, किडनी, ब्रेन। ब्रेन का डिसेक्शन सबसे लास्ट में लिखा था। मैं सिलेवस पढ़ ही रहा था कि मैम हम सभी स्टूडेंट को डिसेक्शन हॉल में किन-किन बातों का खासतौर से ध्यान रखना है और सारे रूल्स समझाने लगी। मैम की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि हमारी क्लास की एक लड़की केडेवर की स्मैल से बेहोश हो गयी। हालाँकि मुझे भी स्मैल सहन नहीं हो पा रही थी लेकिन मैं बेहोश होने की स्थिति में बिल्कुल नहीं था। नाक पर रूमाल लगाए खड़ा था क्योंकि धीरे-धीरे मुझे केडेवर और दवाईयों की स्मैल की आदत डालनी है।

रिद्धी मैम उस लड़की को अपने साथ बाहर लेकर गयी और श्वेता मैम 8-8 स्टूडेंट के ग्रुप बनाने लगी। एक टेबल पर हम 8 स्टूडेंट को डिसेक्शन करना है और डिसेक्शन हॉल में हमें मोबाइल फोन रखने की परमिशन थी। हम केडेवर के फोटो ले सकते थे। मेरे ग्रुप में मैं, अनुष्का, आकांक्षा, आकीर्ति, अदिती, आनंद, आकाश और अभिषेक थे।

अनुष्का, मेरे पास आकर खड़ी हो गयी। “आदित्य मैंने सुना है कल सीनियर्स तुमसे नाराज थे।”

“नहीं अनुष्का ऐसी तो कोई भी बात नहीं है, तुमसे किसने कहा?” मैंने पूछा।

“बस यूँ ही उड़ती-उड़ती खबर मिली है कि कल रात तुम और नवदीप सीनियर्स के रूम पर गये थे और देर रात तक अपने फ्लैट पर आये” अनुष्का ने शक की निगाह से मुझे देखते हुए पूछा।

मैं सोच रहा था कि शायद अनुष्का को शक हो गया है कि मेरी और नवदीप की रेगिंग हुई है, जबकि फर्स्ट इयर वाले स्टूडेंटों में किसी की भी रेगिंग नहीं हुई है। ये मेरे लिए बड़ी

t.me/HindiNovelsAndComics

शर्मनाक बात है। मैं क्या जवाब दूँ अनुष्का को, मैंने मन ही मन सोचा।

"क्या सोच रहे हो आदित्य?" अनुष्का की बात से मेरा ध्यान टूटा।

"अनुष्का मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम लोगों को किसने इतना बढ़ा चढ़ा कर बताया।"

"हाँ, कल हम सीनियर्स के रूम पर गये थे। पढ़ाई कैसे करें? इतना सारा सिलेवस कैसे कम्प्लीट करें? टिप्स लेने गये थे और आधे घंटे में ही फ्लैट पर आ गये।"

"क्या कहा सीनियर्स ने?" अनुष्का ने पूछा।

"सीनियर्स ने हमें ग्रुप में पढ़ने की सलाह दी है। टॉपिक्स को हम आपस में बाँट लें और एक-एक टॉपिक सभी फ्रेंड्स तैयार करें। फिर उस टॉपिक को सभी फ्रेंड्स को समझाएं। ग्रुप में उस टॉपिक पर डिसकस करें, ताकि वो चेप्टर अच्छे से याद हो जाए। चाहे कितना भी रटलो पर एग्जाम टाइम पर याद नहीं रहता, लेकिन जब उस टॉपिक को, उस चेप्टर को हम ग्रूप में आपस में डिसकस करेंगे तो हमेशा के लिए याद भी हो जाएगा और वक्त भी बचेगा।

"सीनियर्स ने तुम्हें नोट्स भी दिए हैं क्या?" अनुष्का ने एकटक देखते हुए पूछा।

"नहीं, अभी तक तो नहीं पर शायद दे सकते हैं," मैंने कंधे उचकाते हुए अपनी बात पूरी की।

"आदित्य, अगर तुम्हें एनाटोमी के नोट्स मिले तो मुझे जरूर देना" अनुष्का गंभीर होकर बोली।

लड़कियाँ अक्सर अपने काम की बात पर सीरियस हो जाया करती हैं। "स्योर, अगर मुझे कोई भी नोट्स मिले तो मैं तुम्हें दे दूँगा। तुम लड़कियाँ भी आपस में ग्रुप में पढाई कर सकती हो," मैंने कहा।

"हाँ आदित्य, लेकिन तुम तो जानते ही हो लड़कियाँ कभी ग्रुप में पढ़ाई नहीं कर सकती।"

"सभी स्टूडेंट ध्यान से सुनें, डिसेक्शन हॉल में कोई बातें नहीं करेगा। अपना ध्यान डिसेक्शन पर लगाओ, ध्यान से देखो मैं कैसे डिसेक्शन कर रही हूँ। मेरे बाद आप लोगों को खुद डिसेक्शन करना है," मैम केडेवर के चेस्ट का डिसेक्शन करने लगी। जिसे मैं बड़े ध्यान से देख रहा था। ये सब मेरे लिए नया था। थोड़ी घबराहाट भी हो रही थी और थोड़ा रोमांचक महसूस कर रहा था।

"सभी स्टूडेंट ने ध्यान से देखा होगा। अब आप सभी चेस्ट का डिसेक्शन करके बताएँ। शुरू में थोड़ी गलती हो सकती है, आप कोशिश करें। आप की गलती सुधारने के लिए मैं यहीं हूँ," श्वेता मैम ने कहा। तब तक रिद्धी मैम भी हॉल में आ चुकी थी।

हम आठों ने थोड़ा झिझकते हुए डिसेक्शन शुरू किया पर जैसे-जैसे बॉडी का डिसेक्शन करते गए, हमें अच्छा लगने लगा और हमने केडेवर को अच्छे से चीर-फाड़ दिया। मैम ने जो बताया वो पूरी तरह तो समझ नहीं आया, थोड़ा बहुत समझ आया लेकिन हम चीर फाड़ से ज्यादा कुछ नहीं कर पाये।

t.me/HindiNovelsAndComics

ड्रिंक

बुधवार **28** अगस्त**, 2002**

आदित्य की फाइल पढ़ते-पढ़ते रात हो चुकी थी और मैं पूरी तरह थक गयी थी, फिर भी मैं आदित्य से बात करना चाहती थी, आदित्य की फाइल पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगा। आदित्य से बात करने से पहले मुझे एक बार दादी के पास जाना चाहिए, कहीं जाग तो नहीं रही। मैं उठकर दादी के रूम में चली गयी। सब गहरी नींद में सो चुके थे। दादी को देखने के बाद मैंने आदित्य का मोबाइल नं डायल किया। दो बार फोन करने के बाद भी आदित्य ने फोन नहीं उठाया, शायद वह सो चुका होगा। "बस ये लास्ट कॉल करूँगी, अगर आदित्य ने फोन रिसीव किया तो ठीक वरना कल बात करूंगी।"

आदित्य ने फोन उठा लिया।

"हाय ए2" मैंने कहा।

"अच्छा तो इसका मतलब तुमने फाइल पढ़ ली है, तभी मुझे ए2 कह कर चिढ़ा रही हो," आदित्य ने कहा।

"हाँ, अभी-अभी पढ़ी है, बहुत अच्छा लिखा है तुमने, पर कुछ पूछना भी चाहती हूँ।"

"हाँ तो पूछो ना," आदित्य ने कहा।

"प्रेगनेंसी किट... ये सब मेडिकल कॉलेज में ऐसा होता है क्या?"

"ओह अब मैं क्या कहूँ माही, सारी बातें तुम जान ही गयी हो, पर माही भगवान का लाख-लाख शुक्र है हमें नाचना नहीं पड़ा। ये रेगिंग मैं अपनी पूरी जिंदगी में नहीं भुला पाऊँगा," आदित्य ने लड़खड़ाती जुबान से कहा।

"और क्या-क्या करना पड़ता है सीनियर्स के लिए?" मैंने पूछा।

"सीनियर्स जो भी बोलें वो करना पड़ता है। कई बार हमें रात में व्हिस्की की बॉटल्स लेकर जाना पड़ता है। ज्यादातर जब सीनियर्स के एग्जाम खत्म होते हैं तो उनकी ड्रिंक पार्टी होती है।" आदित्य बहुत खुश होकर मुझे सारी बातें बता रहा था।

मैं ये सब सुनने के बिल्कुल भी मूड में नहीं हूँ। या ये कहो की व्हिस्की के टॉपिक पर बात करने में मैं जरा भी इन्ट्रेस्टेड नहीं थी, लेकिन फिर भी मैंने पूछ लिया "तुम कितनी बार बॉस के लिए व्हिस्की लेकर गए हो?"

मैंने अपनी बात खत्म की ही थी कि सामने फोन में से कुछ अजीब-सी आवाज आयी कि जैसे कुछ सामान गिर गया हो।

"आदित्य तुम ठीक हो?" मैंने पूछा। सामने से कोई जवाब नहीं मिला। मैंने एक बार फिर पूछा "आदित्य क्या हुआ है? और ये आवाज कैसी थी तुम ठीक तो हो?"

उधर से आदित्य ने भारी आवाज में जवाब दिया "मैं ठीक हूँ।"

आज आदित्य की आवाज कुछ अजीब सी लग रही थी। "तो फिर आदित्य ये आवाज कैसी थी?"

"कुछ नहीं माही, ये डबलबैट्री अपने रूम में कम और मेरे रूम में ज्यादा टिकता है।"

"क्यों क्या हुआ और डबलबैट्री मतलब?"

"डबलबैट्री हमारा सोनू है, आज बोन्स मिली थी, ताकि हम उन बोन्स पर स्टडी कर

t.me/HindiNovelsAndComics

सकें। 28 बोन्स मिली और उन पर फाइल बनाकर ले जाना है तो सोनू का बैग रखा था।"

"मैं तुमसे क्या पूछ रही हूँ और तुम क्या जवाब दे रहे हो?" मैंने झल्लाते हुए कहा-अब मेरा मन कर रहा है कि फोन रख दूँ।

"सॉरी माही, मैं कह तो रहा हूँ डबलबैट्री ने बोन्स का बैग मेरे रूम में रख दिया, और अंधेरे में उसी बैग से टकराकर गिर गया," आदित्य ने लड़खड़ाते हुए लफ्जों में अपनी बात पूरी की।

"तुम्हें कहीं चोट तो नहीं आयी?"

"नहीं, मैं ठीक हूँ।"

"तुम कहीं से आ रहो हो?"

"हाँ, मैं अभी सीनियर्स के पास गया था वहीं से आ रहा हूँ।"

"इतनी रात को जाने की क्या जरूरत आ पड़ी," मैंने हक जमाते हुए कहा, पर मैं अगले ही पल संभल गयी। क्योंकि अभी मैं हक जताने की स्थिति में नहीं हूँ। "खैर छोड़ो, ये बताओ आज तुम्हारी आवाज को क्या हुआ?"

"आज सीनियर्स के पास गया था। उनके लिए व्हिस्की लेकर तो थोड़ी सी मैंने भी पीली, शायद इसलिए तुम्हें मेरी आवाज बदली-बदली लग रही होगी। तुम 2 मिनट फोन पर ही रूको, फोन मत काटना, मैं मुँह धोकर आता हूँ। प्लीज फोन मत काटना, आज मेरे पास बैलेंस नहीं है। मैं फोन नहीं कर पाऊंगा।"

"नहीं, मुँह धोने की कोई जरूरत नहीं," अपनी बात कहते-कहते मैं चुप हो गयी। एक शब्द भी आगे कहना मुश्किल हो गया, मैं आदित्य की ऐसी हालत नहीं देख सकती, इस प्रोफेशन में होकर खुद के साथ इतनी लापरवाही क्या ये ठीक है?

मैं इतने कम दिनों में ही आदित्य के बारे में सोचने लगी हूँ। आदित्य को अपने सबसे करीब महसूस करने लगी हूँ और सबसे बड़ी मजे की बात तो यह है कि हम एक-दूसरे से मिले भी नहीं हैं। मिलना तो दूर हमने एक-दूसरे की फोटो तक नहीं देखी है।

तो मेरी प्यारी डायरी तुम ही बताओ, क्या किसी को बिना मिले, बिना देखे भी हम उसके लिए अपने दिल में प्यार महसूस करने लगे? खैर जो भी है मेरे दिल में आदित्य के लिए कुछ है जो महसूस करती हूँ। आदित्य क्या सोचता है ये मुझे नहीं पता।

"देखा माही, मैंने 2 मिनट से ज्यादा वक्त नहीं लगाया। मैं अब मुँह धोकर ही नहीं लेमन जूस भी पीकर आया हूँ। अब पूरा तो नहीं, पर काफी हद तक नशा उतर चुका है।"

"हऽऽम।"

"तुम क्या सोच रही हो, तुम चुप क्यों हो? कुछ बोलो तो सही" आदित्य ने कहा। "ओह नो ये क्या है?" आदित्य धीरे से बड़बड़ाया।

"क्या हुआ आदित्य?" मैंने चौंकते हुए पूछा।

"माही, एक मिनट होल्ड करो।"

"आखिर बताओगे भी हुआ क्या?"

"आदित्य ने कोई जवाब नहीं दिया फोन पर अजीब आवाज आने लगी जैसे आदित्य कुछ ढूँढ रहा हो।"

"बोलो क्या हुआ?" मैंने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

“माही” 30 सेकेण्ड के बाद आदित्य ने जवाब दिया। “जब मैं बोन्स से टकराकर गिरा तब सिर में हल्की-सी चोट लग गयी। थोड़ा खून आ गया सिर से, लेकिन मैंने कॉटन लगा लिया है और खून भी बंद हो गया है सब ठीक है।”

“सब ठीक है?”

“हाँ।”

“सच कह रहे हो?”

“हाँ, सब ठीक है,” आदित्य ने हँसते हुए कहा।

“हऽऽम, तुम कब से ड्रिंक कर रहे हो?”

“करीब एक साल से ज्यादा हो गया, जब मैं कोटा में पी.एम.टी. की तैयारी कर रहा था।”

“कितनी बार ड्रिंक कर चुके हो?” मैंने अपने उसी उदासीन लहजे में पूछा।

“पाँच या छः बार दोस्तों का साथ देने के लिए।”

“ओह! दोस्तों का साथ देने के लिए,” मैंने रूखी आवाज में कहा।

“माही मैंने मयखाने, शराब के बारे में नोवल्स, कविताओं में पढ़ा, तो सोचा पीने में क्या बुराई है और वाकई ड्रिंक करके बहुत अच्छा फील होता है। डॉक्टर लोग पीते हैं, यह नॉर्मल है। अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?”

“आदित्य यह सेहत के लिए अच्छी नहीं होती, मैं विश्वास नहीं कर सकती तुम कभी ड्रिंक कर सकते हो। ड्रिंक करके लोग गालियाँ बकते हैं, नालियों में पड़े रहते हैं। क्या यह नॉर्मल है?” मैंने कहा।

“यही तो तुम गलत कह रही हो, ड्रिंक करना कोई बुरी बात नहीं है। बस लिमिट में करो। अगर थोड़ा ही ड्रिंक करो तो यह एक अच्छे टॉनिक की तरह काम करती है। ड्रिंक से सेहत बनती है अब तुम एक लड़की हो, इसलिए इसे बुरा मानती हो और शायद मैं तुम्हें समझा ना पाऊँ।”

“हऽऽम।”

“अच्छा माही तुम बताओ, आज कैसा रहा तुम्हारा कॉलेज?” आदित्य ने टॉपिक चेंज करने के इरादे से कहा।

“मुझे कोई बात नहीं करनी है।”

“तुम लड़कियाँ भी ना, तुम्हें समझना नामुमकिन है, जो भी तुम कहना चाहती हो साफ-साफ कहो।”

“तुम ड्रिंक छोड़ क्यों नहीं देते... वैसे रहने दो, तुम्हें जो करना है, करो। बस मुझसे बात करना बंद कर दो। मैं तुमसे बात करना नहीं चाहती।”

“ओह गॉड! अब इतनी-सी बात के लिए मेरे सर पर इतना बड़ा बम ब्लास्ट मत करो।”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मैं चुप थी।

“अच्छा मैं वादा नहीं कर सकता पर मैं पूरी कोशिश करूंगा। धीरे-धीरे कम करने में वक्त लगेगा।”

“वादा क्यों नहीं कर सकते?” मैंने पूछा।

“क्योंकि अगर मैंने अपना वादा तोड़ दिया तो मैं तुमसे बात करने की हिम्मत नहीं

t.me/HindiNovelsAndComics

जुटा पाऊँगा, लेकिन मैं कह तो रहा हूँ पूरी कोशिश करूंगा,"

"ठीक है।"

"अब तो बात करोगी ना?"

"हाँ बिल्कुल।"

"तुम तो रूठी हुई खतरनाक बीवी के रोल में आ गयी थी। वैसे माही लड़कियों की सबसे अच्छी बात ये होती है कि वो अपनी सारी बातें, चाहे जैसे भी हो मनवा ही लेती हैं।"

"हाँ, ये बात तो है" मैंने बड़े गर्व से कहा। जैसे मुझे बड़े अवॉर्ड से सम्मानित किया गया हो।

"मेरी छोटी बहन भी मम्मी से रुठकर, रोकर या कभी-कभी चापलूसी से, कैसे भी हो अपनी बात मनवा ही लेती है और हम दोनों भाई कभी भी अपनी बात नहीं मनवा पाते।"

"अब तुम कुछ भी समझो," मैंने कहा।

"मैं जो फाइल अपनी प्रोफाइल पर डालता हूँ क्या तुम पढ़ती हो?"

"हाँ, पढ़ती भी हूँ और लिखती भी हूँ।"

"क्या मतलब लिखती हो, मैं समझा नहीं," आदित्य ने कहा।

"जो फाइल तुम प्रोफाइल पर लिखते हो उसको मैं अपनी डायरी में कॉपी करती हूँ।"

"क्या! तुम डायरी भी लिखती हो?"

"कुछ ही समय पहले लिखना शुरू किया है। यह डायरी दादू ने मुझे मेरे बर्थ-डे गिफ्ट में दी थी," मैंने कहा।

"यह तो अच्छी बात है, अब जो मैं फाइल लिखूँगा वो मैं और भी अच्छे से लिखूँगा, ताकि वो तुम्हारी डायरी का एक हिस्सा बन सके।"

"जानते हो, मैंने डायरी को क्या नाम दिया है?" मैंने पूछा।

"क्या नाम दिया है।"

"डायरी ऑफ मेडीको एण्ड लॉ स्टूडेंट।"

"क्या!" आदित्य ने चौंकते हुए कहा।

"क्यों नाम अच्छा नहीं लगा?"

"ऐसी बात नहीं है, पर यही नाम क्यों रखा? कोई खास वजह।"

"वजह तो बहुत खास है। जब से तुम मेरी जिंदगी में आये हो तब से मैंने लिखना शुरू किया हैं। तुम मेडिकल स्टूडेंट और मैं लॉ स्टूडेंट।"

"यह तो बहुत अच्छा नाम है। ये ख्याल तुम्हारे दिमाग में कैसे आया?"

"मुझे तुम्हारे वारे में लिखना अच्छा लगता है।"

"और क्या-क्या लिखती हो तुम?" आदित्य ने पूछा।

"सिर्फ तुम्हारे बारे में, हम जो भी बातें करते हैं, जो भी तुम फाइल लिखते हें, वो सब कुछ।"

"मुझे तुम्हारा शुक्रगुजार होना चाहिए तुम मेरे बारे में लिखती हो, आज जो हमारे बीच बातें हुई क्या तुम वो भी लिखोगी?"

"हाँ, जरूर लिखूँगी।"

t.me/HindiNovelsAndComics

“थैंक्यू माही।”
“इसमें शुक्रिया अदा करने वाली कोई बात नहीं है।”
“क्या मैं यह डायरी पढ़ सकता हूँ?”
“हाँ, पढ़ सकते हो और जब मैं तुमसे मिलूंगी तो यही डायरी मैं तुम्हें तोहफे में दूंगी।”
“मैं भी उस दिन का बड़ी बेसब्री से इंतजार करूंगा जब मैं तुमसे मिलूंगा।”
“अब बहुत रात हो चुकी है, हमें सो जाना चाहिए,” मैंने कहा।
“बोन्ने नूइट माही।”
“क्या कहा तुमने?” मैंने चौकते हुए पूछा।
“यह फ्रेंच लैंग्वेज का शब्द है, जिसका मतलब है शुभ रात्रि।”
“फिर ठीक है मुझक लगा शायद तुम अभी भी नशे में हो,” मैंने हँसते हुए कहा।
“ते अमो माही।”
क्या कहा? क्या इसका मतलब भी गुड़ नाइट होता है?”
“नहीं, वक्त आने पर मतलब समझ जाओगी।”
“पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो?” मैंने कहा।
“एडवोकेट साहिबा, यह पहेलियाँ नहीं, ये तो मेरे दिल का हाल है, अब हमें सो जाना चाहिए।”

t.me/HindiNovelsAndComics

सोनू का पोपट

फाइल
शुक्रवार **20** सितम्बर**, 2002**

"मुझे शुभ के दोनों रूममेट के मोबाइल नंबर चाहिए।" सोनू ने मेरे रूम में आकर कहा।

मैं थोडी देर सोनू को ही देखता रहा, आखिर ये मोबाइल नं. क्यों माँग रहा है।

"आदित्य तू सोच रहा होगा, मैं उन दोनों खूसटो का नं. क्यों माँग रहा हूँ?" सोनू ने कहा, सोनू को देखकर इस बात का साफ-साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि सोनू के दिमाग में इस वक्त बहुत खूफिया विचार चल रहे हैं। इस वक्त सोनू हमारे रूम मे आकर क्या भूचाल मचा दे, कुछ कहा नहीं जा सकता। इससे अच्छा मैंने चुप रहना बेहतर समझा।

"मुझे नहीं पता," मैंने कंधे उचकाते हुए कहा और एनाटॉमी की बुक पढ़ने लगा।

"अच्छा जो भी मैं करने वाला हूँ उसमें क्या तू मेरा साथ देगा?" सोनू ने मेरे पास बैड पर आकर बैठते हुए कहा और मेरे हाथ से एनाटॉमी की बुक छीन ली।

"देख सोनू मुझे पढ़ने दे।" मुझे सोनू के इस तरह के व्यवहार से थोड़ा बुरा महसूस हुआ। मुझे ये बिल्कुल भी पंसद नहीं कि जब मैं पढ़ रहा हूँ तो कोई मेरी बुक मेरे हाथ से छीन ले और वैसे भी सोनू तो मेरा रूममेट भी नहीं। ये डबलबैट्री अपने रूम से ज्यादा मेरे रूम में ही बना रहता है।

"आदित्य बता ना, क्या तू मेरा साथ देगा?"

मेरे जवाब देने से पहले नव ने हमारे बीच आकर कहा, "हम तेरा साथ नहीं देंगे। तू अपने रूम में जा, तुम्हारी बातों से मुझे डिस्टर्व हो रहा है" नव ने खीजते हुए कहा....!

मुझे पूरा यकीन है, सोनू अपनी कभी खत्म ना होने वाली बकवास बंद नहीं कर सकता....। लगातार सोनू की बकवास भरी बातों की बमवारी हम पर होने लगी।

"चिंतामणि तू कुछ मत बोल, मैं आदित्य से पूछ रहा हूँ।" सोनू ने कहा।

"देख डबल बैट्री तू मुझे चिंतामणि कहके नहीं बुलाएगा।"

नव और सोनू आपस में ही भिड़ गये। नव दिखने में तो स्ट्रॉग नहीं लगता है लेकिन नव ने सोनू को धक्का दे दिया।

मैं दोनों को बचाने के लिए बैड से उठा, लेकिन उससे पहले सोनू का पैर स्लिप हो गया, नव और सोनू एक दूसरे के ऊपर धड़ाम से गिर पड़े। दोनों के गिरने की आवाज से प्रताप मेरे रूम में दौड़ा चला आया जैसे हमारे रूम में कोई बॉम फट गया हो। दोनों जाँबाज बहादुरों की लड़ाई देखकर, और उन दोनों की जमीन पर गिरी पड़ी हालत देखकर मैं और प्रताप अपनी हँसी कंट्रोल नहीं कर पाए और ठहाके लगाकर हँसने लगे।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई के बाद हम चारों, मैं डबलबैट्री, चिंतामणि और प्रताप बैड पर आकर बैठ गये।

"देखो मेरे पास एक मास्टर प्लान है," डबलबैट्री ने कहना शुरू किया और अपनी डबलबैट्री (चश्मा) से बाहर झाँकते हुए हम तीनों की तरफ बारी-बारी से देखने लगा।

"क्या प्लान है?" मैंने पूछा।

नव और प्रताप सोनू को ध्यान से सुन रहे थे। वैसे नव हर टॉपिक पर अपनी राय देता

t.me/HindiNovelsAndComics

है लेकिन प्रताप हमेशा साइलेंट मोड पर ही रहता है। बोलता बहुत कम है केवल सब को सुनता रहता है। शायद इसलिए सोनू इस साइलेंट मोड के साथ कम रहता है और मौका मिलते ही मेरे रूम में भूत की तरह कूद पड़ता है।

"आदित्य तू अपना मोबाइल दे, फिर देख मैं क्या करता हूँ।" सोनू ने अपनी आँखे बड़ी करते हुए कहा।

"मोबाइल उधर चार्ज पर लगा है, निकाल ले" मैंने मोबाइल की तरफ इशारा करते हुए कहा।

मेरा मोबाइल लेकर सोनू किसी को फोन लगाने लगा।

"तू बताएगा, तू क्या करने वाला है?" मैंने पूछा, पर सोनू ने जल्दी मेरा हाथ पकड़ लिया और मुँह पर उंगली रखकर हम सभी को शांत हो जाने के लिए कहा।

"हैलो!" सामने से भी हैलो का रिस्पॉन्स मिला, जिसे हम साफ-साफ सुन पा रहे थे।

"ऐ बास्टर्ड, तुम जूनियर्स लोग हम सीनियर्स की रेस्पेक्ट नहीं कर सकते।" सोनू गुर्राते हुए बोला।

"सॉरी बॉस।"

"देख शुभ का रूममेट मुझे बॉस बोल रहा है और माफ़ी भी माँग रहा है," सोनू ने मोबाइल पर हाथ रखते हुए कहा और अपने दाँत दिखाने लगा।

सोनू 15 मिनट तक फोन पर गाली देता रहा और हमें समझते हुए देर नहीं लगी कि सोनू सीनियर बनकर शुभ के रूममेट से मजे ले रहा है। "हमें इससे कब छुटकारा मिलेगा?" नवदीप मेरे कान के पास आकर धीरे से फुसफुसाया।

सोनू नव की इस हरकत से उसे त्यौंरिया चढ़ाकर देखने लगा।

"तो ब्लडी जूनियर्स तुम और तुम्हारे रूममेट अभी मुझे सीनियर्स हॉस्टल के पीछे आकर मिलो और व्हिस्की की 4 बोटल भी लेकर आना" सोनू ने झट से फोन रख दिया। सोनू अपनी ही तारीफों के पुल बाँधते हुए बोला, "देखा शुभ के रूम मेट कुछ ज्यादा ही एटीट्यूड दिखाते हैं उनकी हालत तो अब मैं टाइट करूँगा। प्रताप जाकर देखकर आ शुभ के रूम में इस वक्त क्या चल रहा है?" सोनू ने उंगली से प्रताप की तरफ इशारा करते हुए कहा।

एक मिनट में प्रताप आया और हम सब प्रताप खबरी की न्यूज का इंतजार कर रहे थे।

"यार शुभ के रूम में तो सभी आराम से बैठकर बातें कर रहे हैं कोई भी परेशान नहीं लग रहा," प्रताप ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा।

"तूने सही से नहीं देखा होगा। वो सब टेंशन में होंगे। सीनियर्स के फोन की ही बात हो रही होगी, तो बताओ कौन-कौन मेरे साथ सीनियर्स हॉस्टल के पीछे आ रहा है?" सोनू अपना चश्मा साफ करते हुए बोला।

मुझे सोनू के प्लान में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं थी। मुझे तो ये आइडिया ही खराब लग रहा था। मैं इस वक्त माही से बात करने के लिए बेताव था।

"इनसे व्हिस्की की बोटल लेकर, उनका बकरा बनाएँगे और कल कॉलेज की पहली ब्रेकिंग न्यूज होगी 'शुभ के रूममेट का बकरा'," सोनू दाँत दिखाते हुए हँसने लगा।

"मैं, सीनियर्स हॉस्टल के पास नहीं जाऊँगा। वैसे भी हम सीनियर्स के चक्कर में एक बार

t.me/HindiNovelsAndComics

फंस चुके हैं अगर दोबारा उन्होंने हमें हॉस्टल के आस-पास भी देख लिया तो इस बार पता नहीं जेब में क्या रखने को दे दें।" मैंने कहा।

"मैं भी नहीं जाऊँगा और क्या बे, तेरा खुदखुशी करने का मन है क्या...। तू खुद की खुशी देख ले," नव ने अपनी भौहें नचाते हुए कहा।

"मैं भी नहीं जाऊँगा," प्रताप ने हमारा फुल सपोर्ट किया।

"ओह! तुम लोगों की अक्ल क्या घास चरने गयी है।" सोनू खीजते हुए देखने लगा, "हम सीनियर्स हॉस्टल तो जा रहे हैं, लेकिन सीनियर्स से थोड़े ना मिलने जा रहे हैं। हम तो हॉस्टल के पीछे रहेंगे। कोई हमें देखेगा भी नहीं, वहाँ हम सीनियर्स से नहीं बल्कि शुभ के रूममेट से मिलेंगे।"

हम तीनों ने सोनू की बात पर कोई रिस्पोंस नहीं दिया। हम इस तरह से रियेक्ट कर रहे थे जैसे कि हमने कुछ सुना ही नहीं और अपने-अपने कामों में लग गये।

"तो डरपोकों, तुम लोग मुझसे बहुत दूर खड़े रहना, सिर्फ इतना ही दूर कि दूर से मुझे और शुभ के रूममेट को देख सको। तुम भी उनके मजे लो यार।"

"ठीक है, जैसा तुम कहो।"

"एक मिनट किसी का फोन आ रहा है," सोनू ने कहा।

"हैलो, कौन बोल रहे हो?" फोन पर सामने से आवाज आयी।

"मैं सोनू बोल रहा हूँ आप कौन?" सोनू ने कहा।

"हैलो?"

"किसका फोन था?" नव ने पूछा ।

"पता नहीं शायद रॉग नं॰ है और मेरा नाम सुनते ही फोन डिस्कनेक्ट कर दिया। चलो मैं तो जा रहा हूँ सीनियर्स हॉस्टल, तुम भी मेरे पीछे-पीछे आ जाओ" सोनू आँख मारते हुए बोला।

हम सभी पेंट टी-शर्ट पहन कर जल्दी रूम से निकल दिये...

थोड़ी दूर पहुँचे ही थे कि सोनू अजीब हरकतें करने लगा।

"यूँ जल बिन मछली की तरह फडफडाना बंद कर," नव ने सोनू की बचकानी हरकत पर खीजते हुए कहा।

"सेनू कुपोषित जैसी शक्ल क्यों बना रहा है। आखिर बात क्या है?" मैंने कहा।

"अबे क्या कर रहा है? सही से चल, यहाँ बहुत लोग हैं, सब देख रहे हैं। तू खुजली के लिये कुछ करता क्यों नहीं?" प्रताप ने झुंझलाकर कहा।

"ये खुजली नहीं है," सोनू ने पेंट पकडते हुए कहा।

"तू ये क्या कर रहा है?"

"लगता है पेंट मे कुछ है, जो चल रहा है।" सोनू ने कहा।

"क्या कह रहा है तू?" मैने चौंकते हुए पूछा।

"मैं सही कह रहा हूँ पेंट में कुछ है।"

"यहाँ तो बहुत भीड़ है, तेरी पेंट भी नहीं उतार सकते," नव ने चारों तरफ आँखे फाड़ कर देखते हुए कहा।

"देख सामने एक गली है वही चलते हैं," मैंने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

“क्या!” इस समय सोनू की शक्ल पर 12 बज चुके थे।

सोनू पेंट पकडकर मधुमक्खी के डंक की तरह फड़फड़ा रहा था।

“देख सोनू गली और किस्मत कब कहाँ खुल जाये कह नहीं सकते, इसलिए बेहतर यही होगा गली में चला जाये।”

गली में जाकर देखा तो सोनू की पेंट में से एक छिपकली निकली जिसे देखकर सोनू लगभग बेहोश होने की हालत में था। सोनू के चहरे की दशा उसके हाले दिल की कहानी को बयान कर रही थी। कुछ देर में सोनू नॉर्मल हो पाया।

“सोनू मुझे आज कुछ हालात ठीक नहीं लग रहे हैं, अब वापस रूम पर चलते है,” नव ने कहा।

“नव तू सही कह रहा है, अब हमें चलना चाहिये,” प्रताप ने कहा।

“इतनी-सी बात के लिये मैं अपना मजा किरकिरा नहीं कर सकता। अब मैं एकदम ठीक हूँ। जिस काम के लिये आये हैं वो तो करके ही जायेंगे। मैं ऐसा मौका हाथ से नहीं जाने दे सकता। मुझमे इतना सब्र नहीं है, ना जाने ऐसा मौका फिर कब हाथ लगे? तुम देखना, मैं सीनियर की नाक के नीचे से वोदका ले आऊँगा” सोनू ने कहा।

“पकडे गये तो मारे जायेंगे,” नव ने कहा।

“क्या तुम ब्लैकमेल करना बंद करोगे?” सोनू ने खिसियाते हुए कहा।

थोड़ी ही देर में हम सभी सीनियर्स हॉस्टल के काफी करीब पहुँच चुके थे। मैं और नव सीनियर्स के नाम से पहले ही बहुत डरे हुए थे इसलिए वहां जाना तो दूर हमने सीनियर्स हॉस्टल की बाउन्ड्री तक क्रॉस नहीं की और पेड़ के पीछे जाकर छिप गये। जहाँ से सोनू साफ-साफ दिखाई दे रहा था। हम एक रोमांचक दृश्य देखने के लिए पूरी तरह से तैयार थे और सोनू पर हम अपनी आँखे गड़ाए हुए था।

“आदित्य, तेरे पास शुभ के रूममेट का मोबाइल नं. कहाँ से आया?” नव ने पूछा।

“मेरे पास तो नहीं है वो लोग किसी से बात ही नहीं करते हैं, इसलिए मुझे आज तक नं॰ नहीं मिला,” मैंने कहा।

“क्या!” प्रताप ने चौंकते हुए कहा।

“मुझे भी नहीं पता क्या कह रहा है तू? मेरा मतलब मेरे पास तो उनके मोबाइल नं॰ है ही नहीं।”

मुझे समझते हुए देर नहीं लगी कुछ तो गड़बड़ है।

“तो?”

“तो फिर सोनू ने किससे बात की?” नव ने पूछा। नव और प्रताप मुझे आश्चर्य से देखने लगे।

“मुझे ऐसे क्यों घूर रहे हो?” मैंने कहा।

“अपना मोबाइल चेक कर,” नव ने कहा।

“हाँ, अभी चेक करता हूँ, ओह नो! ये सोनू ने किसको फोन कर दिया” मैंने कहा।

“सोनू ने किसको फोन किया?” नव ने कहा और मेरे हाथ से मोबाइल छीनकर मोबाइल नं॰ देखने लगा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"आदित्य, प्रताप ये नं. तो रितेन बॉस का है" नवदीप चीखते हुए बोला।

"हाँ, मैंने कैपीटल लेटर में आर.एस. से ये नं॰ इसलिए सेव किया, ताकि मुझे याद रहे कि ये न॰ बॉस का है।"

"अब हमें क्या करना चाहिए?" प्रताप ने पागलों की तरह चीखते हुए कहा।

"क्या करें सोनू तो हमेशा जल्दी में ही रहता है। एक बार मुझसे पूछ तो लेता और मुझे भी याद नहीं रहा कि शुभ और शुभ के किसी भी रूममेट का मोबाइल नं. मेरे पास नहीं है।" मैं अपने आप से बडबड़ाता रहा और सांस लेने की कोशिश की। मैं ऐसे जता रहा था जैसे कि मैं कुछ सोच रहा हूँ जिससे सोनू को बचाया जा सके, पर दरअसल मेरे दिमाग में कोई आइडिया नहीं आ रहा था।

"मैं अभी भाग कर सोनू को बुलाकर लाता हूँ" प्रताप ने चुटकी बजाते हुए कहा। हमने सोनू की तरफ देखा, हम सोनू को बुलाते उससे पहले रितेन बॉस और उसके दोस्त भूत की तरह सोनू के सामने आकर खड़े हो गये। जब तक हम कुछ करते तब तक सोनू नाम का मैसेज सेन्ड हो चुका था, जो चाह कर भी वापस नहीं आ सकता... हम चाहकर भी सोनू की मदद नहीं कर पाये।

सोनू का फेस तो हम नहीं देख पा रहे थे, बॉस के आने पर सोनू अपनी जगह से हिला तक नहीं, वहाँ से सिर्फ उसकी पीठ दिखाई दे रही थी। हम अंदाजा लगा सकते थे कि सोनू की इस वक्त क्या हालत हो रही होगी क्योंकि मैं इस हालत से बहुत पहले वाकिफ हो चुका हूँ। रितेन बॉस सोनू को कॉलर से घसीटते हुए हॉस्टल की बिल्डिंग तक ले गये। अगर हम सोनू को बचाने भी जाते तो शेर के चंगुल में हम तीनों बली चढ़ा दिये जाते। ऐसे में दोस्त के लिये भावनाओं से काम ना लेते हुए हम तीनों ने दिमाग से काम लेना ही बेहतर समझा और हम तीनों, (मैं, प्रताप और नवदीप) ने वहीं से दौड़ लगाना शुरू किया, रूम पर पहुँचने तक हम बिना रूके दौड़ लगाते रहे। रूम पर पहुँच कर ही हमने चैन की सांस ली।

अब मैं ये तो नहीं बता सकता कि सोनू के साथ क्या हो रहा होगा? और ना सोनू हमें बताएगा। नव ने सीनियर्स को सिर्फ गुड मोर्निंग विश नहीं किया, उसके लिए बॉस ने हमारी ये हालत की। तो फिर सोनू ने तो उनको गालियाँ दी थी और ना जाने क्या अनाप-सनाप बकवास की। तो माही, तुम खुद ही अंदाजा लगा सकती हो कि सीनियर्स सोनू को रूम पर ले जाकर उसके साथ क्या करेंगे, शायद वही जो मेरे और नव के साथ हुआ था, या उससे भी बदत्तर। मेरी और नव की तो रेगिंग हुई थी लेकिन सोनू ने जानबूझ कर अपनी रेगिंग को निमंत्रण दे दिया।

जब सोनू को मेरे और नव की रेगिंग की बात पता चली तब से ही वो मेरा और नव का मजाक बनाने लगता। उसे मेरी और नव की हालत का अंदाजा नहीं था और हो भी कैसे? कहते हैं ना जिस पर बीतती है उसको ही पता चलता है। मैं ये बिल्कुल भी नहीं चाहता था कि हमारी जैसी हालत किसी और की भी हो, लेकिन जाने अनजाने सोनू फंस गया।

"21 तोपों की सलामी सोनू के लिये तो बनती है।" प्रताप ने लगभग हाँफते हुए कहा... आखिर सोनू आज शहीद जो हुआ है।

रविवार **22** सितम्बर**, 2002**

t.me/HindiNovelsAndComics

मैं समय काटने के लिए टी.वी. चैनल बदलने लगी और धड़ाम से सोफे पर जाकर पसर गयी, जहाँ पास में ही दादू-दादी पहले से कुछ बातें कर रहे थे। सोफे पर बैठते ही यह समझने में देर नहीं लगी। "दादू क्या कह रहे हैं?" मैंने दादी से पुछा। दादू ने मेरे सामने भी बात करना जारी रखा। पापा ने दादू से कहा है कि वो घर आना चाहते हैं, मुझसे मिलना चाहते हैं पापा के बारे में सुनते ही बचपन का वो दिन, और माँ की हालत मेरी आँखों के सामने घूमने लगी। भावनाओं का यह विस्फोट जिससे मेरा मन बहुत भर गया, एक अजीब-सी बेचैनी हमारे वजूद को अपनी गिरफ्त में लेने लगी।

हम तीनों एक दम चुप थे, कुछ होने की आशंका से ही मैं अंदर तक सिहर उठी, पलको ने तो जैसे झपकना ही बंद कर दिया और एकटक मैं फर्श को घूरने लगी, अजीब सी बेचैनी ने मेरे दिल और दिमाग पर अपना कब्जा जमा लिया। खुद को शांत करने की नाकाम कोशिश करने लगी। वहाँ से उठकर अपने रूम में आ गयी और दिल खोलकर जोर-जोर से रोने लगी। मेरी माँ के साथ जो हुआ वो मेरे लिए भुला पाना मुश्किल था। कुछ देर बाद मैं चुप हुई और कम्प्यूटर पर जाकर आदित्य की फाइल देखने लगी जहाँ कोई नई फाइल नहीं थी। मैं आदित्य के बारे में सोचने लगी, कुछ ही देर में नींद ने पूरी तरह मुझे अपनी गिरफ्त में ले लिया।

बुधवार **25** सितम्बर**, 2002**

"क्या हुआ माही? जब से फोन पर बात कर रहा हूँ तब से तुम छींकती जा रही हो, लगता है ज्यादा सर्दी हो गयी है," आदित्य ने कहा।

"हम्म, पहली बार इतना जुखाम हो गया है। दो दिन से दवाई ले रही हूँ लेकिन कोई फायदा नहीं है। सर्दी जुखाम जाने का नाम ही नहीं लेता" मैंने कहा।

"तो माही, तुम एक काम करो," आदित्य ने कहा।

"कौन सा काम?"

"तुम एकदम ठंडी कोल्ड्रिंक पियो या आइसक्रीम खा लो," आदित्य ने कहा।

आदित्य की बातों से ऐसा बिल्कुल भी नहीं लगा कि आदित्य मजाक कर रहा है।

"आदित्य, क्या कह रहे हो तुम?" मैंने चौंकते हुए पूछा।

"मैं सही कह रहा हूँ, एक बार ट्राय तो करो। ये एक रसियन थैरेपी है जैसे जहर-जहर को काटता है यह भी उसी तरह काम करेगी।" आदित्य ने गंभीरता से कहा। जिससे यह साफ-साफ पता चलता है कि आदित्य मजाक के मूड में बिल्कुल नहीं है। सीरियसली कह रहा है।

लेकिन यह बात हजम कर पाना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल था। "मुझे लगता है डॉ॰ साहब आप अपने पेसेंट का इलाज इसी तरह से करने वाले हैं। जुखाम होगा तो पेसेंट को दवाई की जगह कोल्ड्रिंक और बुखार हुआ तो हॉट कॉफी की सलाह दोगे, मैं सही कह रही हूँ ना," मैंने हँसते हुए कहा।

"अरे नहीं माही ये तो अपना फण्डा है। मैं अपने ऊपर ट्राय करता हूँ। मुझे तो बहुत फायदा होता है और रही बात पेसेंट की, तो अगर मैं अपने पेसेंट का इलाज इस तरह करूँगा, तो पेसेंट भाग जाएँगे और कहेंगे ये साला सनकी डॉ. है," आदित्य ने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

आदित्य अपनी बात पूरी खत्म भी नहीं कर पाया था कि किसीने आकर हमारी बातों को बीच में ही रोक दिया, “आदित्य मुझे तुझसे कुछ बात करनी है,” सोनू ने कहा।

“माही एक मिनट होल्ड करना।“

“अब क्या हुआ? तुम लोगों की मीटिंग खत्म नहीं हुई क्या अभी, और मैं कह भी चुका हूँ, तुम सबको जहाँ भी जाने का प्रोग्राम है, नहारगढ़, जयगढ़, आमेर कहीं भी, तुम लोग जहाँ कहो, मैं तैयार हूँ, अभी माही से बात कर रहा हूँ। मुझे डिस्टर्ब मत करो।” आदित्य ने कहा।

“नहीं, यह बात नहीं है। वो हम डिसाइड कर चुके हैं कि आने वाले संडे को सब नहारगढ़ जाएंगे।”

“तो फिर।”

“फिर क्या, बात कुछ और है,” सोनू ने कहा।

“तो क्या बात है?” आदित्य झल्ला सा गया।

सोनू ने फोन की तरफ इशारा करते हुए कहा, “पहले इसे तो रख।”

“डबलबैट्री, अब तुझे बोलना है तो बोल वरना मैं छत पर जा रहा हूँ बात करने।” आदित्य ने कहा।

“बोलो माही, अब मैं छत पर आ गया हूँ अब कोई भी हमें डिस्टर्ब नहीं करेगा।”

“वो तो ठीक है लेकिन एक बार सुन तो लेते, सोनू क्या कहना चाहता है, शायद उसे कोई जरूरी बात कहना हो।”

“ठीक है, तुम फोन पर ही रहना। मैं पूछता हूँ। पता नहीं क्या बात करनी है डबलबैट्री को?” आदित्य वापस नीचे गया। सोनू वहीं खड़ा था जहाँ उसने उसे छोड़ा था।

“हाँ सोनू सॉरी, बोलो तुम क्या कहने वाले थे।” आदित्य ने अपना फोन पेंट की जेब में रख लिया।

“कल नव का बर्थ-डे है, तो सोच रहा था हमें नव के बर्थ-डे के लिए कुछ प्लान करना चाहिए।”

“तुम तो सोच रहे हो, लेकिन मैंने तैयारी कर ली है।” आदित्य ने कहा।

“क्या?” सोनू के चेहरे पर एक चमक आ गयी।

“हाँ सोनू, मैंने आंटी के पास बर्थ-डे केक रख दिया है जिसके बारे में किसी को नहीं पता और रात 12 बजे हम सब नव का बर्थ-डे सेलीब्रेट करेंगे,” आदित्य ने कहा।

“वाह! यार तुम तो हमसे वाकई एक कदम आगे हो,” सोनू ने कहा।

आदित्य ने अपनी कॉलर ऊँची कर दी।

रात 12 बजे उन लोगों ने बहुत धमाल मचाया, केक काटा और नव के बॉम्ब पर जमकर लात मारी। सभी ने जमकर डांस किया और खूब सारे फोटो लिए, देर रात तक मस्ती के बाद कुछ देर आदित्य ने मुझसे बात की और रात के 3 बजते-बजते थककर सो गये।

सोमवार **30** सितम्बर**, 2002**

मैं कम्प्यूटर पर आदित्य की फाइल ही पढ़ रही थी, मैं जब भी थोड़ा फ्री होती हूँ तो

t.me/HindiNovelsAndComics

आदित्य की फाइल पढ़ने लगती हूँ। मैंने कम्प्यूटर टेबल पर रखे मोबाइल की तरफ देखा, जिसमें किसी का मैसेज था।

मैसेजः "माही मैं बहुत उदास हूँ।"

"ये तो आदित्य का मेसेज है। शायद आदित्य अपसेट है मैं फोन करके पूछती हूँ," इस ए2 को क्या हुआ है? मुझे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा, दो रिंग के बाद ही आदित्य ने मेरा कॉल रिसीव कर लिया, जैसे आदित्य मेरे ही फोन का इंतजार कर रहा हो।

"हाय डॉ. साहब क्या हुआ? इतना दुःखी क्यों हें? बताओ कौन-सा पहाड़ तुम्हारे सिर आ गिरा है?," मैंने आदित्य को छेड़ते हुए पूछा।

"माही, मेरे कॉलेज में 2 दिन बाद वेलकम पार्टी है।"

"वाह ये तो अच्छी बात है इसमें उदास होने वाली कौन-सी बात है?" मैंने कहा।

"माही, नव ने मेरा नाम बाँसुरी परफॉर्मेंस के लिए दे दिया है," आदित्य ने कहा।

"ओह तो तुमको बाँसुरी बजाना आता है। तुम तो बड़े छुपे रूस्तम हो" मैंने बिस्तर से उछलते हुए पूछा "मुझे बताया भी नहीं और तुम्हें क्या-क्या आता है?"

"माही अकेले बाँसुरी बजाने और पब्लिक के सामने बाँसुरी बजाने में बहुत अंतर है, समझो।"

"बताओ क्या अंतर है?"

"माही, जब मैं खुश होता हूँ या अकेला होता हूँ तो बाँसुरी बजाता हूँ। बाँसुरी में साँसों का बहुत ध्यान रखना होता है। सबके सामने जाऊँगा, तो मेरी सांस फूलने लगेगी। मैं नहीं बजा पाऊँगा, मेरा सबके सामने अपनी सांसो और धड़कनों पर कंट्रोल नहीं होगा।"

"हूँ" मैंने बस इतना ही कहा।

"क्या हूँ? और सबसे अच्छी बात तो ये है कि मैं जब से मेडिकल कॉलेज में आया हूँ, तब से मैंने बाँसुरी नहीं बजाई है। बाँसुरी की प्रैक्टिस भी नहीं की हैं।"

"अभी तो पार्टी में 2 दिन है, प्रेक्टिस कर लो।"

"अब देखता हूँ, क्या करूँ?"

"आदित्य।"

"हाँ माही बोलो।"

"आदित्य।"

"माही, तुम्हारी आवाज को क्या हुआ, सब ठीक तो है ना?"

"1 मिनट।"

"माही तुम सही से बोल नहीं पा रही हो, अजीब सी आवाज आ रही है।"

"हाँ आदित्य, मुझे ऐसा फील हो रहा है। जैसे कि मेरे चेहरे का एक हिस्सा थोड़ा-सा सुन्न हो रहा है, बोलने में भी प्रॉब्लम हो रही है।"

"क्या पहले भी कभी तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है?"

"नहीं, पर आज जब मैं सुबह नहा रही थी तो राइट साइड वाले आधे चेहरे पर झंझनाहट हो रही थी।"

"माही इतनी लापरवाही किसलिए, मोर्निंग में ही डॉ. के पास चले जाना चाहिए था।"

"अब डॉ॰ को दिखाने की क्या बात है, बस यूँ ही चेहरा सुन्न हो रहा होगा।" मैंने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"तो आधा फेस ही थोड़े ना सुन्न होता है। कल डॉ॰ को दिखाने जाना, तुम्हारी दादी सही कहती हैं, तुम अपना बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखती हो।"

"अब प्लीज, दादी की तरह तुम भी डाँटने मत लग जाना और कल पक्का मैं डॉ॰ के पास चली जाऊँगी। थोड़ी-सी देर ही तो सुन्न हुआ था, देखो अब तो मैं ठीक हूँ, सही से बात कर पा रही हूँ।"

"कल पक्का चली जाना।"

"हाँ, बोला तो सही। मैं चली जाऊँगी, अब क्या स्टाम्प पेपर पर लिखकर दूँ और अभी मैं गर्म पानी के बैग से सिकाई कर लूंगी," मैंने कहा।

"आउच!"

"क्या हुआ आदित्य?"

"थोड़ा गर्म दूध हाथ पर फैल गया," आदित्य ने कहा।

"अभी तो तुम, मुझे लापरवाह कह रहे थे, अब बताओ ये क्या है?"

"माही, कभी-कभी ऐसा हो जाता है।"

"आदित्य तुम अपने बारे में, कोटा की यादों के बारे में भी कुछ बताओ, तुम एक साल कोटा भी रहे हो ना?" मैंने कुछ देर बाद पूछा।

"हाँ माही, 12वी के बाद मेरा मेन टारगेट पी.एम.टी. था। मैं पी.एम.टी. की कोचिंग करना चाहता था, लेकिन थोड़ा पैसों की प्रोब्लम थी। मैंने ए.एल.ए.एन. कोचिंग का एन्ट्रेस एग्जाम दिया और तुम्हें पता है मैं टॉप 5 में आया, जिससे मुझे आधी से भी कम फीस जमा करना पड़ी, जिसके लिए पेरेन्ट्स ने हाँ कह दिया। उन्हें भी मुझ पर विश्वास था, मैं अपना बेहतरीन परफोर्मेंस दूंगा।"

"फिर कैसा रहा कोटा का एक्सपीरियंस?" मैंने पूछा।

"मैं कोटा अकेला गया था। कुछ वक्त अकेलापन लगा, शुरू में घर की बहुत याद आती थी। यही एक पहला मौका था, जब मैं पहली बार घर से दूर गया था। जब ए.एल.ए.एन. में मेरी पहली क्लास थी। मैं बहुत ही असहज महसूस कर रहा था कि 300 स्टूडेंट की क्लास में मैं कैसे पढ़ पाऊँगा, लेकिन फिर धीरे-धीरे आदत हो गयी। कोटा में टीचर ट्रिक्स से पढ़ाते थे। जूलॉजी, फिजिक्स, कैमेस्ट्री, बोटनी, इनके कॉन्सेप्ट बेसिक क्लियर हुए और आसानी से याद हो गये। यहाँ टीचर माइक से पढ़ाते थे। इतने सारे स्टूडेन्ट्स के बीच मैं अपनी प्रोब्लम नहीं पूछ पाता था, तो बाहर काउन्टर पर जाकर टीचर्स से अपने प्रोब्लम सॉल्व कर लिया करता था। शुरू में सात, आठ घंटे लगातार क्लास में बैठकर पढ़ना बहुत ही मुश्किल लगता था। कभी-कभी तो नींद आ जाती थी और पता है एक बार मेरे साथ क्या हुआ।"

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"मैं अपना आई.डी. कार्ड ले जाना भूल गया। मुझे गेटकीपर ने गेट पर ही रोक लिया, अंदर एन्ट्री नहीं मिली। भागता हुआ जब तक रूम से आई.डी. कार्ड लेकर वापस पहुँचा, तब तक जूलॉजी की क्लास खत्म हो गयी। मैं अपनी एक भी क्लास मिस नहीं करता था। फिर मेरे रूम के बगल में ही एक लड़का था वह हिन्दी मीडियम का था और दो दिन के लिए घर गया हुआ था, उसकी क्लास शाम को हुआ करती थी। मैंने शाम को उसका आई.डी. कार्ड गले में डाला और जूलॉजी की क्लास लेने चला गया।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"आई.डी. पर फोटो, नाम से उन्हें पता नहीं चला होगा, फोटो तो मैच नहीं हुआ होगा, तो पकड़े नहीं गये?" मैंने पूछा।

"मैं आई.डी. कार्ड को गले में उल्टा लटका कर गया था और जब भीड़ थी, उसी वक्त अंदर गया, इतनी भीड़ होती है। गले में कुछ लटका है गेटकीपर बस यही देख पाता है लेकिन वो कई बार लड़कों को पास बुलाकर भी देखता है। उसने उस दिन मुझे भी बुलाया मैंने कार्ड दिखा दिया, फोटो को उंगली से आधा ढक दिया। उसने देखा ए.एल.ए.एन. का ही कार्ड है तो मुझे जाने दिया। मैं क्लास में तीसरी बेंच पर जाकर बैठ गया। गेट से बचकर क्लास तक पहुँचना बहुत आसान लगा, लेकिन हिन्दी मीडियम में जीव विज्ञान पढ़ना मुश्किल हो गया। मैंने क्लास में अपना सर पकड़ लिया फिर कभी हिन्दी मीडियम में क्लास अटेंड नहीं करूँगा, सर सब कुछ हिन्दी में पढ़ा रहे थे। यहाँ तक की हर बात हिन्दी में ही लिखाई जा रही थी, जिसे समझना मेरे बस का नहीं था। उस दिन 'रिप्रोडक्टिव ऑरगन्स' टॉपिक था, जो मुझे बिल्कुल समझ नहीं आया फिर रूम पर आकर मैंने, करन से वो टॉपिक समझा। करन मेरा रूममेट था और 2 साल से इसी कोचिंग में तैयारी कर रहा था।"

"करन तुम्हारा बेस्ट फ्रेंड था?" मैंने आदित्य की बात को ध्यान से सुनने के बाद पूछा।

"हाँ करन मेरा आज भी सबसे अच्छा दोस्त है। उसी ने मुझे रूम दिलवाया था। जब में शुरू में कोटा पहुँचा, पहली मुलाकात रूम देखने के दौरान करन से हुई। नाम उसका करन है लेकिन उसके सभी दोस्त उसे के.के. कहकर बुलाते है। करन कुत्ता, कमीना, क्योंकि करन की एक ही आदत थी वह लड़कियों का दीवाना था। उसे पढ़ाई के बाद सिर्फ दो ही चीजों में इन्ट्रेस्ट था, लड़कियों को देखना, या लड़कियों की बातें करना। मैं कई बार उसका लड़कीपुराण सुनते-सुनते पक जाता था, चुप ही नहीं होता था साला। यहाँ तक कि वो हमारी कोचिंग की रिसेप्शनिस्ट को भी नहीं छोड़ता था। कई बार उसे चुप करवाना पड़ता था, तो वो मुझे साधु कहता था।

"हम मेस पर जाकर खाना खाते थे, टिफिन का खाना अच्छा नहीं लगता था और अगर मेस का खाना अच्छा ना लगे तो मेस चेंज, खाना चेंज। एक साल में हम आठ मेस बदल चुके थे। कोटा में हर गली नुक्कड़ पर मेस थी, लेकिन करन उसी मेस पर जाना पसंद करता था, जहाँ लड़कियाँ ज्यादा जाती हो।"

"हम्म" मैंने कहा।

"मेरे पसंदीदा सर, सी. आर. सी. सर, फिजिक्स के खुमावत सर, बायो के बेन्दीवाल सर थे। एक बार सी. आर. सी सर ने मेरी प्रोब्लम भी सॉल्व की थी।"

"कैसी प्रोब्लम?" मैंने पूछा।

"मेरे घर पर पापा की तबियत कुछ ठीक नहीं थी, जिस कारण से मैं होम सिकनेस की प्रोब्लम से गुजर रहा था, ना ही मैं घर जा सकता था और ना ही कोटा में पढ़ाई में मन लगता था, तो एक दिन सर ने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया। उन्होने कहा 'क्लास के बाद ऑफिस में आकर मिलो।' मैं थोड़ा सा घबराया था, आखिर पूरी क्लास में से सर ने मुझे ही क्यों बुलाया। उस वक्त परेशानियों से, टेंशन से मेरा माइण्ड बहुत अपसेट था, कोंचिंग पर मेरे एग्जाम भी अच्छे नहीं गये।

t.me/HindiNovelsAndComics

.....

क्लास के बाद मैं सर के ऑफिस में गया, “मे आई कम इन सर?”

“हाँ बेटा आओ,” सर ने अपनी बुक को एक तरफ रखते हुए कहा।

“जी सर।” ए.सी. में भी पसीने की कुछ बूँदे मेरे माथे पर झलक आयी।

“रिलेक्स आदित्य तसल्ली से बैठो, मैं देख रहा हूँ कुछ दिनों से तुम क्लास में ध्यान नहीं देते, गुमसुम चुपचाप बैठे रहते हो, तुम्हारा टेस्ट रिजल्ट भी अच्छा नहीं रहा, तुम तो ए.एल.ए.एन. के टॉपर हो, अगर कुछ प्रोब्लम हो तो मुझे बता सकते हो। मैं तुम्हारी हेल्प करने की केशिश करूंगा,” सर ने मेरे हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा, और मुझसे आई कोन्टेक्ट करते हुए मेरे तरफ देखने लगे।

सर को देखकर मैं डिसाइड नहीं कर पा रहा था कि मैं अपनी घर की प्रोब्लम और होम सिकनेस को सर के सामने कैसे कहूँ। एक मिनिट तक मैं सर को देखता रहा, मेरे जहन में एक ही बात चल रही थी, मेरा रिजल्ट खराब रहा इसलिए सर पूछ रहे हैं या वाकई सर को महसूस हुआ कि मैं परेशान हूँ। मैं लगातार सर को घूरे जा रहा था।

सर ने एक प्यारी स्माइल दी। सर ने स्माइल क्या दी। मैं अपना गला साफ करते हुए सारी बातें वोमिट की तरह उगल गया।

सब सुनने के बाद सर ने मुझे पढ़ाई के लिए मोटीवेट किया और बातें की। उसके बाद मेरी घर की प्रोब्लम तो वैसी ही थी, लेकिन कुछ करने का हौंसला जरूर मिला, सर की बातों से ऐसा लगा जैसे मेरा दिल हल्का हो गया हो, एक जादू था सर की बातों में।

सर ने अपना मोबाइल नं. दिया और कहा “जब भी तुम परेशान हो, तुम्हें बात करना हो, तो बेझिझक बात कर लेना तुम्हें अच्छा लगेगा,” उस वक्त मैं सोच रहा था कि मेरी जगह करन होता तो यही सोचता कि शायद मैम होती और मैम से बेझिझक बात करने का मौका मिला होता तो क्या बात थी। फिर कुछ ही दिनों में कोटा में रहना। वहाँ मन लगाकर पढ़ाई करना अच्छा लगने लगा।

.....

“तो फिर सर से फोन पर बात की?” मैंने कहा।

“हाँ, एक दिन बात करनी पड़ी। एक दिन बड़ा हादसा हो गया,” आदित्य ने कहा।

“कैसा हादसा?” मैंने चौकते हुए पूछा।

एक दिन मैं और करन हमारे पास ही एक थड़ी पर चाय पीने गये। अचानक करन के हाथ से चाय का कप गिर गया और करन ऊपर बिल्डिंग में देखते हुए जोर से चिल्लाया, “ऐ लड़की क्या कर रही हो?”

“मैंने करन से कहा कि वो ये क्या ड्रामा कर रहा है, लड़कियाँ तो इसकी कमजोरी हैं। मैंने जैसे ही ऊपर देखा तो मेरे चेहरे की हवाइयाँ उड़ गयीं। एक लड़की दूसरी लड़की को बाल खींचकर बालकनी से नीचे फैंकने की कोशिश कर रही थी।“

“मैं और करन बिल्डिंग की तरफ भागे। यह अच्छा था कि रूम का गेट खुला था, भागकर बालकनी में गये और उस लड़की को बचाया। मेरे पास सर का फोन नम्बर था, सर को कॉल करके सारी बात बताई। सर क्लास ले रहे थे। सर क्लास छोड़कर आये और

t.me/HindiNovelsAndComics

उस लड़की को हॉस्पीटल में एडमिट कराया। वो लड़की 2 दिन बाद होश में आयी। उसके परिवार वालों को बुलाया, सर उसे डेली शाम को क्लास के बाद मिलने जाया करते थे, तब जाकर सारी बात सामने आयी। ये दोनों लड़कियां एक ही शहर से थी, साथ-साथ कोचिंग करने आयी थी लेकिन कॉम्प्टीशन और जलन की भावना एक-दूसरे में इस कदर हावी हो गयी कि जब दूसरी लड़की के नं॰ अच्छे आये, तो उसकी फ्रेंड को जलन होने लगी और पास में रखे मिनी सिलेण्डर से सर फोड़ दिया। वो यही तक नहीं रूकी बल्कि बालकनी से फैंकने की कोशिश की।“

“उसका बहुत सारा खून बह गया, उसे होश में आने में दो दिन का वक्त लगा। पता नहीं लड़कियाँ इस तरह से कैसे कर सकती हैं?“

“हम्म,” मैंने कहा।

“लेकिन कुछ लड़कियाँ बहुत अच्छी होती हैं जैसे कि तुम।” आदित्य ने माहौल को थोड़ा खुशनुमा बनाने के लिए कहा।

“अच्छा मक्खन लगा रहे हो,” मैंने कहा।

“तुम पर लगाने के लिए इतना सारा मक्खन कहाँ से लाऊँगा? मक्खन खरीदते-खरीदते ही गरीब हो जाऊँगा।” आदित्य की बात पर हम दोनों ही खिलखिला कर हँसने लगे।

“मैं आज भी कोटा की यादों को अपने जहन मे संजोये रखता हूँ। मेरी जिंदगी का अच्छा वक्त था वो।”

“आज मेरी जिज्ञासा तुम्हें तुम्हारे पास्ट में खींचकर ले गयी। बस में तुम्हारे बीते हुए कल के बारे में जानना चाहती थी इसलिए सब पूछ लिया।”

“माही होल्ड करना, पता नहीं नव क्यों किचिन से ही आवाज लगा रहा है। क्या हुआ नव मैं बालकनी में हूँ,“ आदित्य ने कहा।

नव किचन से बालकनी में आ गया, हाथ में दूध का बर्तन लिए।

“क्या हुआ इतना क्यों चिल्ला रहे हो?” आदित्य ने बड़ी उत्सुकता से पूछा।

“आदित्य ये बर्तन में रखा दूध किसने पिया?” नव ने दूध का बर्तन दिखाते हुए कहा।

“मैंने पिया है,”

“दूध फट गया था, फटा हुआ दूध पी लिया, आँख खोलकर देख तो लिया होता“ नव ने कहा।

“यार मुझे नहीं पता था, अब क्या करूँ?” आदित्य ने फुसफुसाते हुए कहा।

“कुछ मत कर पेट में अपने आप दूध का पनीर बन जाएगा,” नव हँसते हुए चला गया,

“माही, सॉरी फ्रेंड आ गया था।”

“सब सुन लिया मैंने, गलती से तुमने फटा हुआ दूध पी लिया।”

“मुझे बहुत भूख लग रही थी इसलिए पूरे दो गिलास पी गया, लेकिन कोई बात नहीं मेरा पेट सोलिड है, कुछ नहीं होगा मुझे,” आदित्य ने कहा।

“चलो अच्छा है कुछ ना हो तुम्हारे पेट को, तुमसे तुम्हारे पास्ट के बारे में बातें करके अच्छा लगा, अब रात बहुत हो चुकी है, तो फिर कल बात करेंगे” मैंने कहा।

“हूँ,” आदित्य ने बहुत ही धीमे आवाज में कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"हूँ क्या अच्छा ये बताओ अब क्या करोगे पढ़ोगे या सो जाओगे"

"पढ़ूँगा, अभी एनाटोमी के डायग्राम बनाने है। सच तो ये हैं माही, मुझे सबजेक्ट की तैयारी से ज्यादा एनाटोमी के डायग्राम्स बनाने का क्रेज रहता है। तुम तो जानती हो मुझे स्केच, पोइट्रेट बनाना बहुत पसंद है। कॉलेज में आकर टाइम नहीं मिलता तो एनाटोमी के डायग्राम पर ही मैं अपना हुनर निकाल देता हूँ।"

"अच्छा है" मैंने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

वेलकम पार्टी

फाइल
गुरूवार **10** अक्टूबर**, 2002**

माही हमारी वेलकम पार्टी बहुत शानदार थी। सीनियर्स ने हमारा बड़ी गर्म जोशी के साथ स्वागत किया। कॉलेज की पूरी फेकल्टी थी। हमारी नीता मैम बहुत सुंदर लग रही थी, पार्टी में मेरे क्लास की सारी गर्ल्स थी। लड़कियाँ चाहे कितना भी मॉर्डन बने लेकिन बेस्टर्न क्लॉथ के बजाए इंडियन साड़ी में ही अच्छी लगती हैं। मैं डेली उन से क्लास में मिलता हूँ सब ठीक ठाक ही लगती हैं, पर पार्टी में साड़ी में गजब ढा रही थी। मेरा मतलब अच्छी लग रही थी क्योंकि सभी ने साड़ी पहनी हुई थी।

अब मैं उनकी ज्यादा तारीफ तो नहीं करूँगा क्योंकि हो सकता है कि तुम जलन महसूस करो। माही मेरा बाँसुरी परफॉर्मेंस बहुत अच्छा रहा मैंने बड़े इत्मिनान से बाँसुरी बजाई। मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं था कि मैं इतने लोगों के बीच अपनी साँसों और धड़कनों को कंट्रोल कर पाऊँगा। मेरा परफोर्मेंस बेस्ट था। सिर्फ तुम्हारे कारण क्योंकि तुम्हें मुझ पर पूरा विश्वास था, तो मैं तुम्हारा विश्वास कैसे तोड़ सकता था।

आज दिन में जब तुम्हारा फोन आया उस वक्त मोबाइल की बैट्री लो थी और तुम्हारे एक-दो बार फोन आने से बेचारा मेरा मोबाइल बेहोश हो गया और मैं बात नहीं कर पाया।

मैं शायद तुमसे ये पूरा महीना बात ना कर पाऊँ, क्योंकि मेरे प्रीफाइनल एग्जाम है, अब से मुझे पूरा ध्यान बुक्स पर देना है। एनाटॉमी और बायोकैमेस्ट्री की थोड़ी बहुत तैयारी है पर फिजियोलॉजी मेरी कमजोर है। ज्यादा टाईम नहीं दिया फिजियो को।

आजकल मेरा रफ एण्ड टफ शेड्यूल है।

सुबह 8 बजे से दोपहर 3 बजे तक क्लास चलती है। कभी-कभी मैं 8 बजे की क्लास मिस कर देता हूँ जो कि एनाटॉमी की क्लास होती है। कई बार नीता मैंम से उनकी क्लास में देर से आने पर डाँट भी खानी पड़ती है।

आज भी मैं 9 बजे जल्दी-जल्दी तैयार होकर कॉलेज पहुँचा, तब तक एनाटॉमी का आधा लैक्चर निकल चुका था और इतना लेट क्लास में जाने की परमिशन नहीं होती है। 10 बजे हॉल में डिसेक्शन होता है, 12 बजे बायोकैम, 3 बजे तक सारी क्लास कम्पलीट होती है। 3 बजे भागते-भागते रूम तक पहुँचता हूँ, फिर लंच करता हूँ। इतनी भूख लगी होती है कि कुछ भी मिल जाये चाहे स्वादिष्ट हो या स्वादहीन सब कुछ सीधा पेट में। पूरा दिन थक जाते हैं तो थोड़ी देर सो जाता हूँ। फिर 5 बजे से 8 बजे तक हम चारों मैं, सोनू (डबलबैट्री), नव (चिंतामणि), प्रताप (साइलेंट मोड), ग्रुप में पढ़ाई करते हैं। टॉपिक तैयार करते हैं। एक दूसरे को पढ़ाते हैं। 8 से 9 बजे डिनर टाईम और 9 बजे के बाद लगातार पढ़ाई करते हैं। जब तक नींद ना आ जाये। प्रीफाइनल एग्जाम में हमको 50 प्रतिशत लाना जरूरी होता है। अगर 50 प्रतिशत से कम मार्क्स आए तो हम अपने फर्स्ट ईयर का फाइनल एग्जाम नहीं दे सकते और 6 महीने बैक में चले जाएँगे।

तो माही आजकल हम पागल भूतों की तरह रात-रात भर पढ़ते रहते हैं, तो तुम मुझे

t.me/HindiNovelsAndComics

समझ सकती हो कि मैं एग्जाम तक तुमसे बात नहीं कर पाऊँगा और मेरा मोबाइल भी स्वीच ऑफ रहेगा।

माही मैं तुम्हें बहुत मिस करूँगा और हम जल्दी ही बात करेंगे।

माही अना बेहिबेक।

रविवार **15,** दिसम्बर**, 2002**

आज मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे माँ की फोटो देख रही हूँ। आज माँ की बहुत याद आ रही है। मेरे पास इस दुनिया में मुझे सबसे ज्यादा प्यार करने वाले दादू, दादी हैं फिर भी मैं अक्सर माँ की कमी महसूस करती हूँ। 10 साल हो गये, मैंने माँ को सिर्फ दो बार देखा है। उनकी आवाज सुने एक अरसा बीत गया। मैं चाहती हूँ मेरी माँ मुझे वापस मिल जाये।

स्क्रीन फ्लैश हुआ, मैंने पास रखे मोबाइल में उम्मीद भरी नजरों से देखा तो उसमें आदित्य का ही नम्बर था, आदित्य का फोन आ रहा है। मैं इस वक्त बहुत उदास हूँ इसलिए किसी से भी बात करने का मन नहीं है लेकिन आदित्य से बात करने का मौका भी नहीं गवाना चाहती। फिर पता नहीं कितने दिनों तक मैं आदित्य से बात ना कर पाऊँ, कुछ देर बाद फौरन फोन उठा लिया।

t.me/HindiNovelsAndComics

क्रोनिक पेरोटाइटिस डिसीस

"हाय माही,"

"हैलो!" मैंने अपना गला साफ करते हुए, बुझी आवाज में कहा।

"मेरे एग्जाम अब खत्म हो चुके हैं। अब हम डेली कॉल किया करेंगे। खूब सारी बातें किया करेंगे। मुझे तुम्हें बहुत सारी बातें बतानी है।" आदित्य आज बहुत खुश लग रहा था और उसकी खुशी साफ-साफ जाहिर हो रही थी।

आदित्य एक ही साँस में अपनी सारी बातें बोले जा रहा था। शायद आदित्य एग्जाम खत्म होने के बाद बेसब्री से मुझसे बात करने का इंतजार कर रहा था। मैं भी आदित्य से बात करना चाहती थी, लेकिन इस वक्त कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थी। आदित्य इतना खुश है उसे अपनी प्रोबलम कैसे बताऊँ?

"लगता है मैंने तुमसे दो महीने से बात नहीं की है, इसलिए तुम कुछ नाराज लग रही हो" आदित्य ने कहा।

"नहीं आदित्य, मैं नाराज नहीं हूँ। मैंने तुम्हारी फाइल पढ़ी थी, तुमने बताया था तुम्हारे एग्जाम हैं।"

"वहाँ सब ठीक तो है ना?" आदित्य ने पूछा।

"हाँ, सब ठीक हैं।"

"तो?"

"तो फिर क्या?"

"तुम आज इतनी शांत-शांत, बुझी-बुझी कैसे हो?"

"बस ऐसे ही।"

"अच्छा तुम्हारी तबियत कैसी है? फेस पर जो प्रोब्लम हो रही थी, वह ठीक है या नहीं?"

"नहीं वही ठीक नहीं है।"

"क्यों क्या हुआ?" आदित्य ने पूछा।

"अभी कुछ दिन पहले मेरे फेस पर तेज झंझनाहट हुई, मेरा मुंह बिल्कुल सूख गया और आधे फेस ने काम करना बंद कर दिया। मेरा आधा फेस थोड़ा सख्त भी हो गया। मैंने दादू को बताया वो मुझे एम्स लेकर गये। अब टेबलेट से मेरा फेस ठीक है, मैं बात कर पा रही हूँ।"

मैं आदित्य को अपनी प्रोब्लम नहीं बताना चाहती थी लेकिन आदित्य के सामने मैं छोटी बच्ची बन जाती हूँ। कोई भी बात छुपा नहीं पाती बस वॉमिट की तरह सारी बातें फटाफट उगल देती हूँ।

"जिस दिन तुमने मुझे अपने फेस की प्रोब्लम के बारे में बताया था, उसके अगले दिन ही तुमने डॉ॰ को दिखा लिया होगा ना?" आदित्य ने पूछा।

"नहीं, मुझे लगा सब ठीक है, सर्दी के कारण ऐसा हो रहा होगा।"

"ओह माही! तुम बहुत लापरवाह हो," आदित्य ने गुस्से में कहा।

"सॉरी मुझे नहीं पता था कि इतनी बड़ी प्रोब्लम हो जाएगी। मेरा दो बार सिटीस्कैन

t.me/HindiNovelsAndComics

हो चुका है आज ही स्टिस्कैन की रिपोर्ट आयी और डॉ॰ अंकल से भी आज ही मिली।"

"रिपोर्ट क्या आयी, बताओ मुझे?"

"मुझे क्रोनिक पेरोटाइटिस डिसीज़ है।"

"इसमें क्या होता है?" आदित्य ने पूछा।

"इसमें कान के नीचे पेरोटिड ग्लैंड होती है। इंफैक्शन के कारण ग्लैंड में क्रोनिक प्रॉब्लम हो जाती है। क्रोनिक डक्ट जो कि माउथ में अक्लदाढ़ पर खुलती है। यह डक्ट ब्लॉक हो जाने पर ग्लैंड फूलने लगती है और मेरी यही ग्लैंड ब्लॉक हो गयी है। उस जगह एक छोटा-सा ट्यूमर बन गया है कान के नीचे के हिस्से में सूजन है जिससे फेस का एक साइड बहुत सूजा हुआ है लेकिन टेबलेट के कारण अब ठीक है, बात करने में भी कोई प्राब्लम नहीं हो रही है।"

"तुम प्रोपर ट्रीटमेंट तो ले रही हो ना?"

"हाँ, दादू के फ्रेंड एम्स हॉस्पीटल में सर्जन हैं। उन्हीं के अंडर में मेरा ट्रीटमेंट चल रहा है और ट्यूमर के लिए..." मैं आगे कहते-कहते रूक गयी।

"क्या कहा डॉ॰ ने ट्यूमर के लिए?" आदित्य की आवाज अब बहुत धीमें हो चुकी थी।

"डॉ॰ अंकल ने कहा है कि ट्यूमर निकालने के लिए ऑपरेशन करना होगा, ज्यादा लेट किया में तो ये इंफैक्शन और भी बढ़ सकता है।"

आदित्य इस वक्त कुछ भी नहीं बोल रहा था, मैं फोन पर सिर्फ उसकी सांसों की आवाज सुन पा रही थी।

"ऑपरेशन के बाद मैं जल्दी ठीक हो जाऊँगी" मैंने कहा।

"हाँ।"

हम दोनों कुछ देर चुप रहे।

"मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा, तुम जल्दी ठीक होकर आना।कब है ऑपरेशन?" आदित्य ने पूछा।

"एक महीने बाद... अभी कुछ टेस्ट बाकी हैं, उसके बाद ऑपरेशन होगा और कुछ दिन मुझे हॉस्पीटल में एडमिट होना पड़ेगा।" मुझे फोन पर बहुत धीरे-धीरे सिसकियों की आवाज महसूस हो रही थी, जैसे आदित्य रो रहा हो।

"माही, मैं तुम्हें बहुत मिस करूँगा, तुम जल्दी ठीक होकर आना," आदित्य ने भारी आवाज में कहा।

"आदित्य क्या तुम रो रहे हो? लड़के कभी रोते नहीं। डॉ॰ होकर तुम ऐसे हिम्मत हारोगे?" मैंने कहा।

"अभी मैं डॉ॰ बना नहीं हूँ। माही, लड़कों को क्या बुरा नहीं लगता खासकर जब कोई अपना बीमार हो। लड़कों के पास फीलिंग्स नहीं होती है क्या? हम लड़कें हैं तो क्या रो भी नहीं सकते हैं।"

"चिरकुट हो तुम," मैंने हँसते हुए कहा ताकि माहौल ठीक रहे ।

"ओके, डन। माही तुम्हारा ये दोस्त अब नहीं रोयेगा लेकिन तुम अपना ध्यान रखना। मुझसे बात करते रहना," आदित्य मुस्कुरा दिया।

"नहीं आदित्य, डॉ॰ ने फोन पर बात करने के लिए मना किया है। मैं चोरी चुपके

t.me/HindiNovelsAndComics

मोबाइल लेकर तुमसे बात कर रही हूँ क्योंकि पेरोटिड ग्लैंड कान के पास है और फोन से इंफैक्शन और भी बढ़ सकता हैं।" मैंने कहा।

"हाँ तो हम बात नहीं करेंगे तुम ठीक हो जाओ। अब फोन रखो तुम बहुत देर से बातें कर रही हो, लापरवाह लड़की," आदित्य ने हँसते हुए कहा लेकिन आदित्य मेरे लिए अंदर से दुःखी है। ये बात मैं साफ-साफ महसूस कर पा रही हूँ।

"अब पता नहीं मैं तुमसे कब बात कर पाऊँ लेकिन तुम अपनी फाइल जीमेल पर सेव करते रहना। मैं पढ़ लिया करूंगी और मुझे भी जो कुछ कहना होगा मैं मैसेज कर दूंगी।"

"हाँ मैं फाइल सेव कर दिया करूगा, माही गेट वेल सून, आई मिस यू"

"माही, जेग एलस्करडिग"

t.me/HindiNovelsAndComics

मिशन ऑफ मिडनाइट वॉक

फाइल -
गुरूवार 26 दिसम्बर, 2002

"आदित्य अब एग्जाम खत्म हो गये तो पार्टी बनती है।" सोनू मेरे बैड़ पर धड़ाम से आकर गिरा और व्हिस्की की बोटल मुझे दिखाते हुए बैड़ के पास वाली टेबल पर रख दी। नव जो कि अपनी बुक्स जमा रहा था बोटल देखकर मेरे पास आकर बैठ गया।

"चल ना आदित्य, आज ड्रिंक करते हैं। बहुत टाइम हो गया," नव ने कहा।

आज नव और सोनू बहुत खुश हैं। कम-से-कम 10 दिन तो हम लोग चैन की सांस ले पायेंगे। एग्जाम टाइम में ना जाने कितनी रातें हमने केवल पढ़ते-पढ़ते ही बिताई है। यह हमारा मेडीकल कॉलेज का पहला एक्सपीरियंस था और यही पागलों जैसे दिन रात पढ़ाई हमें एम.बी.बी.एस. कम्पलीट होने तक करनी है। नहीं, एम.बी.बी.एस. तक ही नहीं बल्कि एम.बी.बी.एस के बाद भी हमें यू ही लगातार पढ़ते रहना होगा। पढ़ाई तो जैसे हम बच्चों की जान ले कर ही छोड़ेगी।

"क्या सोच रहा है आदित्य? कम ऑन, ड्रिंक करते हैं। मैं व्हिस्की की बोटल लेकर आया हूँ, देख यह तुझे बहुत पसंद आएगी," सोनू ने अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा।

मैंने व्हिस्की की बोटल की तरफ देखा जिस पर ब्लैक कलर का लेबल लगा हुआ था और गोल्डन कलर से बड़े अक्षरों में व्हिस्की का नाम लिखा था। मैंने सोनू को इंग्नोर कर दिया। सोनू की पूरी बात सुने बिना ही मैं बालकनी में चला गया।

"चिरकुट क्या हुआ है तुझे?" सोनू और नव मेरे पीछे-पीछे बालकनी तक आ गये।

नव और सोनू भी मुझे चिरकुट कह कर चिढ़ाने लगे, लेकिन मैंने साफ मना कर दिया क्योंकि सिर्फ माही ही मुझे चिरकुट कह सकती है, बस। पहले सोनू ड्रिंक नहीं करता था और नव तो कभी ड्रिंक को हाथ भी नहीं लगाता था लेकिन मेडिकल कॉलेज में ऐसा चस्का लगा है कि साले कमीने दोस्तों को पार्टी के नाम पर व्हिस्की-वोदका की पार्टी ही याद आती है।

"यार प्लीज मुझे अकेला छोड़ दो, मुझे ड्रिंक पसंद नहीं। मैं ड्रिंक करना छोड़ना चाहता हूँ। अब अकेले रहना चाहता हूँ।"

"क्यों!" सोनू और नव मुझे घूर-घूर कर देखने लगे। आखिर उनके घूरने की भी एक वजह है, उनके फ्रेंड लिस्ट में सिर्फ मैं ही एक ऐसा था जो ड्रिंक करता था और मुझे देख-देख कर नव और सोनू को भी ड्रिंक करने का चस्का लगा। वैसे बुरी आदतें हम दूसरों से जल्दी ग्रहण करते हैं। जैसा कि मेरे कमीने दोस्तों ने मेरी ड्रिंक की आदत ग्रहण कर ली थी।

"वैसे यह ड्रिंक ना करने का ख्याल तेरा तो नहीं हो सकता, ज़रूर माही ने ऐसा कहा होगा" नव ने कहा।

"ना माही से मिला है ना देखा है और दिमाग पर प्यार का भूत चढ़ा लिया है," सोनू ने मुझे घूरते हुए कहा।

"ठीक है, जैसा तू चाहे, हम तेरी फीलिंग की कद्र करते हैं। तुझे ड्रिंक करने के लिए फोर्स नहीं करेंगे।" नव ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा। प्रताप और शुभ भी इस वक्त हमारी बातों

t.me/HindiNovelsAndComics

में शामिल होने के लिए आदित्य के रूम में आ गये।

"क्या चल रहा दोस्तों? मैंने तो सोचा था कि आज दोस्तों की महफिल जमेंगी, तुम लोग तो चुपचाप बैठे हो," शुभ ने रूम में आते हुए कहा।

शुभ के हाथ में मोबाइल था जिस पर रेडियो चल रहा था और रेडियों पर जगजीत सिंह की गजल चल रही थी।

"क्या हुआ तुझे? अब तो एग्जाम खत्म हो गये हैं, अब तो अपना फुल मस्ती टाईम है," शुभ ने रेडियो बंद कर मुझसे बातें करने में दिलचस्पी लेने लगा और मेरे पास बालकनी की रेलिंग से टिककर खड़ा हो गया।

"कमीने! रेडियो क्यों बंद कर दिया? जगजीत सिंह की कितनी अच्छी गजल चल रही थी" मैं खींजते हुए बोला।

"अबे ओए मंजनू की औलाद, कह तो ऐसे रहा है, जैसे कि जगजीत जी ने ये गजल स्पेशली तेरे लिए बनाई हो" षुभ ने कहा।

"चलो कहीं बाहर चलते हैं" सोनू ने नटखट अंदाज में कहा।

इस वक्त मैं रेडियो के मजे लेना चाहता हूँ, और अकेला रहना चाहता हूँ। मुझे 100 प्रतिशत पता था, सोनू शैतान की खोपड़ी में कुछ ऐसे ही आईडियाज आयेंगे। पर मेरे पास और कोई ऑप्सन भी नहीं है अपने फ्रेन्ड्स की बात टालने का। "तुम लोग क्या सोच रहे हो। बताओ इस वक्त कहा चलना है?" मैंने पूछा।

मैं आँख बंद किए अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गया और इत्मीनान से दोस्तों की बातें सुनने लगा, ना चाहते हुए भी मुझे इनकी बातों और बेवकूफियों का हिस्सा बनना पडता है और मैं ये भी नहीं चाहता कि अगर मैं उदास हूँ, तो मेरे गम में शामिल हो या मुझे उनकी सहानुभूति मिले। इस वक्त मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ। मुझे माही की बहुत याद आ रही है। लेकिन मैं अपनी बात अपने दिल तक ही सीमित रखना चाहता हूँ, दोस्तों से शेयर नहीं करना चाहता। मैं छत पर जाना चाहता हूँ। तारों से भरे आसमान को निहारुँ। कोई तारा टूटे तो मैं अपनी माही के लिए विश मांगू। "ओह शिट! मैं भी क्या सोच रहा हूँ।

'माही और मैं जानता हूँ कि तारों के टूटने से कभी किसी ख्वाहिश पूरी नहीं होती। ये तो सिर्फ टी.वी. में दिखाये जाने वाले चोचले है।" मैंने अपने आप को समझाते हुए कहा।

"चलो वॉक पर चलते है," सोनू ने दाँत दिखाते हुए कहा।

मुझे लग ही रहा था सोनू कुछ स्टूपिड आईडिया ही देगा, रात के 2 बजे वॉक पर जाना... ठीक नहीं लग रहा था।

"हड्डिया जमा देने वाली ठंड में ये एकदम फालतू आइडिया है।" नव ने कहा।

"तू कहाँ बीच में कुत्ते की तरह दुम हिला रहा है। चिंतामणि तू अपनी राय अपने पास रख तुझसे किसी ने नहीं पूछा," सोनू ने कहा।

"सोनू सुधर जा कमीने," नव चीखते हुए बोला।

"अरे इसे कोई साईड लेकर जाओ। यहाँ सीरियस टॉपिक पर बात चल रही है।"

"इस वक्त वॉक... तेरा दिमाग तो ठीक है ना," नव ने सोनू से कहा और सोनू के कंधों को पूरी तरह झकझोर दिया।

t.me/HindiNovelsAndComics

सोनू अपना चश्मा सँभालने लगा जो उसकी आँखों से गिरने ही वाला था, सोनू बिना चश्में के तो कुछ साफ-साफ देख ही नहीं पाता और बिना चश्में के उसकी बड़ी-बड़ी आँखें अजीब दिखाई दे रही थी।

“आदित्य, मैं तुझे सच-सच बता रहा हूँ। सोनू अपना मानसिक संतुलन खो चुका है। कभी किसी के साथ ऐसा हो तो इंसान को अपने दिमाग की गुत्थियाँ आत्म चिंतन से खुद ही सुलझानी पड़ती है,” नव ने सोनू को घूरते हुए कहा।

“नव तू अपनी बकवास बंद कर और यहाँ फोकट का ज्ञान मत बाँट... यहाँ तुझसे भी ज्यादा ज्ञानी लोग बैठे हैं।” सोनू ने तिरछी निगाह से मेरी तरफ देखते हुए कहा।

“तू मेरी तरफ ऐसे क्यों देख रहा है?” आदित्य ने कहा।

“यार हम मुद्दे से भटक रहे हैं।” सोनू ने कहा।

“यही तो सही टाइम है, सोचो जे-86 में हमें कोई देख नहीं पाएगा, हम चुपके से मेनगेट से बाहर निकल जाएँगे और थोड़ी देर में ही वापस आ जाऐंगे। सुनसान रात में वॉक पर जाने का मजा ही कुछ और होगा।” प्रताप ने हमारी बात में शामिल होते हुए कहा।

साइलेंट मोड भी सोनू की संगति में थोड़ा-थोड़ा सोनू के जैसा होता जा रहा है। प्रताप साइलेंट मोड में जरूर रहता है, लेकिन किसी साइलेंट बाम्ब से कम भी नहीं है, फटता है तब आवाज भले ना हो, लेकिन लोगों के दिलो दिमाग में हलचल जरूर मच जाती है।

हम तीनों प्रताप को एकटक घूरते रहे क्योंकि प्रताप जैसे डरपोक से इतनी बहादुरी भरी बातों की उम्मीद नहीं थी।

“नहीं,” नव ने फरमान जारी करते हुए।

“कभी हाँ-कभी ना, मेरा तो इससे दिमाग घूम रहा है” सोनू ने झुंझलाकर कहा।

“चलो हम आज वॉक पर चलते हैं,” मैंने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा; जिस पर मैं इतनी देर से चिपका हुआ बैठा था।

नव मेरी बात नहीं टाल पाया और वो भी हमारे साथ चलने को तैयार हो गया। नव और मेरी अंडरस्टैडिंग अच्छी है। नव कभी भी मेरे सुझाव को मना नहीं कर पाता, शायद मुझे अच्छा दोस्त मानता है।

हम पाँचों चुपके से फ्लैट जे-86 से निकले। फ्लैट से 2 कि.मी. दूर निकल आये थे। रोड़ पर कोई भी नहीं था, ऐसा लग रहा था इस वक्त पूरा जयपुर बहुत गहरी नींद में सो रहा है और हम पाँच छुछुंदर पता नहीं इस वक्त कौन-सा मिशन पूरा करने निकले हैं लेकिन मैं इस तरह की रात इंजोय कर रहा हूँ। ऐसी सुनसान रातों का जिक्र अक्सर मैं शरलॉक हॉम्स के नॉवेल में पढ़ा करता था।

रात इतनी ज्यादा सुनसान और शांत थी कि यह अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रोड़ पर हमारे पैरों के चलने तक की आवाज भी बहुत तेज और भयानक लग रही थी। ठंडी-ठंडी हवा बदन को अंदर तक छू रही थी। तेज हवा के चलने से अजीब सी सांय-सांय की आवाज माहौल को और भी अधिक डरावना बना रही थी। सड़क के किनारों पर लगे लैंप पोस्ट के बल्ब के जलते और फिर बुझते रहने से कभी हल्की रोशनी हो जाती थी, फिर अगले ही पल घुप्प अंधेरा। चारों तरफ फैले इस भुतहा माहौल ने मेरे बदन के एक-एक रोंगटे खड़े कर दिये। अब मन कुछ अजीब होने लगा है... हम सभी ठंड में

t.me/HindiNovelsAndComics

कपकपाते हुए शान से सुनसान रास्तों पर आगे बढ़ते जा रहे थे। हमने जोश में इस कदर होश खो दिये कि जरूरी सामान लेना तो दूर, गरम कपडे पहने बिना ही यूं ही मुँह उठा कर बेवकूफी भरे मिशन पर चल दिये।

"आदित्य, जरा एक मिनट रूकेगा" प्रताप ने कहा।

"क्यों, क्या हुआ?"

"नेचर कॉल।"

"अबे इतना भी कंट्रोल नहीं होता। हम वैसे भी घूमने निकले हैं मूत्रदान करने नहीं," सोनू ने खिसयाते हुए कहा।

"मूत्रदान महादान, जो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जिससे हमें कोई वंचित नहीं कर सकता" प्रताप ने कहा।

ऐसा कभी हो ही नहीं सकता कि नव सोनू की बात का उल्टा जवाब ना दे।

"तू जा दान करने हम यहीं इंतजार करेंगे," नव ने फिल्मी अंदाज में कहा।

"दान वान करके जरा जल्दी आना, कहीं झाड़ियों में फंस के मत रह जाना," सोनू ने कहा।

हम सभी थोड़ी देर में हमारे कॉलेज एस.आर.एस. हॉस्पीटल के मेन गेट पर जाकर खड़े हो गये। सामने अंधेरे की चादर ओढ़े हॉस्पीटल दिखाई दे रहा था। "अब हम हॉस्पीटल क्यों आ गये?" प्रताप ने डरते हुए पूछा।

इस वक्त रात इतनी हो चुकी थी। ऊपर से चारों तरफ का माहौल ही कुछ ऐसा था कि प्रताप का डरना लाजमी था। हम सब डरे हुए थे पर एक दूसरे को जता नहीं रहे थे। बस सब अपने आप में बहादुर बनने की एक्टिंग कर रहे थे।

"चलो वॉक हो गयी। अब वापस रूम पर चलते हैं," शुभ ने कपकपाते हुए कहा। शुभ के पैर शायद ठंड के कारण या हो सकता है कि डर के कारण कपकपा रहे थे।

नव मेरे एकदम पास आकर खड़ा हो गया।

"कौन हो?" किसी ने पीछे से मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए भारी आवाज में कहा।

हम सभी उसकी आवाज सुनकर पीछे देखने लगे।

खराब मौसम के चलते, जलते बुझते बल्व की रोशनी में किसी का साया दिखा, जैसे कोई श्यानक काली मूरत-सी खड़ी हो। हमारी आँखें जरूरत से ज्यादा फैल गयी। हम आँखे फाड़-फाड़ के देखने लगे। मुझे लगा मैं अभी चीख दूंगा, लेकिन एकाएक मैंने सामने हवलदार को देखा जो किसी भूत से कम नहीं लग रहा था। मैंने अपनी चीख को अपने काबू में कर लिया... हम सभी के चहरे की हवाईयाँ उड़ गयी। नव मेरे पास ही खड़ा था, पर जैसे ही नव पीछे की तरफ पलटा तो अपना संतुलन नहीं बना पाया और मेरे ऊपर आकर गिर पड़ा। नव को तो जैसे-तैसे मैंने संभाल लिया, लेकिन हमने देखा हमारे सामने पुलिस खड़ी है जिसे संभालना हमारे लिए मुश्किल लग रहा था।

दो हवलदार हैं जो कि अपनी यूनीफॉर्म में थे और इस वक्त हॉस्पीटल के आसपास गस्त लगा रहे थे।

"इतनी रात को यहाँ क्या कर रहे हो?" एक हवलदार तेज गुर्राते हुए बोला और दूसरा हवलदार चुपचाप खड़ा था।

t.me/HindiNovelsAndComics

हम इस वक्त कोई नया लफड़ा झेलने के लिए तैयार नहीं थे। इस वक्त मैं ही नहीं शायद हम सब अपने आप को मन-ही-मन कोस रहे होंगे, हमारे 'मिडनाईट मिशन' के लिए।

पुलिस से बात करने की पहल भी सोनू ने की, 'यस सर' सोनू सात नं॰ का चश्मा अपने आँख पर चढाते हुए बोला।

हमारी गिरती-पड़ती ओर बदहवास हालत देखकर हवलदार बरवस ही हमें घूरने पर मजबूर हो गये।

दोनों हवलदार थोड़ी देर हमें विचित्र तरीके से घूरते रहे, जैसे कि हम जू से भाग कर उनके सामने आ खड़े हुए हैं। वो शायद हमें विचित्र प्राणी समझ कर घूर रहे हों।

पहली बात तो हम इतनी रात को बाहर पाए गए, जब कोई घर से निकलता नहीं है। हमें अपनी हालत पर भी तरस आ रहा था। हमारी

हालत भी थोड़ी अजीब थी। मेरे पैरों में दो अलग-अलग चप्पल थी। सोनू ने घुटने तक का ब्लू कलर का पजामा पहन रखा था, जिस पर रेड लाइन बनी हुई थी और पजामा फटा हुआ था। चूहों ने जगह-जगह से पजामा कुतरा हुआ था। नव के कपड़ां पर तो शायद हवलदार का ध्यान ना गया हो क्योंकि नव की तो पूरी हालत वाकई जू के हैरान, परेशान विचित्र जानवर जैसी लग रही थी और शुभ स्टेच्यू बना खड़ा था, बाल हम सभी के बिखरे हुए थे। हम जैसी हालत में थे वैसे ही रूम से निकल आये थे, ये सोचकर कि रात में कौन देखेगा। अब हमें क्या पता ये हवलदार हमें देख लेंगे। प्रताप भूरे बालों वाला बंदर लग रहा था। जरूर दोनों हवलदारों के लिए यह सब शोध का विषय रहा होगा। माही तुम खुद ही सोच सकती हो कि उस वक्त हवलदारों को देखकर हमारी क्या हालत हो रही होगी।

"यहाँ क्या कर रहे हो?" एक हवलदार ने तेज गुर्राते हुए पूछा।

"सर वॉक पर आये थे," सोनू मिमियाते हुए बोला।

"इस वक्त वॉक पर, सच बताओ लड़कों, क्या हॉस्पीटल में मरीजों के पर्स, उनके सामान चोरी करने आये थे?" हवलदार ने सोनू का हाथ कसकर पकड़ लिया, जिससे सोनू का आगे बोलना मुश्किल हो गया।

"नहीं, नहीं, आप गलत समझ रहे हो, हम यहाँ चोरी करने क्यों आयेंगे हम तो एस.आर.एस. कॉलेज के ही स्टूडेंट हैं। पढ़ते-पढ़ते थक गये थे तो सोचा चाय पीने निकल चलते हैं और हम टहलते-टहलते यहाँ तक आ पहुंचे।" मैंने आगे बढ़ते हुए कहा।

"तुम लोग सच कह रहे हो?" अब हवलदार की आवाज थोड़ी नम्र हो गयी थी, जिसकी हमें कल्पना तक नहीं थी ।

"हाँ, हम इसी कॉलेज के स्टूडेंट हैं, आप चाहें तो रूम पर चलकर हमारे कॉलेज का आई.डी. कार्ड देख सकते हो।"

"आप तो हमारे इस हॉस्पीटल का भविष्य हो पर इतनी रात को बाहर मत घूमा करो। कोई भी गलत मतलब निकाल सकता है। कुछ दिनों से एस.आर.एस. हॉस्पीटल में चोरी के कुछ केस आये हैं जिसके कारण हमें सब पर निगाह रखनी पड़ती है। हम यहाँ के इंचार्ज हैं, एस.आर.एस. हॉस्पीटल की सिक्योरिटी हमारे ऊपर है। कुछ समझे अब, रूम पर जाओ। दोबारा तुम सब इतनी रात को यहाँ नजर नहीं आने चाहिए," उसने अपनी मूँछ पर हाथ रखते हुए कहा और सोनू का हाथ छोड़ दिया।

t.me/HindiNovelsAndComics

“जी समझ गये सर,” सोनू ने कहा। हम हवलदारों से अपनी जान छुड़ाकर सीधे अपने आशियाने, जे-86 में आकर रजाई तान कर सो गये। आज का मिशन थोड़ा रोमांचक होने के साथ-साथ ठंड में कपकपा देने वाला भी था।

t.me/HindiNovelsAndComics

डिसेक्शन हॉल

फाइल
शनिवार **25** जनवरी**, 2003**

“सोनू अभी तो मिड टेस्ट खत्म हुए हैं और ये तू क्या बुक्स हाथ में लिए बैठा है। क्या पढ़ रहा है?” मैंने अपनी चाय का कप एक तरफ रखते हुए कहा।

“कुछ नहीं बस, एनाटॉमी का न्यू सिलेबस देख रहा हूँ और थोड़ी एनाटॉमी माइंड में घुसेड़ने की नाकाम कोशिश कर रहा हूँ।”

“क्यों भाई और कोई काम नहीं है,” मैंने छेड़ते हुए पूछा और अपनी ही बात पर खिल खिलाकर हँस दिया।

“जो भी समझो।”

“क्या करूँ मैं? तुम लोग तो अपनी ही दुनिया में मस्त हो,” सोनू ने कहा जो अब तक बुक्स में अपनी आँखे गड़ाए बैठा था, नवदीप की तरफ इशारा करते हुए बोला-“देखो उस चिंतामणि को साला जब देखो तब मुँह लटकाये ही मिलेगा” सोनू ने कहा।

“क्यों अब इस पर कौन सी नई विपत्तियों का पहाड़ आ गिरा?” मैंने संदेह जताते हुए पूछा।

“लगता है वॉक का सदमा लगा होगा और क्या,” सोनू लापरवाही से अपनी बात बोल रहा था। “देख आदित्य, हम तो मिडिल क्लास फैमिली से हैं। नव अमीर बाप का बेटा है बचपन से ऐशो आराम में पला बढ़ा है,” सोनू ने कहा।

“अच्छा तो तेरे कहने का मतलब है कि जो ऐशो आराम में पले होते हैं वो नव जैसे चिंतामणि होते हैं, छोटी-छोटी प्राब्लम फेस नहीं कर पाते, सोनू तू टॉपिक को कहाँ-से-कहाँ ले जा रहा है?” मैंने हाथ हवा में फैंकते हुए कहा।

“चल नव से ही पूछ लेते हैं, कौन सा पहाड़ गिरा है उसके सर? हम क्यों बिना बात के बहस कर रहे हैं,” सोनू ने कहा।

“क्या बात है भाई आज इतना उदास क्यों हैं?” मैंने नव को अपने पास बुलाते हुए पूछा।

नव अब अपनी कोई भी प्रोब्लम बेझिझक बोल देता है। नव अब पहले बाला शर्मिला नहीं रहा। आखिर सोनू की संगत का कुछ तो असर होना ही था, लेकिन चिंतामणि का टैग अब तक उससे चिपका हुआ था, जिसे दूर करना नव के बस की बात नहीं थी।

नव ने कहना शुरू किया। “मेरे पापा ने बहुत पहले ही मेरे लिए लड़की पसंद की थी, अब वे चाहते हैं, मैं फर्स्ट ईयर के एग्जाम के बाद घर आकर उस लड़की से सगाई कर लूँ और मेडिकल पूरा करने के बाद शादी। शायद प्रेंगनेंसी किट का वाकया जब से हुआ है उसके बाद घरवालों को मुझ पर भरोसा नहीं रहा। अब मेरे ए.टी.एम. में पैसे भी लिमिट के ही डालते हैं,” नव थोड़ा रूआँसा होकर बोला।

नव अपनी बात जल्दी-जल्दी कह गया, शायद वह अपने मन की भड़ास निकालने के लिए तैयार ही था। तभी सारी बातें फटाफट बाहर निकाल दी। नव जब भी रोता है तो नव के नाक और कान दोनों टमाटर के जैसे लाल हो जाते हैं, जिसे मैं उसकी बातों के दौरान

t.me/HindiNovelsAndComics

बड़े ध्यान से देख रहा था।

"ये तो सरासर नाइंसाफी है," मैंने नव को दिलासा देते हुए कहा।

सोनू जो हमेशा हमारी बातों का हिस्सा बनता है, आज भी हमारी बातों में सहयोग देने के लिए एनाटॉमी भुलाकर हमारे पास आ गया।

"क्यों तुझे लड़की पसंद नहीं है, फोटो देखा है क्या?" सोनू गमगीन महौल को ठंडा करते हुए बोला।

"नहीं, मैंने फोटो नहीं देखा, और सोनू बात पसंद नापसंद की नहीं है, मैं अभी से इंगेज्ड नहीं होना चाहता," नव ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा।

नव आजकल सोनू के सामने कम ही रोता है क्योंकि फिर सोनू उसे 'चिंतामणि' के साथ 'रोन्दू' भी कहने लगता है। नव का चिंतामणि नाम भी सोनू का ही एक आविष्कार है और ये आविष्कार काफी हद तक सही भी है क्योंकि नव का अपनी भावनाओं और आँसुओ पर कोई कंट्रोल नहीं है।

"वैसे नव को बधाई हो, तेरी तो शादी के लिए रिश्ते भी आने लगे हैं और ऐसे लड़कियों की तरह मुँह लटकाए क्यों बैठा है? अगर देखा नहीं है तो तू देख के क्या कर लेगा?" सोनू ने दाँत निकालते हुए कहा और बैड पर जाकर बैठ गया।

"क्या मतलब है तेरा?" नव ने कहा।

"तू हमारे आदित्य से कुछ सीख, बिना मिले, बिना देखे माही को अपना दिल दे बैठा है और ये जानता भी नहीं कि माही क्या चाहती है? क्यों आदित्य सही कह रहा हूँ ना मैं?" सोनू ने अपनी आँखे फैलाते हुए कहा।

सोनू के अचानक इस हमले से मैं कुछ कह नहीं पाया बस हक्का बक्का होकर सोनू को देखने लगा।

"तुझे क्या लगता है तू हमें बताएगा नहीं तो क्या हमें पता नहीं चलेगा, हम भी सब समझते हैं बॉस, किसके दिल में क्या है?" सोनू ने चश्में से बाहर मेरी तरफ झांकते हुए कहा।

"चुप कर, तू ये बता बीच में मेरा टॉपिक कहाँ से आ गया? हम तो नव की प्रॉब्लम पर डिसकस कर रहे थे ना। सोनू तू हमेशा टॉपिक से भटक क्यों जाता है?" मैंने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "यहाँ आदित्य और माही टॉपिक नहीं चल रहा है समझा।" 10 सेकेण्ड की खामोशी हमारे रूम में फैल गई।

"मेरी प्रॉब्लम का अब मैं क्या करूँ?" नव 10 सेकेण्ड के बाद खामोशी तोड़ते हुए बोला।

"वैसे नव तुझे घरवालों की पसंद क्यों पसंद आएगी तू तो नीता मैम को घूरता रहता है। मैम पर ही लाइन मारता है" सोनू ने दाँत दिखाते हुए कहा।

नव ने सोनू को घूरते हुए देखा, इसलिए कि नव सोच रहा है कि मैं चुपके से मैम को देखता रहता हूँ, ये बात सोनू कैसे ताड़ गया।

कुछ भी कहो सोनू का दिमाग इन मामलो मे बहुत तेज चलता है।

"सोनू तू अपनी बकवास बंद कर। देखने में अच्छी लगती है, तो देख लेता हूँ लेकिन मैं

t.me/HindiNovelsAndComics

लाइन नहीं मारता समझा ना," नव सोनू पर खीझने लगा।

"कभी-कभी मैंने भी देखा है। नव एनाटॉमी की क्लास में ही पूरी तरह चोकन्ना रहता है एनाटॉमी के लिए नहीं, बल्कि एनाटॉमी की मैम के लिए, मैम को पता चल गया ना बेटा तो तेरा वायकाट हो जाएगा, इसलिए संभल जा। मैंने भी तेरी ये हरकत नोट की है। बस सोनू की तरह बिंदास कह नहीं पाया," मैंने कहा।

"वैसे नीता मैम दिखने में बहुत अच्छी लगती हैं उन्हें एनाटॉमी में क्या दिलचस्पी है। उन्हें मेडिकल कॉलेज में नहीं, बल्कि मॉडलिंग में ट्राय करना चाहिए," सोनू दाँत दिखाते हुए बोला।

"नीता मैम 2 बार मिस राजस्थान रह चुकी हैं," नव ने कहा।

"ओह हो! तो ये जनाब मैम के बारे में ये सब जानकारी भी रखते हैं," सोनू नव को कोहनी मारते हुए बोला।

"सोनू तू फिर से शुरू हो गया।"

"नव तू चिंता ना कर, तेरी प्रॉब्लम भी हम बाद में सॉल्व कर देंगे। वैसे तू घर पर कोई जवाब मत दे। बात मत कर, घरवाले समझ जायेंगे, तू शादी करना नहीं चाहता या फिर कह देना कि एम.बी.बी.एस. फिर एम.डी. करने के बाद ही शादी करूँगा। तब तक लड़की वाले लड़की की शादी कहीं और कर देंगे। टेंशन ना ले, बस तू मैम को अपने दिमाग से निकाल दे क्योंकि अगर कोई पंगा हुआ तो हम तुझे नहीं बचा पायेंगे..."

"बात तो तू बिल्कुल सही कह रहा है। मैं आगे से ध्यान रखूँगा," नव ने कहा।

"देखो मेरे दिमाग में एक बहुत बढ़िया आइडिया आया है।" मैंने बैड से उछलते हुए कहा।

"क्या?" नव और सोनू अपनी आँखें मिचमिचाते हुए मुझे देखने लगे।

"तुम सुनोगे तो तुम्हारा मूड फ्रेश हो जाएगा। मेरी बात सुनो।"

"हाँ, बोल।"

"आज हम डिसेक्शन हॉल चलते हैं रात के 12 बजे," मैंने कहा।

"डिसेक्शन हॉल में क्या करेंगे?" नव ने उत्सुकता से पूछा।

मैं, नव और सोनू के चेहरे पर बदलते हाव-भाव को देख रहा था। मुझे लग रहा था शायद ये मिडनाइट वॉक के सदमें से ये दोनों अभी तक नहीं उभरे हो। मुझे ताज्जुब नहीं होगा, अगर ये मेरे साथ जाने के लिए मना कर दें।

"क्या तू पागल हो गया है?" सोनू ने चीखते हुए कहा।

"आदित्य क्या तू पुरानी रात और पुलिस भूल गया, अगर आज हम पकड़े गए तो एस.आर.एस. कॉलेज का आई.डी. कार्ड भी कुछ नहीं करेगा। दोनों हवलदार हमें जेल में बंद कर देंगे।" नव ने कहा।

"हाँ, तुम सही हो, मैंने तो बस यूं ही कह दिया," मैंने धीमे स्वर में कहा।

"नव एक मिनट तू चुप कर, आदित्य ने आज बिल्कुल सही कहा है। पूरा प्लान क्या है, ये मैं बताता हूँ।"

"हम रात 12 बजे यहाँ से बाहर निकलेंगे और मैं जानता हूँ कि अगर हम सामने सीधे रास्ते से जायेंगे, तो हॉस्पीटल पड़ेगा, उसके बाद कॉलेज का डिसेक्शन हॉल। तो हम उस

t.me/HindiNovelsAndComics

रास्ते के बजाय दूसरे रास्ते से जायेंगे जहाँ पुलिस वाले ना हो" सोनू ने अपनी रणनीति बताते हुए कहा।

"तो फिर कौन-सा रास्ता है?" नव ने पूछा।

"भूतेश्वर मंदिर वाले रास्ते से। भूतेश्वर मंदिर से निकल कर ही डिसेक्शन हॉल की बाउन्ड्री है। पीछे वाला रास्ता है इसलिए किसी का भी ध्यान उस रास्ते पर नहीं जाता," सोनू ने अपनी प्लानिंग बताते हुए कहा।

"लेकिन उस रास्ते पर तो बड़ा नाला है," नव ने कहा।

"हाँ नव और कांटेदार झाड़ियाँ भी बहुत हैं, हमें चोट लग सकती है। ये प्लान तो फेल हो गया।" सोनू ने अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा।

"नाला इतना चौड़ा नहीं है कि हम पार ना कर पाएँ और सोनू मैं एक बार भूतेश्वर मंदिर गया हूँ, वहाँ झाड़ियाँ हैं लेकिन इतनी लम्बी झाड़ियाँ नहीं हैं और तुम लोगों को लगे तो डंडा ले चलना, झाड़ियों को एक तरफ हटाते हुए चलेंगे," मैंने बड़ी बेसब्री से कहा।

"अब तुम दोनों इतना चुप क्यों हो गये?"

"लेकिन डंडा कहाँ से लाएँगे?" नव ने हाथ मलते हुए कहा।

सोनू ने हम दोनों की ओर देखा और बोला, "हम मेरी जायदात लेकर चलेंगे।"

"हाँ, तेरी जायदात संभाल कर रखी है," मैंने कहा ।

"क्या!" नव ने लगभग चीखते हुए कहा।

"मेरी जायदात मतलब मेरे पास 'फीमर बोन' रखी है, वही लेकर चलेंगे।"

"तेरे पास कहाँ से आई?" नव ने भौहें चढ़ाकर पूछा।

"स्टडी के लिए जो बोन हमें मिली थी, वो अभी भी मेरे पास है। मैंने कॉलेज में वापस नहीं दी। हम वही लेकर चलेंगे" सोनू ने कहा और सोचने की मुद्रा में आ गया।

"लगता है तेरे दिमाग में और भी कुछ पक रहा है," मैंने सोनू से पूछा क्योंकि जब भी सोनू के दिमाग में कोई आइडिया आता है, तो सोनू बहुत अजीब लगने लगता है। भौंहें तनी हुयी और चेहरा एकदम कसा हुआ।

"आदित्य, तू अब मुझे बहुत समझने लगा है।" सोनू ने दाँत दिखाए।

"अब तू आइडिया बता" नव ने कहा।

"हम तीनों बारी-बारी से डिसेक्शन हॉल में जायेंगे। वहाँ कम-से-कम एक घण्टा केडेवर के साथ बितायेंगे और एक प्यारी स्माइल वाली फोटो केडेवर के साथ लेकर लायेंगा, वही जीतेगा" सोनू ने कहा।

"ठीक है मैं तैयार हूँ, जीतने वाले को क्या मिलेगा?" मैंने पूछा।

"जो हारेगा, वही सबको पार्टी देगा," सोनू ने कहा।

"ड्रिंक पार्टी नहीं," मैंने कहा।

"हाँ-हाँ ड्रिंक पार्टी नहीं, किसी अच्छे होटल में डिनर और हारने वाला पूरे महीने रूम की सफाई करेगा" सोनू ने कहा।

"ठीक है मैं भी तैयार हूँ," नव ने बहस ना करते हुए कहा।

"तो नव रूम की सफाई करने के लिए तैयार हो जा," सोनू नव की ओर इशारा करते हुए कहता है।

t.me/HindiNovelsAndComics

"तू शांत हो जा, तुझे क्या लगता है, मैं डरपोक हूँ।"

"नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि तू डरपोक है।" सोनू खी-खी करके हँसने लगा।

"वो तो वक्त ही बताएगा कौन डरपोक है? वैसे आदित्य, शुभ और प्रताप को भी पूछ लो," नव ने कहा।

"कर दी ना तूने चीचड़ वाली बात, पहले जब हम आधी रात को वॉक पर गये थे, वो सदमा अब तक बर्दाश्त नहीं कर पाए। याद नहीं रूम पर आकर शुभ और प्रताप ने कितनी गालियाँ दी मुझे," सोनू बौखलाता हुआ बोला।

"ओके रिलेक्स, भड़क क्यों रहा है? सोनू हम तीनों ही जायेंगे। अभी घड़ी में 9 बजे हैं। 12 बजे निकलेंगे। कोई हमें देखेगा भी नहीं। शुभ और प्रताप भी तब तक सो चुके होंगे।"

हम 12 बजने का इंतजार करने लगे। दिमाग में कई तरह के खुफिया विचार चल रहे थे, जैसा कि मैंने सोचा था शायद आज ये दोनों ना जायें, लेकिन ये दोनों तो मुझसे भी जल्दी जाने के लिए तैयार हो गए।

12 बजते ही सोनू तूफान की तरह कमरे में आ धमका। रात को हम तीनों चुपके से अपने फ्लैट से बाहर निकले और इसे हमारी खुदकिस्मती कहना ठीक होगा कि किसी ने हमें बाहर जाते नहीं देखा।

"आदित्य हम एक बात तो भूल रहे हैं। फ्लैट से तो हम चुपके से निकल आये किसी को पता भी नहीं चला, लेकिन तुम्हें याद नहीं बीच में सीनियर्स का हॉस्टल भी तो आता है, अगर सीनियर्स ने हमें देख लिया तो वो हमें नहीं छोडेंगे," सोनू ने कहा।

"कॉलेज वाले भी," नव ने डरते हुए कहा। "क्यों सोनू तू भूल गया, तू सीनियर्स हॉस्टल के पीछे शुभ के रूममेट की रेगिंग लेने गया था," नव ने कहा।

"देख आदित्य, नव को चुप करा ले वरना दो तीन धर दूँगा इसे। क्यों ये मेरे जले पर नमक झिड़क रहा है।" सोनू चीखते हुए बोला, रात को सोनू के चीखने की आवाज डरावनी लग रही थी, लेकिन आज इतना डर नहीं लग रहा है क्योंकि पहले भी ऐसी रातों से, इस अंधेरे से हमने कुछ दोस्ती-सी कर ली थी।

"नव और सोनू-देखो तुम दोनों शांत हो जाओ, ये वक्त लड़ने का नहीं है। कुछ सोचो," मैंने कहा।

"सोनू तो पूरी बात सुने बिना मुझ पर गुस्सा हो रहा है। मैं कह रहा था, हम सीनियर्स हॉस्टल के पीछे वाले रास्ते से जायेंगे। ये वही रास्ता है जहाँ से मेस का सारा सामान आता है" नव शांत होकर बोला।

"क्या आइडिया है! हमें तो ये याद नहीं आया, हम इसी रास्ते से चलेंगे।" मैंने कहा।

"अब हम तीनों में से कोई कुछ नहीं बोलेगा जब तक हॉस्टल का रास्ता तय नहीं हो जाता, अगर किसी ने देख लिया तो सारी बहादुरी यहीं निकल जायेगी," नव ने हमें सुझाव दिया।

आज नव कुछ ज्यादा ही समझदारी की बातें कर रहा था।

अंधेरे में हम इधर-उधर हो गये तो फिर क्या होगा," सोनू ने डरते हुए आगे कदम बढ़ाया।

"तो क्या?" नव ने मुड़कर सोनू को देखते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"मतलब रास्ता भटक गये तो, फिर हम तीनों एक दूसरे का हाथ पकड़ कर चलेंगे।" सोनू ने कहा।

"अब चलो यहाँ से 12:30 हो चुके है," मैंने कहा।

हम तीनों सीनियर्स हॉस्टल से निकलते हुए थोड़ी देर में नाले तक पहुँचे। नाला दिखने में जितना छोटा लग रहा था उतना छोटा नहीं था। हमें नाला पार करने में बहुत ही मुश्किल का सामना करना पड़ा। डर लग रहा था कि थोड़ी-सी चूक से ही हम नाले में गिर सकते थे। नाला पार करते वक्त जब सोनू लकड़ी के छोटे नाजुक पट्टे से गुजर रहा था तभी अचानक सोनू का पैर फिसला, सोनू ने अपने आप को तो सम्भाल लिया, लेकिन उसका चश्मा हाथ से फिसल गया, जिसे बचाने की जद्दोजहद में, मैं पापा द्वारा दी हुई घड़ी कुरवान कर बैठा। मैंने सोनू का चश्मा उठाने के लिये हाथ आगे बढ़ाया ही था तभी घड़ी हाथ से निकलकर नाले के ठंडे पानी में समर्पित हो गयी, लेकिन मुझे सुकून था सोनू का चश्मा बच गया। अगर चश्मा नाले में गिर जाता तो सोनू को एक कदम भी आगे ले जाना मुश्किल हो जाता। सोनू को बिना चश्मे के कुछ भी दिखाई नहीं देता। एक पल के लिये तो हम सहम गये थे लेकिन अगले ही पल एक तीखी मुस्कान हम तीनों के चेहरे पर थी क्योंकि अब तो इन सब की आदत-सी हो गयी है। हम तीनों ने बारी-बारी से सावधानी पूर्वक नाला पार कर लिया। नाला पार करने के बाद, पास में ही भूतेश्वर मंदिर है। भूतेश्वर मंदिर एक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर डिसेक्सन हॉल के पीछे है जो यहाँ से गुजरने वाले राहगीरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। मंदिर के पास ही एक सूखा कुँआ है और बगल में पगडंडी है जिसके आसपास बरसात के मौसम में अक्सर घास उग जाती है। भूतेश्वर मंदिर से निकलकर हम डिसेक्शन हॉल की बाउन्ड्री तक पहुँच गये। तीनों एक साथ बाउन्ड्री से छलांग मारकर दूसरी तरफ पहुँचे जिसमें नव को मामूली-सी खरोंच आई। वहाँ से डिसेक्शन हॉल साफ-साफ नजर आ रहा था।

"लो अब हम केडेवर की दुनिया में कदम रख चुके हैं, तो बताओ पहले कौन जाएगा?" सोनू ने पूछा।

"टॉस कर लेते हैं," नव ने निर्णायक सुझाव दिया।

"टॉस करने की कोई जरूरत नहीं। पहले मैं जाऊँगा

और केडेवर के साथ एक स्माइल वाली फोटो लेकर आऊँगा। तो फ्रैंड्स तुम मेरा वेट करना, मैं पन्द्रह मिनट में वापस आता हूँ।"

"सँभल कर जाना" नव ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा।

"हाँ," एक मिनट के बाद मैं डिसेक्शन हॉल के गेट पर खड़ा था। डिसेक्शन हॉल के पास कुछ हड्डियाँ पड़ी थी, जिनमें से आती फोरमलिन की तेज गंध बता रही है कि ज्यादा समय नहीं हुआ है इन्हें यहाँ डाले हुए।

मैंने देखा गेट पर जंग लगी कुण्डी थी, अच्छा है ताला नहीं लगा था और वैसे भी डिसेक्शन हॉल में ताला लगाने जैसा कुछ भी नहीं है, केडेवर के पास भला कौन चोर आयेगा। बस हम जैसे बदमाश ही यहाँ घूमने आ सकते हैं।

मैंने धीरे से गेट खोला। गेट खोलने से पूरे डिसेक्शन हॉल में आवाज गूंज गयी। गेट लोहे का बना था, मैंने डिसेक्शन हॉल में चारों तरफ सरसरी निगाह दौड़ाई, लेकिन मैं

t.me/HindiNovelsAndComics

नाकामयाब रहा। हॉल में बहुत अंधेरा था जिस कारण कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं अंधेरे में ही चलने लगा और लाइट का स्विच ढूँढ़ रहा था। हमें कैंडल लेकर आना चाहिए था। हमने कोई प्लानिंग नहीं की थी। बस रुम से बिना किसी तैयारी के निकल दिये, तभी याद आया, मोबाइल तो है मेरे पास, उसी की रोशनी से ढूँढ़ता हूँ।

मेरे मोबाइल में किसी के मैसेज से स्क्रीन फ्लैश हुआ "इस वक्त किसका मैसेज हो सकता है?" मैंने अपने आप से कहा।

मैसेज- "क्या कर रहे हो?"

मैंने अपने आपको सम्भालते हुए, माही को फोन किया जिससे मुझे कुछ राहत महसूस हुयी।

"मैं इस वक्त डिसेक्सन हॉल में हूँ।" आदित्य ने कहा।

"क्या कर रहे हो वहाँ?" माही ने फुसफुसाकर कहा।

"मैं केडेवर में अपनी दुल्हन ढूंढ़ने आया हूँ।"

"मैं सीरियस हूँ बताओ इतनी रात डिसेक्शन हॉल में क्या कर रहे हो?"

"ओह नो!" मैं पता नहीं किसी चीज से टकराकर जमीन पर गिर पड़ा और मेरे हाथ से मोबाईल भी छूट गया। मैं अंधेरे में ही जमीन को हाथ से टटोलने लगा, वैसे भी यहाँ रोशनी नहीं है और अब मोबाईल भी नहीं है। जमीन पर टटोलने पर मुलायम कपड़ा हाथ आया, शायद केडेवर पर ढकने वाला चादर हो। मैंने हाथ से छुआ, तो उस पर कढ़ाई जैसा कुछ काम हो रखा था। कढ़ाई वाले चादर के अलावा मैं जमीन पर अंधेरे में हाथ से चारों तरफ मोबाईल खोजने लगा।कुछ भी समझ नहीं आ रहा क्या करूँ। अचानक महसूस हुआ जमीन पर केडेवर रखा है। मैंने केडेवर को छू कर देखा तो उस पर कुछ कपड़े पड़े थे। मैं बहुत घबरा गया और घुटने के बल जमीन पर हाथ फैलाता हुआ मोबाईल ढूंढ़ने लगा। डर घबराहट से मेरे माथे पर पसीने की कुछ बूंदे झलक आयी। थोड़ी मशक्कत के बाद मोबाईल मिला लेकिन बैट्री कहीं और पड़ी हुई थी। मोबाईल इतनी जोर से गिरा कि मोबाईल और बेट्री दोनों अलग-अलग हो गये। मैं केडेवर के पास आकर बैठ गया।

"कुछ समझ नहीं आ रहा बैट्री कहाँ गयी?" मैं अपने आप से बड़बड़ाया।

अंधेरे में केडेवर के पास बैठा था, तभी पैरों के नीचे मुझे कुछ रखा हुआ महसूस होने हुआ। मैं बहुत खुश हुआ ये बैट्री थी। मोबाईल में बैट्री लगाकर सबसे पहले मैं केडेवर के ऊपर रोशनी करके देखने लगा।

जैसे ही मैंने केडेवर को देखा "श्वेता मैम," मैं इतनी जोर से चिल्लाया कि सारे डिसेक्शन हॉल में मेरी आवाज गूंज गयी। केडेवर को देखकर भी मुझे इतना डर नहीं लगता जितना कि मैम को देखकर लगा। मेरी धड़कने बहुत बढ़ गईं, दिल इतनी जोर से धड़कने लगा जैसे वह बाहर आ जाएगा। मेरे पूरे शरीर में पसीना छूटने लगा। मैं, मैम को जोर-जोर से हिलाने लगा, "मैम उठिए मैम" मैम बेहोश थी। मेरे इतना चिल्लाने, हिलाने के बावजूद भी मैम नहीं उठी।

मेरे पास कोई रास्ता नहीं था। मैंने सोनू को फोन किया, "नव के साथ जल्दी डिसेक्शन हॉल आ जाओ," मैंने बहुत ही डरी हुई आवाज में कहा।

"क्या हुआ तुझे? तू केडेवर के बीच इतना डर गया है कि तेरी आवाज भी नहीं निकल

t.me/HindiNovelsAndComics

रही," सोनू हँसते हुए बोला।

"यार प्लीज मजाक नहीं, यहाँ हॉल में श्वेता मैम बेहोश पड़ी हैं, प्लीज जल्दी आओ" मैंने कपकपाती आवाज में कहा।

"तू वहीं रूक, घबरा मत, हम अभी आते हैं" सोनू ने फोन डिसकनेक्ट कर दिया।

मुझे ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा। कुछ ही देर में सोनू और नव भागते-भागते मेरे पास आए। मैं चुपचाप डरा हुआ-सा मैम के पास बैठा था। मेरे चहरे पर डर, घबराहट और बेबसी के मिले जुले भाव अंकित थे।

"क्या हुआ आदित्य," नव दयनीय आवाज में बोला। "मैम बेहोश कैसे हो गयी, क्या हुआ?"

"तूने, यहाँ आकर क्या कांड किया?" सोनू हड़बड़ाकर बोला, जब उसने श्वेता मैम को फर्श पर लेटा पाया।

"मैंने कुछ नहीं किया। मैं जब यहाँ आया तो उससे पहले ही मैम यहाँ जमीन पर बेहोश पड़ी थी और मैं अंधेरे में मैम से टकराकर गिर गया।" मैं जल्दी-जल्दी सारी बातें सोनू से कह गया।" खैर अब ये सोचो हम क्या करें?" मैंने डरते-डरते कहा। मेरे हाथ अभी भी मिरगी के मरीज की तरह कपकपा रहे थे।

"मैम को लेकर हॉस्पीटल चलते है," नव ने सुझाव दिया।

"चुप कर, तू हमेशा मरवाने के ही काम करेगा, हॉस्पीटल लेकर जाएँगे, तो क्या कहेंगे? मैम हमें कहाँ मिली, हम वहाँ क्या कर रहे थे? सभी हम पर शक करेंगे कि ये सब हमने किया है।" सोनू चिल्लाते हुए बोला। कुछ सेकेण्ड की खामोशी के बाद सोनू ने कहा, "हमें यहाँ से भाग जाना चाहिए। हमें फालतू के लफड़ें में नहीं पड़ना है।"

"सोनू तू शांत रह, इस वक्त तू सिर्फ अपने बारे में सोच रहा है। कोई इतना स्वार्थी कैसे हो सकता है। मैम की हालत देखो, इस वक्त हमें सिर्फ मैम को हॉस्पीटल पहुँचाना है," मैंने कहा।

"नव और सोनू मैम को उठाने में मेरी हेल्प करो," हम तीनों मैम को उठाकर डिसेक्शन हॉल से बाहर निकले। मैम को ले जाने में हम लोगों को थोड़ी खरोंच आयी। बाउन्ड्री के दूसरी पार ले जाना मुश्किल था। हम लोगों ने नाला और भूतेश्वर मंदिर के बजाय हास्पीटल के रास्ते से जाने का फैसला किया।

"तुम दोनों जाकर फटाफट ऑटो लेकर आओ, मैं यहीं मैम के पास रूकता हूँ," मैंने कहा।

"इतनी रात को ऑटो नहीं मिलेगा, फिर भी हॉस्पीटल तक जाकर देखते हैं। इस तरह मैम को इतनी दूर उठाकर ले जाना मुश्किल होगा। रास्ता इतना छोटा भी नहीं है और इस तरह हमें मैम के साथ किसी ने देख लिया, तो भी हम मुसीबत में पड़ सकते हैं। ऑटो में हम कुछ हद तक महफूज रहेंगे। हम अभी ऑटो लेकर आते हैं" नव ने कहा।

करीब 30 मिनट के बाद दोनों सामने से ऑटो में आते हुए दिखे। यहाँ मेरे लिए एक-एक मिनट बहुत भारी हो रहा था। ऐसी हालत में इतना इंतजार करना, मेरे लिए बहुत मुश्किल था। हम मैम को ऑटो में लेकर हॉस्पीटल पहुँचे। मुझे मैम की बहुत फिक्र हो रही थी। कहीं मैम को कुछ हो ना जाए, लेकिन मुझे ये समझ नहीं आया, मैम डिसेक्शन हॉल में

t.me/HindiNovelsAndComics

क्या कर रही थी? शाम 4 बजे तक डिसेक्शन हॉल बंद हो जाता है। हॉस्पीटल पहुँचकर डॉ. अना मैम ने श्वेता मैम का ट्रीटमेंट किया। आज हॉस्पीटल में अना मैम की नाइट ड्यूटी थी। हम तीनों बाहर चेयर पर बैठ गए।

“चलो अब रूम पर चलते हैं अब तो हमारी रेस्पांसिबिलिटी पूरी हो गयी। मैम को हॉस्पीटल पहुँचा दिया। अब जो करना है डॉ॰ को करना है,” सोनू ने हमारी बीच पसरी खामोशी तोड़ते हुए कहा।

“नहीं, अभी नहीं, जब यहाँ आये हैं, तो मैम की तबियत पूछ कर जायेंगे” नव ने कहा।

“यार तुम लोग समझ क्यों नहीं रहे हो? सबको पता चला तो सब हमसे पूछेंगे मैम कहाँ मिली? हम वहाँ क्या कर रहे थे? क्या जवाब है तुम्हारे पास। हम क्या जवाब देंगे बताओ?” सोनू ने अपने सिर के बाल नोंचते हुए कहा। सोनू आज बहुत सदमे वाली हालत में था आज से पहले कभी सोनू को इतना आपे से बाहर जाते हुए नहीं देखा था।

“हम सब कुछ सच-सच बता देंगे,” मैंने कहा।

“क्या बताएगा, यही के इतनी रात गये डिसेक्शन हॉल में थे,” सोनू चीखते हुए बोला।

“हाँ।”

“अगर मैम को कुछ हो गया तो, उसका इल्जाम हमारे ऊपर आएगा। मैम की हालत भी ठीक नहीं लग रही है। मैम की मौत का जिम्मेदार हम होंगे।” सोनू झुंझलाकर बोला।

“चुप करो, मैम को कुछ नहीं होगा,” नव चिल्लाया।

“अगर कुछ हो गया तो कॉलेज से निकाल दिए जायेंगे। हमें कभी किसी और कॉलेज में एडमिशन भी नहीं मिलेगा। डॉ॰ बनने का सपना-सपना ही रह जायेगा, कौन हमारी बात पर विश्वास करेगा?” सोनू राने लगा।

आज पहली बार सोनू को रोता हुआ देख रहा हूँ। “तू इतना मत सोच,” मैंने सोनू को चुप कराते हुए कहा।

“आदित्य मेरा सपना है डॉ॰ बनना, मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकता हूँ, लेकिन मैं अपना सपना अधूरा नहीं रखना चाहता, कॉलेज से हमारा वायकॉट भी हो सकता है,” सोनू ने कहा। और मुझे अपनी ड़बड़बाई आँखो से घूर के देखने लगा।

“तुम लोग क्यों रात को इतना बहस कर रहे हो? मेडिकल स्टूडेंट होकर इतना भी मेनर्स नहीं है कि हॉस्पीटल में कैसा बर्ताव करना चाहिए?” अना मैम ने बाहर आते हुए कहा।

मैम को हमने कॉलेज में देखा है। मैम कॉलेज में शायद फाइनल इयर के स्टूडेंट्स को पढ़ाती हैं और एस.आर.एस. हॉस्पीटल में पेसेन्ट का ट्रीटमेंट करती हैं।

“डॉ॰ अब श्वेता मैम की तबियत कैसी है, क्या हुआ है उन्हें?” सोनू अपने आँसू पोंछते हुए बोला।

“श्वेता की बॉडी में पॉइजन मिला है, उसका ट्रीटमेंट चल रहा है” अना मैम ने कहा।

“पॉइजन उनकी बॉडी में कैसे आया? मैम क्या उन्होंने कोई पॉइजन वाली चीज खा ली थी?”

“नहीं, पॉइजन खाया नहीं गया, इंजेक्शन से बॉडी में पहुँचा है, उसके सीधे हाथ पर

t.me/HindiNovelsAndComics

निशान भी है," मैम ने हाथों के ग्लब्स उतारते हुए कहा।

"लेकिन मैम इंजेक्शन किसने दिया?" मैंने आगे बढ़ते हुए पूछा।

"पहले ये बताओ, तुम्हें श्वेता कहाँ मिली?" मैम ने हम तीनों की तरफ घूरते हुए पूछा।

हम तीनों एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

"मैम, हम आपको सारी बातें बता देंगे लेकिन प्लीज आप किसी को मत बताना," सोनू मैम के पैरों में गिरते हुए बोला।

"हाँ बताओ।"

"मैम आज हम लोगों ने शर्त लगाई थी कि कौन डिसेक्शन हॉल में केडेवर के साथ एक फोटो खींचकर लाएगा, वही बहादुर और विनर होगा। वहीं हमें श्वेता मैम बेहोश हालत में मिली। प्लीज मैम ट्रस्ट मी, हमने कुछ नहीं किया है। अगर आपने हमारे बारे में कुछ बताया तो कल तक पूरे कॉलेज में ये बात आग की तरह फैल जाएगी और आप तो एस.आर.एस में प्रोफेसर हैं। आप तो जानती हैं एस.आर.एस. के अनुशासन, हमें कॉलेज से निकाल दिया जाएगा, प्लीज मैम।"

"उठो, इतना क्यों सोच रहे हो। मैं भी कभी स्टूडेंट थी। मैं समझती, हूँ अक्सर स्टूडेंट ऐसे रात को डिसेक्शन हॉल में जाना और भी पता नहीं क्या-क्या हरकतें करते हैं," मैम ने सोनू को उठाते हुए कहा।

"इसका मतलब आप कुछ नहीं कहेंगी," सोनू के चेहरे पर अब थोड़ी राहत दिखाई दी।

मैम ने सिर हिलाकर सहमति जता दी।

"वैसे एक डॉ॰ को लोगों के राज छुपाने में माहिर होना चाहिए," मैम ने गहरी साँस ली।

"मैम मुझे एक बात पूछना है," मैंने कहा।

"हाँ पूछो।"

"क्या श्वेता मैम ने आत्महत्या की है?"

"नो, श्वेता कभी आत्महत्या नहीं कर सकती, श्वेता मेरी स्टूडेंट भी रही चुकी है, मैंने श्वेता को देखा है। हिम्मत वाली लड़की है, वो ऐसा कभी नहीं करेगी।"

"तो फिर किसी ने जानबूझ कर उन्हें इंजेशन दिया है, " नव ने कहा।

"हाँ लगता तो ऐसा है।"

"लेकिन आप इतना स्योर कैसे हैं?" मैंने मैम के झुर्रियों वाले चेहरे को एकटक देखते हुए कहा।

"श्वेता राइट हैंड से वर्क करती है। श्वेता राइट हैंड से अपने राइट हैंड में इंजेक्शन लगा नहीं सकती। जरूर किसी ने श्वेता से दुश्मनी निकाली है।"

"हूँ," हम तीनों मैम की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

"अब तुम लोग इतनी रात को डिसेक्शन हॉल में नहीं जाओगे?" मैम ने कहा।

"हाँ मैम हम कान पकड़ते हैं, अब से सारी शरारतें बंद, अब से पूरा ध्यान पढ़ाई में ही लगायेंगें," सोनू ने अपने कान पकड़ते हुए कहा।

"सुबह होने वाली है अब तुम लोग रूम पर जाओ।"

"जी मैम।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"क्या हम कल मैम को देखने हॉस्पीटल आ सकते है?" नव ने पूछा।

"हाँ जरूर आ सकते हो।"

हम हॉस्पीलट से सीधा फ्लैट पर गये। हम सब बहुत डरे हुए थे। फ्लैट पर जब पहुँचे तब घड़ी में सुबह के पांच बज चुके थे। अब मुझे ऐसा लगने लगा है कि ये सब हमारी ज्यादा मस्ती का ही नतीजा है। हम यहाँ पढ़ने आये हैं, मस्ती करने नहीं। हम अपने करियर के लिए इतने लापरवाह कैसे हो सकते हैं, हाँलाकि हम तीनों पढ़ने में अच्छे हैं। मन्थली मॉक टेस्ट में भी हम अच्छा स्केर करते हैं। मस्ती के साथ-साथ पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देते हैं, लेकिन अगर आज मैम को कुछ हो जाता, जैसा कि सोनू कह रहा था तो हम कॉलेज से निकाल दिए जाते। हमारा करियर तबाह हो सकता था तब अना मैम भी हमारी कोई मदद नहीं कर पाती। अब मैं मन ही मन सोच चुका था कि मैं अब कोई भी ऐसी शरारत डिसेक्शन हॉल, मिशन मिडनाइट वॉक बगैरह कुछ भी नहीं करेंगे। मस्ती करेंगे पर इस तरह के कांड बिल्कुल भी नहीं। अब नव और सोनू भी समझ चुके होंगे। वो भी ऐसा नहीं करेंगे या यूं कहे आज ऐसा जबरदस्त सदमा जो हमें लगा है, वो आगे कभी भी हमें इस तरह के काम नहीं करने देगा।

■

मैंने आदित्य की फाइल पढ़ी। आदित्य के फ्रेण्ड्स आदित्य को मेरे नाम से चिढ़ाया करते हैं जो लड़कों की खासियत है लेकिन मुझे इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे इस बात से फर्क पड़ता है कि आदित्य मेरे बारे में क्या सोचता है। मैं खुश हूँ, आदित्य ड्रिंक करने की आदत से उबरने की कोशिश तो कर रहा है। यह बात मेरे लिए बहुत मायने रखती है। अब शायद आदित्य की मस्ती भरी फाइल पढ़ने को ना मिलें। आदित्य और उसके दोस्त अपनी मस्तियों को पूर्ण विराम देने का प्रण ले चुके हैं। अब ये प्रण कहाँ तक कामयाब होता है, वक्त ही बताएगा।

क्रोनिक पेरोट्राइटिस डिसीज ने मेरा आदित्य से बात करना लगभग बंद ही करवा दिया। जब तक ऑपरेशन नहीं हो जाता, तब तक हम बात नहीं करेंगे। फोन से कान में इन्फेक्शन और भी बढ़ सकता है, सिर्फ आदित्य के मैसेज और फाइल पढ़कर आदित्य को याद कर सकती हूँ। अक्सर मैं आदित्य को मैसेज में चिरकुट कहकर चिढ़ाया करती हूँ, मेरी मैसेज की शुरूआत चिरकुट शब्द से ही होती है और वो मेरी इस हरकत को बहुत पसंद करता है। आदित्य, बीमारी से गुजर रही इस हालत में तुम मेरे साथ हो। तुम्हारे साथ होने का अहसास ही इतना है जो मुझे खुश होने की शक्ति देता है। यही वो शक्ति है जो मेरे दिल के कोने मे रच बस गई है। मुझे इस बात का अहसास तक नहीं होता कि तुम मुझसे दूर हो, आजकल मेरा दिमाग ऐसे बंद डिब्बे की तरह हो गया है, जहाँ सिर्फ कुछ ही ख्याल जीवित रहते हैं जिसमें सिर्फ तुम हो। आदित्य, श्वेता मैम की मुझे भी बहुत फिक्र है, मुझे भी आदित्य की अगली फाइल का इंतजार रहेगा।

t.me/HindiNovelsAndComics

ऑपरेशन

सोमवार 24 फरवरी, 2003

"आदित्य।"

"हैलो माही।"

"हाय!"

"माही तुम्हारी आवाज थोड़ी सी चेंज लग रही है," आदित्य ने कहा।

"आज ही फेस पर से पट्टी हटी है और टाँके भी आज ही कटे हैं। एक टाँका रह गया है, इसलिए पूरा मुँह नहीं खुल पा रहा है। इसलिए मेरी आवाज चेंज लग रही होगी।"

"कैसी हो तुम?"

"ठीक हूँ।"

"मैंने तुम्हें बहुत मिस किया, मुझे बिल्कुल भी अच्छा फील नहीं होता था बस यही सोचता था, पता नहीं इस वक्त तुम क्या कर रही होगी? तुमसे बात करने की, तुम्हें याद करने की आदत जो हो गयी थी।"

"अच्छा हम अब चेटिंग करते हैं। तुम फोन रखो हम बाद में बात करेंगे," आदित्य ने कहा।

"क्यों, बात नहीं करना चाहते हो? इतने दिनों बाद बात कर रही हूँ, फिर भी बात नहीं करनी... क्या बात है?"

"कुछ भी बात नहीं है, आज ही तुम्हारे टाँके खुले हैं। तुम्हें बात करने में प्राब्लम हो रही होगी। तुम बहुत लापरवाह हो," आदित्य ने हक जमाते हुए कहा।

"नहीं, मैं ठीक हूँ, मुझे कुछ भी प्राब्लम नहीं हो रही है। आज तो मुझे बात करने का मौका मिला है, ऑपरेशन के बाद किसी से बात भी नहीं की है। मुँह पूरा बंद रहता था। मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ, डॉ॰ ने परमिशन दे दी है। ऑपरेशन 4 फरवरी को हुआ था। बहुत वक्त हो गया, उसके पहले भी एक्स्ट्रा केयर में रहना पड़ता था। प्लीज मुझसे बात करो। इस वक्त मैं बहुत अजीब-सा खालीपन महसूस कर रही हूँ," माही ने कहा।

"हाँ, मैं तुम्हारे साथ हूँ... कहाँ हो?"

"हॉस्पीटल में।"

"डिस्चार्ज नहीं किया?"

"कल करेंगे।"

"अभी अकेली हो?"

"नहीं, दादी पास में हैं, अभी वो थक कर सो चुकी हैं, दो रातों से वो सो नहीं पाईं थी इसलिये उन्हें नींद आ गयी।"

"दादी सोई क्यों नहीं थी?" आदित्य ने गहरी साँस लेते हुए पूछा।

"मेरे टाँकों में से ब्लीडिंग हो रही थी, इसलिए वो पूरी रात मेरे पास जागती रही।"

"अब तो नहीं हो रही ना ब्लीडिंग?"

"नहीं, अब तो ठीक हूँ लेकिन ऑपरेशन ने बहुत परेशान कर दिया है, ये हॉस्पीटल के 15 दिन मेरे लिए सदमें भरे दिन थे। मैं अपना ऑपरेशन कभी भूल नहीं पाऊँगी।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"मैं समझ सकता हूँ तुम पर क्या बीती होगी। तुम बहुत स्ट्रांग हो, जो तुम इतना सब सहन कर रही हो। ऑपरेशन के दौरान क्या हुआ था?"

"ऑपरेशन के एक दिन पहले ही मुझे हॉस्पीटल में एडमिट होना पड़ा। सुबह से ही मेरे हाथ में केनुला लगा दिया गया था। मुझमें ब्लड की कमी थी तो एक ड्रिप ब्लड की लगाई गयी और शाम 7 बजते-बजते हर 2 घंटे में कम्पाउन्डर एक इंजेक्शन मेरे हाथ में लगा जाता। मेरा ऑपरेशन रात आठ बजे होना था और मैंने तुम्हें बताया था ना कि मेरे दादू के फ्रेंड एम्स हॉस्पीटल में सर्जन हैं, उनकी ही देख रेख में मेरा ऑपरेशन हुआ।"

"हाँ, तुमने बताया था।"

"7:30 बजे मुझे ब्लू गाउन पहना दी गई। कम्पाउन्डर जो सुबह से मुझे इंजेक्शन लगा रहा था; अपने साथ ऑपरेशन रूम तक ले गया। वहाँ तक दादू को जाने की परमिशन नहीं थी। वो बाहर ही रुक गये। मैं ऑपरेशन थियेटर में खड़ी थी जो कि एक छोटा-सा रूम था, जिसमें दवाइयों की बहुत स्मैल आ रही थी। ए.सी. रूम टेंप्रेचर पर चल रहा था। डॉ॰ एक टेबल के आस-पास खड़े थे। सभी ऑपरेशन की तैयारी कर रहे थे। उनकी सिर्फ आँखे दिखाई दे रही थी। डॉक्टर्स ने ब्लू गाउन पहन रखा था और हाथों में ग्लब्स। मुझे सब अजीब-सा लग रहा था, इस बंद-बंद रूम में दवाईयों की स्मैल से मुझे घुटन हो रही थी और हाथ-पैर डर के कारण कांप रहे थे। मैंने ऑपरेशन के पहले बहुत हिम्मत जुटाई थी कि मैं डरूँगी नहीं। डॉ॰ अंकल, दादू दादी, सब मेरे साथ हैं। जल्दी सब ठीक हो जाएगा, लेकिन ऑपरेशन थियेटर में पहुँचते ही मेरा सारा हौंसला डगमगा गया।"

"थोड़ी देर में डरते-डरते, मैं ऑपरेशन बैड पर पहुँची और चारों तरफ नजर दौड़ाई। मैं डरी हुई थी मुझे लेट्रल पोजीशन में लेटाया गया और वीटाडिन स्प्रिट से कान के आस-पास सफाई की गई। ऑपरेशन की तैयारी हो जाने के बाद डॉ॰ अंकल दादू और अपने बारे में कुछ बता रहे थे लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था क्योंकि मेरा पूरा ध्यान तो बाकी के डॉक्टर्स पर था, जो मेरे ऑपरेशन की तैयारी में थे। फिर एक डॉ. ने मेरे मुँह पर कुछ रखा, जिसमें से तीखी स्मैल आ रही थी। उसके बाद मुझे कुछ नहीं पता।"

"एनेस्थीसिया होगा, उससे कुछ देर के लिए बेहोश हो जाते हैं," आदित्य ने कहा।

"हाँ, मैं बेहोश हो गयी थी उसके बाद पता नहीं मुझें कितनी देर बाद होश आया। एक पल के लिए मुझे महसूस हुआ, मेरा मुँह खुला हुआ है और मुँह में कुछ रखा हुआ है। फिर मुझे तब होश आया जब मैं स्ट्रेचर पर थी और मुझे अपने रूम में ले जाया गया। उसी रूम में जो ऑपरेशन से पहले मुझे मिला था। जहाँ दादू, दादी मेरे पास थे, मैं दो घण्टे बाद पूरी तरह होश में आयी। होश में आने के बाद, मेरे कान के पास बहुत तेज दर्द हो रहा था। मेरे फेस पर पट्टी लगी हुई थी, दर्द इतना बढ़ गया कि तेज दर्द के कारण मेरा सिर फटा जा रहा था। डॉ॰ अंकल ने आकर इंजेक्शन लगाया, तब मेरा सिर दर्द कम हुआ।"

"हम्म, लिक्विड फूड मिलता होगा?" आदित्य ने पूछा।

"हाँ, कुछ दिनों तक लिक्विड फूड दिया जाता था कभी-कभी दादी दाल का पानी देती थी जिसमें ना नमक, ना मिर्ची, कुछ भी नहीं होता था। सब एकदम बेस्वाद होता था जो मुझे जबरदस्ती पीना पड़ता था। मेरे ये दिन बहुत ही दर्दनाक निकले हैं। मैं इतनी तकलीफों से गुजरी हूँ, कि बता नहीं सकती।"

t.me/HindiNovelsAndComics

फोन पर बहुत जोर से बर्तन गिरने की आवाज आयी। आदित्य बालकनी में बात कर रहा था वहाँ तक आवाज सुनाई दी।

“क्या हो रहा है?” आदित्य ने अपने दोस्तों से कहा।

“आदित्य ये आवाज कैसी थी?” मैंने बेसब्री से पूछा।

“माही, दोस्त किचन में खाना बना रहे हैं इसलिए बर्तनों की आवाज हो रही है। हम लोग बिना बर्तन पटके खाना बना ही नहीं सकते। सोनू को खाना बनाना नहीं आता, अक्सर बर्तन वो ही गिराता रहता है।”

“अच्छा तो आजकल तुम लोग खाना बनाते हो क्या?” मैंने पूछा।

“हाँ।”

“क्यों, मेस का खाना बंद कर दिया?” मैंने कहा।

“हाँ, कुछ टाईम पहले मेस में जो महाराज थे वो चले गये। वो बहुत अच्छा खाना बनाते थे। उनके जाने के बाद अब मेस में खाना अच्छा नहीं मिलता। दाल, सब्जी, खिचड़ी, चावल, हर चीज का टेस्ट एक जैसा होता है, सिर्फ नाम अलग-अलग होते हैं।”

“अच्छा, कैसे बनाते हो खाना?”

“हम पाँचों मिलकर बना लेते हैं। मैनेज हो जाता है, कॉलेज के बाद जो थोड़ा फ्री टाईम मिलता है उसमें हम सभी आपस में काम बाँट लेते हैं जिससे काम जल्दी हो जाता है। कॉलेज जाने से पहले सारी तैयारी करके जाते हैं और आने के बाद सिर्फ राटी बनानी होती है।”

“सभी को केवल 15 मिनट काम करना होता है; बस लजीज खाना तैयार। खाना, पानी, हवा, अग्नि की उचित मात्रा का ही नाम है।” आदित्य ने कहा।

“क्या बात है चिरकुट लजीज खाना,“ मैंने हँसते हुए कहा। बस थोड़ा-सा ही हँसी, ज्यादा हँस नहीं सकती थी, वरना कान में दर्द होने लगता था, जो कभी-कभी अपनी सहन सीमा के पार होता था।

“लाइफ भी किसी रेसिपी की तरह ही होती। जो तुम्हें अपने में मिला लेती है,” आदित्य ने कहा।

“क्या नाम है तुम्हारे टिफिन सेंटर का?” मैंने कहा।

“हऽऽम सोचने दो,” आदित्य खीं खीं करके हँसने लगा।

“सोच लिया,” आदित्य ने कहा।

“बताओ क्या सोचा है?”

“रविश टिफिन सेंटर,” यह कहते हुए आदित्य फिर से हँसने लगा।

“तो फिर आदित्य, मुझे भी अपने रविश टिफिन सेंटर का मेम्बर बना लो।”

“हाँ, हमारे जे-86 और रविश टिफिन सेंटर आपका खुले दिल से स्वागत करता है।”

“मेम्बर बनने के लिए मुझे क्या करना पड़ेगा?”

“मेम्बर बनने के लिए तुम्हें लाइफ टाइम मेरी दोस्ती कबूल करनी होगी।”

“मुझे ये मंजूर है। आपकी दोस्ती मुझे कबूल है, कबूल है, कबूल है।”

इसके बाद हम दोनों के लिए अपनी-अपनी हँसी रोक पाना मुश्किल था। मैं आदित्य के साथ बात करके बहुत अच्छा महसूस करती हूँ, आज भी आदित्य से बात करके बहुत खुश

t.me/HindiNovelsAndComics

हूँ।

"अच्छा ये तो बताओ, खाने में क्या-क्या है?"

"मैडम, जो आप ऑर्डर देंगी, हम वही आपको परोसेंगे," आदित्य ने एक वेटर के अंदाज में कहा।

"तो ऐसा करो कुछ भी अच्छा-सा मसालेदार, चटपटा-सा बनाकर भेज दो, मेरे तो मुँह में पानी आ रहा है, जल्दी भेजो," मैंने कहा।

"कैसे भेजूँ मैम, बाय मेसेज या बाय पार्सल?" आदित्य ने नटखट अंदाज में कहा।

ये सुनते ही मैं अगले पल उदास हो गई आखिर भेजोगे कैसे?

"अच्छा मेरे दिमाग में एक आईडिया आया है।"

"बताओ।"

"तुम्हें बहुत पसंद आएगा," मैंने कहा।

"अब बताओगी तभी तो पसंद आएगा ना।"

"तुम जो भी बनाओ मेरे लिए उसे फूड ए.टी.एम. में डाल देना," मैंने उत्सकुता में पागलपन जैसी बात कही। कभी-कभी मैं ऐसी बातें करती हूँ। ऐसी पागलपंती मुझे पसंद है और ये भी सोचती हूँ कि काश ऐसा भी पॉसीबल हें पाता।

"फूड ए.टी.एम. मतलब क्या? मैं समझा नहीं" आदित्य ने कहा।

"ए.टी.एम. जानते हो?" मैंने पूछा।

"हाँ, जानता हूँ।"

"बताओ क्या होता है?"

"मतलब हम अपने जमा पैसे एक सिटी से दूसरी सिटी, मतलब जब भी जहाँ भी जरूरत हो ए.टी.एम. से निकाल सकते हैं।"

"हाँ, तो मैं भी यही कह रही हूँ।"

"तुम्हारे कहने का मतलब ये है कि मैं यहाँ से ए.टी.एम. में खाना पैक करके डाल दूँ और वहाँ तुम्हें वो मिल जाए।"

"हाँ, बहुत समझदार हो तुम तो," मैंने आदित्य के मजे लेते हुए कहा।

"आईडिया बुरा नहीं है। तुम्हारे दिमाग में ऐसे-ऐसे आईडिया आते कहाँ से हैं?"

"क्या करूँ, पूरा दिन बिस्तर पर एक लाचार मरीज की तरह पड़ी रहती हूँ और अच्छा-अच्छा खाना याद करती हूँ। दिमाग में अपने आप आईडियाज आ जाते हैं। ऐसे आईडियाज के लिए सोचना थोड़े न पड़ता है," मैंने हँसते हुए कहा।

"तुम पूरी तरह से ठीक हो जाओ। जब तुम यहाँ आओगी ना, तब मैं तुम्हें लजीज पकवान बनाकर खिलाऊँगा, जो भी तुम कहो।"

"पक्का, प्रोमिस!"

"हाँ, पक्का वाला।"

"भूलना मत।"

"सवाल ही नहीं उठता।"

"अच्छा बाय, बाद में बात करेंगे। दादी जाग गयी हैं," मैंने दादी को देखते ही कहा।

"इच लगे डिंच " आदित्य ने कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

फाइल

सोमवार 27 जनवरी, 2003

हम दो दिन तक मैम के पास हॉस्पीटल जाने की हालत में नहीं थे। हम बहुत डरे हुए थे। अब हम सिर्फ एक चाय की दुकान पर जाते हैं जो हमारे फ्लैट के पास है। उसके अलावा कहीं और नहीं जाते। यह कहना गलत न होगा कि उस रात के बाद सोनू, नव और मैं बहुत डरे हुए है। हम भीष्म प्रतिज्ञा कर चुके थे कि फिर कभी इस तरह की मस्ती नहीं करेंगे। हमनें अपने आप को संभाल लिया है ये सोचते हुए कि कुछ भी गलत नहीं हुआ है लेकिन सोनू इस बात को नहीं भुला पा रहा है कि अगर मैम की डेथ हो जाती तो...। उस वक्त मैम की हालत बहुत नाजुक थी ऐसे में मैम की मौत के जिम्मेदार हम तीनों होते।

हम तीनों ने ये बात किसी को भी नहीं बताई, फ्लैट पर कोई नहीं जानता कि उस रात हम फ्लैट से गायब थे।

हम तीनों हिम्मत जुटाकर हॉस्पीटल पहुँचे, मैम बैड पर लेटी हुई थी। अब उनकी हालत ठीक हो रही थी। हम मैम के पास जाकर खड़े हो गये लेकिन हमारे मुँह से एक लफ्ज भी बाहर नहीं आ रहा था।

मैम ने हमारी तरफ देखा, मैम सोयी नहीं थी, सिर्फ आँख बंद किए लेटी थी। हमारे रूम में आने से मैम ने आँखे खोली।

“मैम, अब आपकी तबियत कैसी है?” मैंने पूछा।

“अब मैं ठीक हूँ, आओ बैठो।”

“नहीं मैंम, हम यहीं ठीक हैं,” सोनू ने जल्दी से कहा।

कभी-कभी सोनू की ऐसी बचकानी हरकतें हमारी समझ की सीमा से बाहर होती हैं।

“घबराओ मत, बैठो।” हम पास रखे स्टूल पर बैठ गये।

“मुझे अना मैम ने सब कुछ बता दिया है,” श्वेता मैम ने कहा और हल्का-सा मुस्कुरा दी।

“तुम लोग मुझे यहाँ क्यों लेकर आये?” मैम ने कहा।

मैम के कहने का मतलब हम समझ नहीं पाए। मैम को तो हमें थैंक्स बोलना चाहिए था लेकिन मैम तो ऐसे रियेक्ट कर रही हैं, जैसे इंजेक्शन मैम ने खुद लगाया था। शायद मैम जीना नहीं चाहती है।

“मैम,” मैं सिर्फ एक ही शब्द बोल पाया।

मैम, छत की दीवार को घूर-घूर के देखने लगी।

“मैम, क्या मैं कुछ पूछ सकता हूँ?” मैंने कहा।

“हाँ, पूछो।”

“क्या आपने खुद अपने हाथ में पॉइजन वाला इंजेक्शन लगाया?”

“नहीं।”

“तो फिर?” मैंने पूछा।

“क्या करोगे जानकर?” मैम ने रूखी आवाज में कहा।

“मैम आप हम पर विश्वास कर सकती हैं, हम किसी से कुछ नहीं कहेंगे,” मैंने कहा।

“तो सुनो,” मैम ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"मैं उस दिन डिसेक्शन हॉल को बंद करके घर जाने की तैयारी में थी। मेरे हस्बैंड आये और उन्होंने मेरे हाथ पर पॉइजन वाला इंजेक्शन लगा दिया।" मैम की आँखों के किनारों से मोटे-मोटे आँसू गाल तक लुढ़क आये।

"लेकिन क्यों?"

"वो मुझे मारना चाहते हैं।"

"क्यों मैम?" नव ने पूछा।

"वे पसर्नल बातें हैं। तुम बीच में ना ही पड़ो तो अच्छा है, तुम्हारा इतना जानना काफी होगा।"

"ओके मैम, अगर आपको हमारी हेल्प की जरूरत हो, तो आप कह सकती हैं मतलब हम उनके खिलाफ रिपोर्ट..." नव पूरी बात कहते-कहते रूक गया।" नव समझ गया होगा कि किसी के

पसर्नल मैटर में ना ही बोले तो ज्यादा बेहतर है।

"अना मैम सब संभाल लेंगी। उन्होंने सबको यही बताया है कि उस दिन डिसेक्शन हॉल में किसी जहरीले कीड़े ने काटा है और तुमसे भी यही उम्मीद करती हूँ कि तुम भी किसी को सच्चाई नहीं बताओगे," ष्वेता मैम ने कहा।

"हाँ।" हम सभी ने सहमती जताई।

फाइल,
बुधवार, 5 मार्च, 2003

हमारे फर्स्ट इयर के प्रोफेशनल शुरू हो गये। हम सभी फिर एग्जाम की हेडेक से गुजर रहे थे लेकिन हमारा डबलबैट्री मतलब सोनू अपनी बचकानी हरकतों से बाज नहीं आता। उसकी यही हरकतें हमारे इन्टरनेंमेंट का जरिया बनती हैं।

अगर सोनू हमारे फ्लैट, जे-86 पर नहीं होता तो हम इन्टरटेनमेंट का स्त्रोत खो देते।

माही, आज जो हुआ अगर तुम पढ़ोगी तो हँस-हँस के पागल हो जाओगी। हम जिस फ्लैट में रहते हैं हमारा सोनू उन मकान मालिक की लड़की को पसंद करता है। उसका नाम रितिका है। रितिका 12वी क्लास में है, साथ-साथ पी.एम.टी. की तैयारी भी कर रही है। तो हमारी आंटी ने हम लोगों से कह दिया है कि एक घंटा टाइम निकालकर रितिका को अगर पढ़ा सको तो पढ़ा दिया करना। अब ऐसा मौका सोनू कभी नहीं गंवाता। सोनू ऐसे मौके के ही इंतजार में था जिससे कि वो रितिका से बात कर सके और अब तो आंटी की तरफ से भी उसे ग्रीन सिग्नल मिल गया। अब सोनू का नाम हम डबल नहीं 4 बैट्री बुलाते हैं। रितिका भी चश्मा लगाती है और रितिका ने सोनू का प्रपोजल भी एक्सेप्ट कर लिया।

अभी फर्स्ट प्रोफेशनल चल रहे है फिर भी सोनू रितिका को पढ़ा ही देता है। लेकिन आज सोनू के साथ छोटा सा हादसा हो गया। पता नहीं रितिका और आंटी ने सोनू के बारे में अपनी क्या विचारधारा बना ली होगी।

फर्स्ट प्रोफेशनल के कारण हम मॉर्निंग में कॉलेज जाने के लिए जल्दी में होते हैं क्योंकि एग्जाम से आधा घंटा पहले कॉलेज पहुँचना होता है, तो हम सब तैयार होने के बाद धुले हुए कपड़े रूम में ही चेयर पर इधर-उधर, जहाँ भी जगह मिलती है डाल देते हैं। छत पर

t.me/HindiNovelsAndComics

कपड़े सुखाने कोई नहीं जातो। सोनू अपने अण्डर गारमेंट्स बाहर रखी हुई साईकल पर डाल देता है। वो साइकल सुबह से लेकर हमारे कॉलेज से आने तक वहीं रखी रहती है, इसलिए सोनू कॉलेज जाने से पहले कपड़े डाल देता है और कॉलेज से आकर उठा लेता है। रितिका 4 बजे साईकिल लेकर जाती है। सोनू ने रोज की तरह आज भी अपने कपड़े उस पर डाल दिये और उठाना भूल गया। रितिका अपनी क्लास के लिए 4 बजे निकली, लेकिन उसका ध्यान सीट के पीछे रखे कपड़े पर नहीं गया। क्लास पहुँचते-पहुँचते सोनू की बनियान तो रास्ते में गिर गयी थी। लेकिन उसके अण्डरवियर साईकिल पर लटकी, साईकिल की शोभा बढ़ा रही थी। रितिका के क्लास पहुँचने पर सभी रितिका को घूर-घूर कर देख रहे थे। रितिका की दोस्त ने उसे जब बताया कि उसकी साईकिल पर ये क्या लटका हुआ है, उस वक्त हम तो रितिका का चेहरा नहीं देख पाये। जरूर रितिका बहुत सकपका गई होगी कि ये क्या है? और तब उसे समझ आया कि इसलिए सब उसे घूर-घूर के देख रहे थे। रितिका का क्या हाल हुआ होगा, इस बात का अंदाजा आन्टी की बातों से साफ-साफ लगाया जा सकता है।

आन्टी ने बताया कि रितिका बिना क्लास लिये फटाफट घर वापस आ गयी। सब उसका मजाक बना रहे थे इसलिए वो थोड़ा नाराज भी थी और गुस्से मे भी।"

आन्टी हम लोगों के पास आकर पूछ रही थी, "किसके कपड़े थे?" जब सोनू ने सर झुका कर कहा "मेरे थे और मैं उठाना भूल गया" तो आन्टी ने आज सोनू की जमकर क्लास ले ली।

आज सोनू रितिका को पढ़ाने भी नहीं गया, एक-दूसरे ने बात भी नहीं की। आखिर बो बात करें भी तो किस मुँह से, सोनू ने यही कहा कि कम से कम कुछ दिन तक ना तो वो रितिका को पढ़ाएगा और ना ही कोई बात करेगा। जब तक ये अण्डरवियर वाली बात पुरानी न हो जाए।

t.me/HindiNovelsAndComics

माँ पापा की कहानी

शुक्रवार **20** मार्च**, 2003**

"हाय! एडवोकेट साहिबा।" मेरे फोन उठाते ही सामने आदित्य की आवाज सुनाई दी, "क्या चल रहा है?"

"कुछ नहीं,"

"बहुत देर बाद फोन उठाया, मोबाइल में देखो कितने कॉल हैं" आदित्य ने कहा।

"हाँ, मैंने देखा 40 मिस कॉल थे, हॉस्पीटल से आने के बाद मैं ज्यादातर दादी के पास रहती हूँ और मोबाइल साईलेन्ट मोड़ पर रूम में रखा होता है।"

"अच्छा है जितना अपनो के साथ वक्त बिताओगी, उतना ही तुम्हें अच्छा लगेगा और दादी से क्या गप्पें लड़ा रही थी?" आदित्य ने हँसते हुए पूछा।

"दादी मुझे अपनी शादी की चुनरी दिखा रही थी, बहुत सुंदर चुनरी है, उसमें सोने के घुँघरू, जरी का गोटा लगा है, मुझे वो चुनरी बहुत पंसद है।"

"हूँ," आदित्य ने सिर्फ इतना ही कहा।

"दादी कह रही थी, कि जब मेरी शादी होगी तो वो चुनरी दादी मुझे ओढ़ाऐंगी," मैंने बहुत खुश होते हुए कहा।

"ओह!...तो तुम चुनरी के लिए शादी कर लोगी।" आदित्य ने आश्चर्य से कहा।

"क्यों नहीं करूँगी भला शादी, हर लड़की की शादी होती है, मेरी भी होगी। मुझे ये सुंदर वाली चुनरी मिल जाएगी।"

"कभी-कभी ये लड़कियाँ समझ से परे होती हैं, कभी तो इतनी समझदारी की बातें करेंगी तो कभी ऐसे बच्चों जैसी। अब चुनरी दिलाने से भला कोई शादी करता है।"

"ये लडकियों वाली बातें है, तुम नहीं समझोगे।"

"ओ.के. मैडम, बताओ अब तो घर पर आ गई हो ना, अब तो तुम्हें हॉस्पीटल से आजादी मिल गई?"

"हाँ।"

"अब इतने मरियल आवाज़ में क्या हाँ बोल रही हो, अभी तो चुनरी के लिए बहुत खुश हो रही थी और तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम्हें हॉस्पीटल से मुक्ति मिल गई," आदित्य ने कहा।

"नहीं, मैं हॉस्पीटल में रहना चाहती थी," मैंने कहा। अब मेरे चेहरे से पूरी तरह हँसी गायब हो गयी थी।

"क्या!" आदित्य चौंकते हुए बोला।

"मुझे हॉस्पीटल में रहना अच्छा लगता था, मैं घर नहीं आना चाहती थी, वहीं रहना चाहती थी," मैंने रूँआसे होकर कहा।

"माही, तुम क्या कह रही हो? सच बताओ क्या हॉस्पीटल में कोई डॉ. पंसद आ गया क्या?" आदित्य ने मूड़ी अंदाज में कहा।

"हूँ!"

"हूँ क्या, अच्छा अब बताओ कुछ तो बात है, तुम बहुत अपसेट लग रही हो।" आदित्य

t.me/HindiNovelsAndComics

ने कहा।

"आदित्य, मैं वहाँ रहना चाहती थी, इतने सालों बाद मैं माँ के इतना करीब थी। मैंने हॉस्पीटल में अपनी माँ के साथ को महसूस किया। कम से कम वो वक्त ऐसा था जब माँ मेरे साथ थी।"

"क्या वहाँ तुम अपनी माँ से मिलती थी?"

"हाँ।"

"तो माँ को घर बुला लो।"

मैं कुछ नहीं बोली, बस सिसकियाँ आने लगी।

"माही, चुप हो जाओ, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, तुम रो क्यों रहीहो?"

"मैं रो नहीं रही हूँ।"

"तुम झूठ बोल रही हो, वो भी मुझसे।"

"आदित्य, बहुत सालों से मेरी माँ एम्स हॉस्पीटल में एडमिट हैं, वो कोमा में हैं। जब मैं हॉस्पीटल में एडमिट थी, तो दादू ने अपने फ्रेंड से कहकर, मुझे और मम्मी को एक ही रूम में रखा। मेरा बैड मम्मी के बैड के पास था। डॉ॰ अंकल ने मेरा ऑपरेशन किया, उनकी देखरेख में मम्मी का इलाज चल रहा है।"

"मैंने एक अरसे के बाद अपनी मम्मी को देखा है। उनका फोटो है मेरे पास, लेकिन जब मैंने मम्मी को हॉस्पीटल में देखा, तो अब मम्मी फोटो जैसी सुन्दर नहीं दिखती हैं। मेरी मम्मी बहुत सुन्दर थी, कोमा में जाने के बाद से ही मम्मी की ऐसी हालत हुई है।"

आदित्य चुपचाप मेरी बात सुन रहा था। यह पहली बार था जब मैंने आदित्य के सामने माँ का जिक्र किया था।

"आदित्य जो लोग मेरे सबसे करीब होते हैं, जिन्हें मैं सबसे ज्यादा प्यार करती हूँ वो मेरे साथ नहीं रहते; वो मुझसे दूर चले जाते हैं। पहले माँ फिर परी, मैं भगवान से यही कहती हूँ कि, मैं अपने दादी-दादू से बिल्कुल भी प्यार नहीं करती हूँ, ताकि वो मुझसे कभी दूर ना हो।"

"माही, तुम चिंता मत करो। वो जल्दी ठीक होकर घर आयेंगी," आदित्य ने सांत्वना देते हुए कहा।

"कब आयेंगी? यही सोचते सोचते बहुत साल हो चुके हैं।"

"माही, तुम्हारी मम्मी को क्या हुआ? जिससे कि वो कोमा में चली गयी?" आदित्य ने पूछा।

"आदित्य, जब मैं 8 साल की थी, पापा अपना सामान पैक करके जा रहे थे, पापा अक्सर काम के सिलसिले में विदेश जाया करते थे! पापा वकील थे। दादू के कहने पर पापा वकील बने, लेकिन पापा को वकालत में कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर पापा ने मार्बल्स फैक्ट्री का बिजनेस शुरू किया उसी के सिलसिले में अक्सर पापा विदेश जाया करते थे लेकिन इस बार पापा हमें हमेशा-हमेशा के लिए छोड कर जा रहे थे, पापा ने कह दिया कि अब वो कभी वापस हमारे पास नहीं आयेंगे, उस दिन मेरा बर्थ-डे था।"

"मम्मी, दादू, दादी ने पापा के सामने हजार मिन्नते की, मम्मी उनके पैरों पर गिरकर मिन्नतें करती रही। पापा का दिल, पता नहीं क्यों इतना कठोर हो गया कि उन्हें दादू-दादी

t.me/HindiNovelsAndComics

के आँसू भी दिखाई नहीं दिए। मैं उस वक्त इतना समझने की स्थिति में नहीं थी कि ये सब क्या हो रहा। बस इतना जानती थी, पापा जा रहे हैं, और घर पर सब रो रहे हैं। दादू बोल रहे थे, 'तू क्यों जा रहा हैं,' हमसे क्या गलती हो गयी?"

"मैंने भी दादू की बात को दोहरा दिया, "क्यों जा रहे हो?" लेकिन पापा ने एक बार भी मेरी तरफ नहीं देखा। उन्हें एक बार भी हमारा ख्याल नहीं आया कि उनके जाने के बाद मेरा, मम्मी, दादू, दादी का क्या होगा। पापा सबके रोकने के बावजूद भी चले गये। मम्मी, पापा के जाने का जिम्मेदार अपने आप को समझने लगी। उन्हें ऐसा लगता कि वह हम सबकी गुनहगार हैं। उनके कारण ही पापा घर छोड़ कर गये, जबकि ऐसा नहीं था। मम्मी रात-दिन सिर्फ रोया करती थी। उन्होंने मुझसे भी बात करना बंद कर दिया। दादी की लाख कोशिशों के बाद भी मम्मी यह सदमा भुला नहीं पायी थी। वो एक दिन रूम में बेहोश हो गयी, डॉक्टर को दिखाया तो पता चला कि मम्मी सदमें के कारण कोमा में हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करती थी, मेरी मम्मी को वापस लौटा दो लेकिन भगवान जब मेरी प्रार्थना नहीं सुनते, तो मैं भगवान को ही कोसने लगती। उस वक्त जाना कि जब हम खुश होते हैं, तब कभी भी भगवान को याद तक नहीं करते हैं, लेकिन जब हम किसी मुश्किल में होते हैं, तो पता नहीं क्यों सबसे पहले भगवान को ही कोसते हैं।

साल बदलते रहे! और वक्त के साथ-साथ डॉक्टर ने भी हमें मम्मी के ठीक होने का भरोसा दिलाना बंद कर दिया। अब डॉक्टर भी कुछ नहीं कहते, मैं जैसे-जैसे बड़ी हुई मुझे समझ आने लगा, आखिर पापा हमें छोड़कर क्यों चले गये। उन्हांने विदेश में किसी से शादी कर ली थी। वहाँ की नागरिकता भी पापा को मिल गयी। पापा ने जिस औरत से शादी करने के लिए, मेरी माँ का साथ छोड़ दिया था, उस औरत ने कुछ ही सालों में पापा को तलाक दे दिया। पापा जब अकेले हुए तो उन्हांने दादू से बात करना शुरू किया। दादू भी पापा को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे, लेकिन मेरे दादू का मन पिघल गया, वो आज भी पापा से बात करते हैं, लेकिन मैं अपने पापा से बिल्कुल भी प्यार नहीं करती हूँ। मेरी माँ की हालत, मेरे दादू-दादी का अकेलापन, मेरा बचपन इन सब बातों के लिये सिर्फ पापा जिम्मेदार हैं। पापा की एक गलती की सजा हमारा पूरा परिवार आज तक भुगत रहा है। मैं पापा से बहुत नफ़रत करती हूँ। बेटी होने के नाते मुझे कोई हक नहीं बनता; मैं अपने पिता से नफरत करूँ, लेकिन उनके द्वारा दिये गये जख्म इतने गहरे हैं कि मैं मजबूर हूँ उनसे नफरत करने के लिए। प्यार, रिश्ते या माता पिता देखकर नहीं होते। माता पिता की आपसी लड़ाई में सबसे ज्यादा बच्चे की जिंदगी पिसती है। क्या माता-पिता का इतना भी फर्ज नहीं बनता, अपने आपसी झगडां से उपर उठकर ये देख सकें कि वो अपने बच्चों के लिये कैसा भविष्य बना रहे हैं। कितना न्याय कर रहे हैं," मैंने अपने दर्द को बाहर निकालते हुए कहा।

जब मेरा अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रहा, तब मैं फूट-फूट के रोने लगी। "हम (मैं और दादी) पापा से कभी बात नहीं करते हैं, ना करेंगे, पापा हमें छोड़कर क्यों गये?"

मेरे अंदर थोड़ा गुस्सा भी था, लाचारी थी, अंदर बहुत सारी भावनाएँ थी! अंदर बहुत तूफान चल रहा था, जिसे मैं अंदर ही रखती थी। कभी-किसी से नहीं कहती थी लेकिन कई बार ऐसा होता है, जब हम अपनी भावनाओं पर काबू नहीं कर पाते। आज उसी भावना मे

t.me/HindiNovelsAndComics

बहकर मैं सब कुछ बोल गयी और आदित्य मेरा अच्छा दोस्त है, जिससे मैंने अपनी सारी बातें कहकर कुछ सुकुन महसूस किया, लेकिन आँसू अभी भी नहीं थम रहे थे।

"आदित्य, मैं अपनी मम्मी को बहुत याद करती हूँ, अक्सर उनकी कमी महसूस करती हूँ," मैंने रोते हुए कहा।

इस वक्त मैं आदित्य के सामने आत्मसमर्पण कर चुकी थी, आदित्य मुझसे कुछ भी पूछता है, मैं सब कुछ बता देती हूँ। इसके सिवा और मेरी लाइफ में बताने लायक कुछ था ही नहीं।

"माही, तुम रोना बंद करो, रोने से किसी भी समस्या का हल नहीं होता। थोड़ी हिम्मत रखो, मैं समझ रहा हूँ कि तुम किन तकलीफों से गुजरी हो। सब ठीक हो जाएगा," आदित्य मुझे सांत्वना देते हुए बोला।

"आदित्य, मैं जानती हूँ कि कुछ भी ठीक नहीं होगा! कभी-कभी मैं अपने आप को बहुत लाचार महसूस करती हूँ।"

मेरे लगातार इतनी देर से बात करने और रोने के कारण मुझे टाँकों वाली जगह पर बहुत तेज दर्द हो रहा था, इसलिये मैंने रोना बिल्कुल बंद कर दिया।

"माही, तुम मम्मी को बहुत मिस करती हो ना?"

"हाँ, मैं उन्हें बहुत मिस करती हूँ, उनसे बात करना चाहती हूँ, मम्मी को अपने पास महसूस करना चाहती हूँ।"

"माही, मेरी मम्मी भी यहाँ आयी हुयी है," आदित्य ने कहा।

"क्यों?"

"जयपुर घुमने," आदित्य ने जवाब दिया।

"कब आयी?"

"दो दिन हो गये, क्या तुम मेरी मम्मी से बात करोगी?"

"क्यों, आज क्या तुम्हारी पिटाई खाने का मन हो रहा है?" मैंने पूछा।

"क्यों, ऐसा क्यों कह रही हो?"

"अगर तुम मेरी बात अपनी मम्मी से करवाओगे तो मम्मी डाँटेंगी नहीं कि जयपुर आकर उनका बेटा पढ़ाई कम और लड़कियों से बातें ज्यादा करता है।"

"ऐसा कुछ भी नहीं है और वैसे भी मैंने मम्मी को तुम्हारे बारें में बताया है।"

"क्या बताया है?" मैंने एकदम चौंकते हुए पूछा।

"यही कि तुम मेरी दोस्त हो और बस इतना ही बताया कि कभी-कभी बात हो जाती है तुमसे।"

"अच्छा!"

"हाँ, अभी मैं छत पर टहल कर तुमसे बात कर रहा हूँ, नीचे मम्मी के सामने बात करना थोड़ा अजीब लगता है। तुम इन्तजार करो मैं अभी सीढ़ियाँ उतरकर अपने रूम तक जाता हूँ, और तुम्हारी बात करवाता हूँ, क्या तुम बात करोगी?"

"हाँ, मैं बात करूँगी लेकिन एक बात बताओ।"

"हाँ, पूछो?"

"तुम्हारी मम्मी तुमको डाँटेगी तो नहीं ना?" मैने थोड़ा डरते हुए पूछा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"इस बात की फिक्र तुम बिल्कुल भी मत करो, मेरी मम्मी बहुत खुले विचारों की है, वो मेरी माँ, मेरी गुरू और मेरी अच्छी दोस्त भी हैं। मैं अपनी बहुत सारी बातें मम्मी के साथ शेयर करता हूँ, बस मम्मी थोड़ा कम बोलती हैं, ये तुम संभाल लेना।"

"ओ.के. मैं संभाल लूंगी, पर थोड़ी-सी घबराहट है।"

"मैं नीचे पहुँच गया हूँ।"

"मम्मी बात करो," आदित्य ने कहा।

"किससे बात करूँ,? कौन है फोन पर?" आदित्य की मम्मी ने कहा।

फोन पर आदित्य की मम्मी की अवाज सुनाई दी। आदित्य और आन्टी आपस में बात कर रहे थे। "बात तो करो, पता चल जाएगा," आदित्य ने हँसते हुए कहा।

"हैलो," आदित्य की मम्मी ने कहा।

मुझे आदित्य और आदित्य की मम्मी की आवाज काफी मिलती जुलती लगी।

"हेलो आन्टी, नमस्ते।"

"नमस्ते बेटा, तो क्या तुम माही हो?" आन्टी ने पूछा।

"हाँ आन्टी, लेकिन आपने कैसे पहचाना कि मैं माही हूँ?"

"आदित्य तुम्हारे बारे में बताता है, माही नाम कई बार इसके मुँह से सुन चुकी हूँ।"

"अच्छा, आप कैसी है?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ,"

"आदित्य कह रहा था, आप जयपुर घूमने के लिए आयी हो और कुछ दिन उसके पास रहोगी।"

"हाँ।"

"आप कौन-कौन सी जगह घूम चुकी है?"

"अभी तो नाहरगढ़, आमेर, और हवा महल घुमी हूँ।"

"कैसी लगी आपको पिंक सिटी?"

"बहुत शानदार जगह है। कभी तुम भी आओ जयपुर, इसी बहाने तुमसे मिलना भी हो जायेगा," आंटी ने कहा।

"आदित्य ने कभी मुझे बुलाया ही नहीं।"

"क्या अभी तक तुम एक दूसरे से मिले भी नहीं हो?"

"नहीं।"

"आदित्य की बातों से तो मुझे ऐसा लगा कि उसने अब तक तुम्हारे साथ बहुत सारी मुलाकाते कर ली है।"

"आंटी, आप ही बोलिये आदित्य को कि एक बार तो मुझसे मिल ले।" मैने कहा।

"मैं, आदित्य को बोलती हूँ। वो तुम्हें जयपुर बुला कर पूरा जयपुर दिखाए।" आंटी ने बड़े ही प्यार से कहा।

मैं कुछ देर बाद चुप हो गयी क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं बातें किये जा रही हूँ और आन्टी जवाब दिये जा रही है। आन्टी भी सोच रही होंगी, कितना बोलती है ये लड़की।

मेरे चुप हो जाने के बाद आन्टी भी कुछ नहीं बोली। थोड़ी देर बाद आन्टी खामोशी

t.me/HindiNovelsAndComics

तोड़ते हुए बोली "लो बेटा आदित्य से बात करो।" उन्हें भी समझ नहीं आ रहा होगा कि क्या बात करें।

"इतनी जल्दी बात पूरी हो गयी," आदित्य ने आन्टी से फोन लेते हुये कहा।

"हाँ, अब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या बात करूँ।" सीढ़िया चढ़ने की अवाज फोन पर साफ-साफ सुनाई दे रही थी, आदित्य फिर से छत पर जा रहा था और मम्मी के सामने किसी लड़की से बात करना बहुत मुश्किल होता हैं, ऐसी स्थिति अपने आप में विचित्र होती है और आदित्य ने अपनी मम्मी से बात करवा दी, ये क्या कम बात है। आन्टी से बात करना अच्छा लग रहा था।

"हम बाद में बात करते हैं," आदित्य ने कहा।

"दोस्त दरम।"

गुरूवार 15 मई, 2013

"माही, तुम अपने घर का ऐड्रेस दो," आदित्य ने सीरियस होकर कहा जैसे मेरे घर का एड्रेस लेकर, घर पर बॉम ब्लास्ट करेगा।

"क्यों?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"अरे कुछ काम है, इसलिए मांग रहा हूँ।"

"क्या काम है?"

"मैं बाद में बता दूँगा।"

"अभी बताओ।"

"मैं अभी नहीं बता सकता,"

"तो मैं भी नहीं बता सकती," मैंने कहा।

"प्लीज माही बता दो ना," आदित्य ने रिक्वेस्ट करते हुए कहा। अगर आदित्य मेरे सामने होता तो जरूर आदित्य पर हँसी आती। आदित्य बिल्कुल बच्चे की तरह जिद कर रहा था।

"हाँ, ताकि तुम मेरी शिकायत दादू-दादी से कर दोगे," मैंने झूठा गुस्सा जताते हुए कहा।

"नहीं, मैं शिकायत क्यों करूँगा?"

मैंने ही हमारे पाँच सेकंड की खामोशी को तोड़ते हुए कहा, "ओके मैं मैसेज में एड्रेस सेण्ड कर दूँगी। ओ.के. मिस्ट्री मेन।"

"थैंक्यू माही," आदित्य खुशी से उछलता हुआ बोला।

t.me/HindiNovelsAndComics

चुनरी, पोइट्रेट, लेटर

सेमवार 10 जून, 2003

मैं रूम में कान्स्टीट्यूशन के नोट्स बनाने की प्लानिंग कर रही थी। मेरे एग्जाम बिल्कुल पास थे, अब एक दम से मेरे सर पर पढ़ाई का बोझ आ गया है। पहले मेरे ऑपरेशन के कारण मैं पढ़ाई नहीं कर पायी। अब थोड़ा ऑपरेशन, दर्द से मुक्ति मिली है, अब लिक्विड फुड भी खाना बंद हो गया। अब रोटी, दाल, चावल सब खा सकती हूँ। बस ज्यादा मसालेदार खाना नहीं खा सकती। अब ऑपरेशन की दर्दनाक स्थिति से तो मुक्ति मिल गयी। लेकिन सिर पर एग्जाम है, पढ़ाई की टेंशन है, 12 वीं क्लास तक में 80 प्रतिशत लाती रही हूँ, लेकिन अब मेरी 1स्ट डीविजन भी आ जाए, ऐसी उम्मीद भी नहीं लग रही। कान्स्टीट्यूशन का पहला एग्जाम है, उसी की किताबें पूरे रूम में फैला रखी है। अब यहीं समझ नहीं आ रहा कि कहाँ से पढ़ना शुरू करूँ? बस मुँह में पेन लिए रूम में ही चक्कर लगा रही हूँ। दिमाग ने तो जैसे काम ही करना बंद कर दिया है। आकर धम से पूरे बैड पर रखी किताबों के उपर पसर गयी।

“माही, माही तेरा पार्सल आया है,” दादी ने रूम में कदम रखते हुए कहा।

“किसका पार्सल है?” मैंने बैड से उठते हुए पूछा जिस बैड पर थोड़ी देर पहले पसरी हुयी थी।

“पहले ये बता मैं कितनी आवाज लगा रही थी, तू कहाँ खोई है कि तुझे इतनी देर से मेरी आवाज भी सुनाई नहीं दे रही और ये बुक्स पूरे बैड पर फैला रखी है, तू इन सारी बुक्स को एक साथ पढ़ेगी, फिर तो तेरा दिमाग आइन्स्टीन का दिमाग है।”

मैं मुँह मे पेन चबाते हुए दादी को देखती रही।

“बेटा जिस बुक से पढ़ना है, केवल वहीं निकाल, इस तरह बुक्स फैलाने से थोडे ना जल्दी याद होगा,” दादी ने रूम में निगाह दौड़ाते हुए कहा।

“सॉरी दादी,” मैने दाँतो में उँगली चबाते हुए कहा।

“अब खड़ी क्या है, बाहर परी का पार्सल आया है, टेबल पर रख दिया है।”

“क्या!” मैं खुशी से उछल पड़ी और दौड़ते हुए रूम से भागी।

“तेरा ऑपरेशन हुए ज्यादा वक्त भी नहीं हुआ है, इतनी तेज दौड़ मत लगा,” दादी ने मेरे पीछे आते-आते कहा। वैसे भी, परी के आगे मैं कहाँ किसी की सुनने लगी भला।

मैंने देखा, बाहर टेबल पर नीले कलर का बड़ा बॉक्स रखा हुआ है। मैंने नीले बॉक्स को उठाया और अपने रूम में ले आयी। मैंने बैड पर फैली हुई बुक्स को एक तरफ हटाते हुए पार्सल रख दिया। बॉक्स पर काली स्याही से एड्रेस लिखा था। मैंने ध्यान से देखा उस पर जयपुर का एड्रेस लिखा था, जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि परी तो अलवर में रहती है और परी को दिल्ली का एड्रेस कहाँ से मिला? अब मैं और बेताब थी। बॉक्स खोलने के लिए कि आखिर बॉक्स में है क्या?

बॉक्स बहुत ही सलीके से डबल पैकिंग के साथ पैक किया गया था। बॉक्स की डबल पैकिंग के बाद भी एक और बॉक्स निकला जो कि लाल कलर की गिफ्ट पैंकिग कवर से पैक किया गया था, जिसको देखकर मुझे हँसी आने लगी। मुझे लगता है कि किसी ने मेरे साथ

t.me/HindiNovelsAndComics

मस्ती की है। मैंने सोचा बॉक्स के अंदर बॉक्स ही निकलेंगे। फिर भी बॉक्स खोलकर तो देखना चाहिए। अब लाल बॉक्स खोला तो उसके अंदर कोई और बॉक्स नहीं, बल्कि लाल कलर की चुनरी थी, जिसको मैंने बॉक्स से बाहर निकाला और खोलकर देखने लगी। चुनरी सुंदर थी, बिल्कुल वैसी जैसी कोई दुल्हन शादी मे ओढ़ती है। चुनरी के किनारे पर सुंदर सुनहरा रंग का गोटा लगा था। चुनरी पर जरदोजी (जरी) का वर्क और राजस्थान की सुन्दर कढ़ाई हो रखी थी। मैंने फटाफट रूम के गेट की कुण्डी लगाई। कुण्डी लगाने के बाद मैं आइने के सामने जाकर खड़ी हो गयी। चुनरी ओढ़कर देखने लगी जो कि बहुत सुन्दर थी। अपने आप को चुनरी में देख-देख कर शर्माने लगी। मेरे चेहरे पर अजीब सी हँसी थी।

मैं फिर से बॉक्स के पास आकर बैठ गई जिसमें मैंने देखा, कुछ और भी रखा है। उसमे एक लेटर था जिस पर कुछ लिखा था जो कि मेरी समझ में बिल्कुल भी नहीं आ रहा था। मैं उन लाईनों को जोर-जोर से पढ़ रही थी। उसमे लिखा था...

- अना बेहिबाक
- इच लगे डिच
- दोस्त दारम
- ते अमो
- जेग एलस्कर डिग
- ऐशितेरी

मैंने पढ़कर लेटर एक तरफ रख दिया। कुछ समझ नहीं आया। उसमें एक पोइट्रेट भी था। मोटे चौकोर बोर्ड पर किसी लड़के का पोइट्रेट बना हुआ था। गेहुँए रंग का चेहरा, नुकीली नाक, बड़ी-बड़ी, आखें, आँखों के पास एक छोटा-सा तिल और चौड़ा माथा, जिस पर जुल्फें फैली हुई थी। ये किसी का फोटो कम कलाकार की कृति ज्यादा लग रही थी। मुझे पोइट्रेट वाला लड़का बहुत स्मार्ट लग रहा था। पोइट्रेट भी बहुत अच्छा बनाया था।

रह-रहकर मुझे यही ख्याल आ रहा था। कोडवर्ड में पता नहीं ये क्या शब्द लिखे हैं यह अजीब शब्द तो आदित्य कहता है लेकिन कभी आदित्य ने इन शब्दों का मतलब नहीं बताया।

ओहह! इसका मतलब ये सब आदित्य ने भेजा है। फिर हो सकता है कि ये पोइट्रेट भी आदित्य का ही होगा। मैं थोड़ी देर गौर से पाइट्रेट को देखती रही। पोइट्रेट बहुत अच्छा लग रहा था। पोइट्रेट देखते-देखते मेरी नज़र बैड पर रखी ओशो की बुक 'स्वर्णिम बचपन पर गयी, जिस पर ओशो का फोटो था। मुझे लगा कि पोइट्रेट की भांहे, आँखे, नाक, ओशो से थोड़ी-सी मिलती जुलती है, "हम्म... नहीं यार सिर्फ थोड़ी भौंहे ही मिल रही है और पोइट्रेट में ओशो की तरह दाढ़ी मूछें नहीं है," मैंने अपने आप से बड़बड़ाते हुए कहा।

"माही, बेटा गेट खोल," दादी ने मेरे रूम का गेट खटखटाते हुए कहा। दादी की आवाज से मेरा ध्यान पोइट्रेट और ओशो से हटा, "आई दादी" मैंने चौकते हुए कहा।

"अब मैं ये सब सामान कहाँ छुपाऊँ? चुनरी, पोइट्रेट, लेटर।" मैं अपने आप से बड़बड़ाने लगी। मैंने सब सामान बॉक्स में जल्दी-जल्दी रख कर अपने बैड के नीचे खिसका दिया और भागते हुए गयी और गेट खोल दिया।

"माही, तुझे क्या हो गया है, ये गेट क्यों लगाया? कभी इतनी खोयी होती है कि मेरी

t.me/HindiNovelsAndComics

आवाज भी सुनाई नहीं देती।"

"वो दादी मैं कपड़े चेंज कर रही थी, इसलिए गेट लगा दिया," मैंने गाल पर आती हुई बालों की लट को कान के पीछे ले जाते हुए कहा। यह कहते हुए मेरे होठों पर हल्की हँसी आ गयी।

"अब शरमा किस बात पर रही है, अच्छा ये बता परी ने पार्सल क्यों भेजा?" दादी ने बैड पर बैठते हुए पूछा।

उनके जस्ट नीचे ही पार्सल रखा हुआ था, "दादी वो तो उसने कुछ बुक्स, नॉवेल भेजे थे, मैंने ही उससे कहा था।"

"अच्छा ला बता, अगर अच्छे धार्मिक वैगरह हो तो मुझे दे देना।"

"नहीं-नहीं दादी, वो इंग्लिश में है और कोई भी धार्मिक नहीं है। आपको समझ नहीं आएगी," मैने डरते-डरते कहा।

"हाँ, मुझे कहाँ आती है, इग्लिश वगैरह समझ में।"

"दादी, मैंने सब अलमारी में जमा कर रख दिए हैं।" दादी ने मुझे शक की नजर से देखा, शायद इसलिए कि मेरी आवाज कपकपा रही थी। इस वक्त दादी कुछ देर मेरे पास रूकना चाहती थी लेकिन आज मैं आदित्य से बात करने के लिए बहुत बेताब थी। मैं जानना चाहती थी कि ये पोइट्रेट, चुनरी और कोडवर्ड में लिखे लेटर का मतलब क्या है। वैसे तो मैं दादी के पास ही रहती हूँ, जब पढ़ना होता है या आदित्य से बात करनी होती है, तभी मैं अपने रूम में आती हूँ।

"दादी मेरे एग्जाम नजदीक है, मैं क्या करूँ, मुझे कुछ याद ही नहीं हो रहा," मैंने बेचारा-सा मुहँ बनाते हुए कहा।

"तो जितना पढ़ सके सिर्फ उतना ही पढ़, अभी ज्यादा पढ़ाई की टेंशन ना ले। तू पढ़, मैं अभी तेरे लिए बादाम का दूध लाती हूँ," दादी ने कहा।

"हाँ दादी" मैंने मुस्कुराते हुए कहा क्योंकि मैं यहीं चाहती थी कि थोड़ी देर के लिए दादी जाये और मैं आदित्य को फोन लगाऊँ। मुझे दूध बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता, लेकिन आदित्य के लिये मुझे ये भी मंजूर है।

"माही, कुछ तो गड़बड़ है," दादी ने मुझे शक की निगाह से देखते हुए कहा।

मेरा ध्यान बैड के नीचे गया कि कहीं दादी ने बॉक्स तो नहीं देख लिया। "क्या गड़बड़ है दादी?" मैंने बाल सँवारते हुए कहा।

"तुझे दूध तो बिल्कुल भी पसंद नहीं है। आज दूध पीने को कैसे तैयार हो गयी? और मैं देख रही हूँ आज बार-बार तू अपने बाल सँवार रही है।"

"वो दादी क्या है ना कि ऑपरेशन के बाद कई दिनों तक फेस पर पट्टी थी जिससे बालों का भी ध्यान नहीं रख पाई और अब मुझे दूध पीना अच्छा लगता है, आप दूध ले आओ ना, मैं पी लूंगी," मैंने बच्चों के जैसी मासूमियत से कहा।

मैं जानती हूँ, दादी को अगर कोई बात, मैं बड़ी मासूमियत से बोलती हूँ तो दादी को मुझ पर प्यार आने लगता है और वो बाकी बातें भूल जाती हैं। आज भी मेरी मासूमियत का असर कुछ ऐसा ही हुआ।

"ओ मेरा सोना, मैं अभी लेकर आयी, मैं भी ना बहुत सवाल पूछती हूँ।" दादी के जाने

t.me/HindiNovelsAndComics

के बाद मैंने मोबाइल उठाया और आदित्य को फोन लगाया। बात करने के लिए इतना बेसब्र थी, जितना कभी भी किसी के लिए बेसब्र नहीं हुई।

आदित्य को फोन लगाते ही सामने से अवाज आयी "आप के पास पर्याप्त बैलेंस नहीं है।"

फिर बैलेन्स चेक करने पर पता चला केवल 60 पैसे है।

"ओहह...! आज ही बैलेन्स नहीं है, अब क्या करूँ?" दिमाग में आईडिया आया बाहर रखे लैडलाइन से फोन करूँ, लेकिन ये आईडिया बिल्कुल कुछ बकवास फिल्मों की तरह फटाफट फ्लॉप हो गया, जब मुझे याद आया कि लैंडलाइन से केवल दिल्ली में ही कॉल कर सकते हैं, उसमें एस.टी.डी. तो है ही नहीं।

"अब मैं क्या करूँ!" मैं चुपके से बाहर हॉल में गयी, ताकि दादी ना देख ले। दिल्ली आकर प्रियंका ही एक ऐसी लड़की है, जो मेरी हर वक्त हेल्प करती है, जिस पर मैं ट्रस्ट कर सकूँ और मदद मांग सकूँ।

"हैलो प्रियंका,"

"हाँ माही," प्रियंका ने फोन उठाते हुए कहा।

"प्रियंका, मेरी एक मदद करेगी।"

"एक नहीं, तू हजार बोल, जितना बसमें होगा उतना करूंगी।"

"प्रियंका, तू अभी मेरे मोबाईल में रिचार्ज करवा दे। मैं इस वक्त घर से बाहर नहीं जा सकती, दादी सवाल पूछेंगी।"

"अच्छा इसका मतलब तुझे आदित्य से बात करनी है?" प्रियंका ने पूछा।

"हाँ यार!"

मैंने आदित्य और उसकी फाईल्स के बारे में प्रियंका को सब कुछ बताया था। प्रियंका अक्सर बातों में मुझसे कहती कि आदित्य शायद तुझे चाहता है लेकिन मैं हमेशा प्रियंका को अनसुना कर देती क्योंकि मुझे आदित्य ने ऐसा कुछ कहा ही नहीं। हमें एक दूसरे से बातें करना बहुत अच्छा लगता है।

"मैं थोड़ी देर में रिचार्ज करवाती हूँ।"

"कितनी देर लगेगी?" मैंने बेसब्री से पूछा।

"अरे! इतना उतावली क्यों हो रही हो? अभी मॉर्केट जा रही हूँ, थोड़ा-सा तो टाईम लगेगा ना," प्रियंका ने कहा।

"हाँ, मैं वेट करूँगी, थैंक्यू बाय।" मैं चुपचाप फोन रखकर रूम में आ गयी।

दादी मुझे दूध का गिलास देकर चली गयी। अब मुझे आदित्य के लिए क्या-क्या करना पड़ रहा है? कभी झूठ और आज से दूध पीना पड़ेगा जो मुझे बिल्कुल पंसद नहीं है। आजकल मैं आदित्य के लिए दादी से कितना झूठ बोलने लगी हूँ। जब कुछ बताने के बारे में सोचती भी हूँ, तो हिम्मत नहीं जुटा पाती। कैसे कहूँगी कि मैं किसी लड़के से फोन पर बात करती हूँ, और पंसद भी।

मेरे मोबाईल में जैसे ही बैलेन्स आया, मैंने आदित्य को फोन लगाया। थोड़ी ही रिंग के बाद आदित्य ने फोन उठा लिया।

"हैलो माही।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"हाय डॉक्टर साहब, मुझे इतना बताओ कि ये पार्सल तुमने ही भेजा है, ना?"

"कौन सा पार्सल?" आदित्य ने इस तरह कहा, जैसे कि वो पार्सल के बारे में बिल्कुल अंजान है, कुछ भी नहीं जानता है।

"अरे मेरे पास तो पार्सल आया है।"

"तो उस पर भेजने वाले का नाम और एड्रेस भी तो होगा," आदित्य ने कहा।

"उस पर परी का नाम और जयपुर का एड्रेस है," मैंने कहा।

"मतलब तो तुम्हें तुम्हारी दोस्त परी मिल गयी, बताओ तुम्हें तुम्हारी दोस्त ने क्या पार्सल किया, क्या गिफ्ट दी उसने?"

"कौन-सा गिफ्ट?" मैंने कहा।

"अरे, वही जो तुम्हें पार्सल से मिला है," आदित्य ने कहा।

"हाँ, पार्सल में तो एक प्यारी-सी डॉल है," मैंने जानबूझकर झूठ बोला।

"अरे, डॉल कहाँ से आयी उसमे तो, चुनरी..." आदित्य कहते-कहते रूक गया। उसे भी अफसोस हो रहा होगा, अपने मुँह से अपना झूठ कबूल कर लिया।

"हाँ-हाँ आदित्य आगे बोलो ना चुनरी, पोइट्रेट, लेटर," मैंने हँसते हुए कहा।

"मैडम जी, कहीं एडवोकेट रजत शर्मा बनने का ख्याल तो नहीं आया दिल में।"

"इतना खतरनाक ख्याल मेरे जहन में तो आ ही नहीं सकता," मैंने कहा।

"क्या भरोसा तुम्हारा, रजत शर्मा बनकर मुझे ही कटघरे में खड़ा कर दो। मेरा झूठ पकड़ा गया, आखिर मैं झूठ किससे बोल रहा था। 'माही एडवोकेट से।' वैसे तुम फ्यूचर में एक काबिल एडवोकेट बनोगी। एडवोकेट के कुछ-कुछ गुण तो अभी से दिखने लगे है, ग्रेट जॉब माही," आदित्य ने कहा।

"षुक्रिया, चलो तुमने कबूल तो किया ये पोइट्रेट तुम्हारा है।"

"हाँ मेरा है।"

"तुमने बनाया है?"

"हाँ मैंने ही बनाया है।"

"तुम बहुत स्मार्ट, क्यूट, चार्मिंग, यंग बॉय लग रहे हो। तुम्हारा पोइट्रेट बहुंत अच्छा है। बहुत अच्छे से कलाकारी की है, तुम एक डॉ॰ के साथ-साथ एक अच्छे आर्टिस्ट भी हो। "

"हौसला आफजाई के लिए षुक्रिया"

"वैसे माही तुमने ये कैसे पहचाना कि ये पार्सल मैंने ही भेजा है?" आदित्य ने पूछा।

"तुम्हारे लेटर से।"

"मतलब, लेटर से कैसे?"

"लेटर में कुछ कोडवर्ड में लिखा हुआ था और यहीं लाइन तुम फोन पर भी कहते हो इसलिए मुझे लगा तुम ही हो।"

"वाओ मैडम, क्या शरलॉक हाम्स के नॉवेल पढ़ती हो? या तुम डिटेक्टिव भी हो," आदित्य ने जोर-जोर से हँसते हुए कहा।

"उन लाइन्स का और चुनरी का क्या मतलब है? वो तुमने क्यों भेजी?"

"आदित्य," नव ने आवाज लगायी।

"क्या हुआ?"

t.me/HindiNovelsAndComics

"ट्रिप पर जाने के लिए तुझसे बात करनी है," नव ने बालकनी में आते हुए कहा।

"मैं अभी फोन पर हूँ थोड़ी देर में आता हूँ।" आदित्य ने कहा।

"ये नव है ना?" मैंने पूछा।

"हाँ।"

"वो तुम्हें बुलाने आया था, जरूर उसे कुछ काम होगा," मैंने कहा।

"कोई काम नहीं है। हमारे एग्जाम खत्म हो गये हैं। कुछ दिन के लिए छुट्टी मिली है, तो ये लोग कही ट्रिप का प्लान बना रहे हैं।"

"मतलब फर्स्ट ईयर के एग्जाम कम्प्लीट हो गये?"

"हाँ, अब हम सीनियर हो गये, हम सभी सीनियर्स हॉस्टल में रहा करेंगे, जहाँ फर्स्ट ईयर में जाने से बहुत डरते थे।"

"अब तुम भी रैंगिग लिया करोगे?" मैंने पूछा।

आदित्य खी-खी कर के हँस दिया।

"कितने दिन की छुट्टी मिली है?"

"करीब एक महीनें की," आदित्य ने कहा।

"अच्छा, तो कहाँ जा रहे हो?" मैंने पूछा।

"हम भानगढ़ जाने की सोच रहे हैं, अभी कोई फाइनल प्रोग्राम नहीं बना है।"

"भानगढ़, ये कैसा नाम है,?" मैने आश्चर्य से पूछा।

"तुम नहीं जानती हो?"

"नहीं बताओ।"

"भानगढ़, अलवर के पास है, इण्डिया के टॉप हॉन्टेड प्लेस में से एक है। वहाँ सिर्फ दिन में जाया जाता है, शाम के 6 बजे से सुबह के 6 बजे तक वहाँ जाना मना है।"

"लेकिन क्यों?" मैंने पूछा।

"क्योंकि जो लोग वहाँ गये है, उनके साथ कोई दुर्घटना घटित हुई है या भूत बगैरह दिखाई देना, ऐसा कुछ हुआ है। अब ये नहीं पता इसमें कितनी सच्चाई है।"

"सच में वहाँ ऐसा कुछ है?"

"हाँ, सुना तो है और वहाँ जाकर पता चलेगा।"

"तो फिर ऐसी जगह क्यों जा रहे हो? कोई और अच्छी जगह का प्रोग्राम बनाओ, ऐसी जगह मत जाओ," मैंने कहा।

"माही हम लोग तो दिन में जाएँगे, दिन में वहाँ ऐसा कुछ नहीं है। दिन में तो वहाँ जा सकते है और नव के घर के पास ही है, नव तो कई बार गया है। इसमे डरने वाली तो कोई बात नहीं है।"

"नहीं फिर भी?" मैंने कहा।

"वैसे भी अभी प्रोग्राम फाइनल नहीं हुआ है। अभी तो दो-तीन जगहों के नाम डिसाइड किये हैं, देखते हैं किस दिन का प्लान बनता है।"

t.me/HindiNovelsAndComics

भानगढ़ ट्रिप

फाइल
बुधवार **25** जून**, 2003**

“माही, मुझे माफ़ करना, तुम्हारे मना करने के बावजूद भी हमारा भानगढ़ ट्रिप का ही प्रोग्राम फिक्स हुआ।”

हम रविवार को अपने आशियाने, जे-86 से अलवर के लिए निकले। 6 घण्टे में हम नव के घर पर थे, जैसा कि हमने सोचा था। नव एक रिच हाई सोसायटी से बिलोंग करता है। इसका अंदाजा उसके घर को देखकर लगाया जा सकता है। नव का पूरा घर इंटीरियर डिजाइनर द्वारा डिजाइन किया हुआ था, शानदार फर्नीचर था।

नव के घर जब हम पहुँचे तो नव की मम्मी और भाई से मिले। पापा उसके घर पर कम टाईम दे पाते हैं, जैसा कि नव ने हमें बताया था कि पापा ज्यादा वक्त घर के बाहर रहते हैं। घर पर भाई और मम्मी रहते हैं। मेरे जयपुर आने के बाद मम्मी अकेले रह गयी। भैया को भी बैंगलोर से जॉब के ऑफर आ रहे थे, लेकिन भैया, मम्मी को अकेला छोड़कर जाने के लिए तैयार नहीं थे। वो एक गोल्ड मेडलिस्ट इंजीनियर होकर यहीं घर पर अलवर में अपने आप को सेटल कर रहे हैं।

नव का भाई बिल्कुल नव के जैसे दिखते हैं। नव के जैसा चेहरा, हाइट हालाँकि दोनों में 3 साल का अंतर है, फिर भी दिखने में ट्वीन्स लगते हैं। आनुवांशिक रिश्ते दिखने में एक-दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं।

भानगढ़ ट्रिप पर मैं, सोनू, नव, प्रताप और शुभ थे। नव के घर से जब हम निकले तो हमारी ट्रिप मे नवीन भैया (नव का भाई) भी शामिल हो गये। हमने नव के घर से कैमरा लिया। नवीन भैया ने अपनी टाटा सूमो निकाल ली। हम टाटा सूमो से भानगढ़ पहुँचे।

भानगढ़ पहुँचकर हम सभी थोड़े डरे हुए थे, क्योंकि ये एशिया का टॉप हॉन्टेड प्लेस में से एक है, तो जरूर डरने वाली कुछ तो बात होगी। भानगढ़ पहुँचते ही एक बोर्ड पर चेतावनी लिखी थी ‘शाम *6* बजे से सुबह *6* बजे तक यहाँ रूकना मना है। आप सभी का भूतों की नगरी भानगढ़ में स्वागत है,’ जिससे हम बहुत डरे हुए थे। हर एक कदम फूंक-फूंक कर रख रहे थे।

“रोमांच से मुँह मोडने में कोई बहादुरी नहीं है। अब जल्दी चलो कछुए की चाल से ना रेंगो,” नवीन भैया ने कहा।

जैसे-जैसे हम भानगढ़ के कोर्ट, खंडहरों में घूमने लगे, वहाँ डर जैसा कुछ नहीं लगा। शुरू में तो हम सब साथ-साथ घूम रहे थे, लेकिन थोड़ी ही देर में हम सब इन्जॉय करने लगे क्योंकि वहाँ डरने लायक कोई बात ही नहीं थी।नवीन भैया हमारे लिए गाइड का काम कर रहे थे क्योंकि वे यहाँ बहुत बार आ चुके थे। नवीन भैया भानगढ़ से जुड़ी हुई पद्मावती, जगन्नाथ तांत्रिक की कहानी सुनाने लगे जो कि पुरानी महलों की कहानी जैसी लग रही थी। फिर नवीन भैया की बातों ने हैरतंगेज मोड़ ले लिया। हमें एक गुफा में लेकर गये जहाँ पर बहुत अधिक अंधेरा था और इस गुफा से जुड़ी हुई यहाँ कई किंबदंतिया प्रचलित है कि

t.me/HindiNovelsAndComics

इस गुफा में तांत्रिक काला जादू, तंत्र-मंत्र और सिद्धियां सिद्ध करता था और यहाँ उसने पद्मावती को पाने के लिये सालों तक तपस्या की थी। पद्मावती भानगढ़ की राजकुमारी थी जिसे पाने के लिये जगन्नाथ ने तंत्र-मंत्र का सहारा लिया, लेकिन फिर भी वह पद्मावती को न पा सका। तभी से कहा जाता है कि तांत्रिक की आत्मा पद्मावती को पाने के लिये भानगढ के खंडहरों में भटक रही है।

सोनू तांत्रिक-तांत्रिक मंत्र की तरह बड़बड़ाने लगा।

हमने गुफा में भी जाकर पिक्चर्स निकाली, वहाँ पर भी हम अपनी मस्ती से बाज नहीं आए। कुछ पिक्स डरावना फेस बनाकर तो कुछ कॉमेडी फेस बनाकर निकलवायी और रानी पदमावती के नृत्य स्थान पर जाकर हम सभी अपने अपने नृत्य के अंदाज में फोटो खिचवाने लगे, जो कि बहुत मजेदार थी। एक ऊँचे टीले पर अकेले जाकर हम अपनी-अपनी बहादुरी का परचम लहरा रहे थे, मानो हम हॉन्टेड प्लेस नहीं किसी पार्क में आये हो। हम लोग भानगढ़ के खंडहरों, किलों, गुफाओं में कुछ देर और रहना चाहते थे लेकिन शाम 6 बजने ही वाले थे। नवीन भैया हमें शाम 6 बजते-बजते अपनी टाटा सूमो में लेकर घर की तरफ रवाना हो गये।

t.me/HindiNovelsAndComics

आदित्य का प्रपोजल

बुधवार 9 जुलाई, 2003

मैं आज लेटर में लिखे कोड वर्ड का मतलब जानकर ही रहूंगी। आखिर ऐसी क्या बात है जो आदित्य कोड वर्ड में कहता है, साफ-साफ नहीं कहता।

"माही चलो," दादी ने आवाज लगाते हुए कहा।

"जी दादी।"

"एग्जाम है, तो इसका मतलब ये होता है कि सारा दिन कमरे में बुक्स में आँखें गड़ाए बैठे रहो। चलो पास के पार्क में, थोड़ा तुम्हारा भी मूड़ फ्रेश होगा।" दादी को ऑपरेशन के बाद मेरी बहुत फ्रिक रहने लगी थी। ऑपरेशन के बाद ही मुझ पर एग्जाम का बोझ आ गया जो कि दादी की चिंता का कारण है। ऑपरेशन के 10 दिन बाद ही मेरे फर्स्ट ईयर के एग्जाम थे, लेकिन मैं एग्जाम नहीं दे पायी, तो अब यहीं बैक के एग्जाम बाकी हैं।

"दादी आप जाओ, मैं कल साथ चलूंगी।"

"मैं, तेरे साथ ना जाने की वजह पूछ सकती हूँ?" दादी ने दरवाजे पर खड़े होकर ही सवाल किया।

"मेरे पेट में दर्द है," मैंने दादी से झूठ बोल दिया क्योंकि इस वक्त मैं आदित्य से फोन पर बात करना चाहती थी। हालाँकि हम चैटिंग करते हैं, लेकिन इतनी बातें चैट में मुमकिन नहीं हो पाती।

"मैं तेरे पास रूकती हूँ," दादी ने अपनी स्लीपर उतारकर रख दी और मेरे साथ आकर बैठ गयी।

"दादी, मैं सो जाऊँगी तो अपने आप ठीक हो जाऊँगी, आप बिल्कुल भी परेशान ना हो, जाओ।"

दादी ने प्यार से मेरा माथा चूमा और चली गयी। दादी के चले जाने के बाद मैंने आदित्य को फोन किया।

"आदित्य मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात पूछनी है," आदित्य के फोन रिसीव करते ही मैंने कहा।

"मोहतरमा पूछिए, आपका ये नाचीज आपके हर सवाल का जवाब देने के लिए हाजिर है।"

"जी, जनाब आज उर्दू में कैसे बात कर रहे हो? आज तो तुम बड़े अच्छे मूड़ में लग रहे हो।"

तभी अचानक फोन पर गाने की आवाज सुनाई दी। "आदित्य, ये कौन-सा गाना चल रहा है?"

"हमारा डबलबैट्री रेडियो लेकर बैठा है, उसी पर गाना चल रहा है," फिर आदित्य उसी गाने को गुनगुनाने लगा।

चाँद सी महबूबा हो मेरी कब,
ऐसा मैंने सोचा था, हाँ तुम,
बिल्कुल वैसी हो जैसा मैंने सोचा था,

t.me/HindiNovelsAndComics

ना कसमें हैं ना रस्में है।
ना सिकवे हैं, ना वादे हैं।
एक सूरत भोली-भाली है, दो नैना सीधे-साधे हैं,
इस दुनिया में कौन था ऐसा, जैसा मैंने सोचा था,
हाँ तुम बिल्कुल वैसी हो जैसा मैंने सोचा था।

"आदित्य तुम सिंगिग में ट्राई क्यों नहीं करते?" मैंने हँसते हुए कहा। "तुमने बहुत बेहतरीन गाया, मुझे बहुत पंसद आया।" मैंने कहा।

"थैंक्यू माही, सिंगर बाद में, पहले एक अच्छा डॉ. ही बन जाँऊ। वैसे माही तुम क्या पूछना चाहती थी?"

"उस दिन हमारी बात अधूरी रह गयी," मैंने कहा। "कौन-सी बात?"

"यहीं कि तुम्हारे लेटर में कोडवर्ड में क्या लिखा था? और चुनरी किसलिए?" मैंने थोड़ा गंभीर होते हुए पूछा।

"क्या तुम जानना चाहती हो?" आदित्य की आवाज थोड़ी भारी हो गयी। आदित्य के साथ बात करते वक्त बहुत ही कम ऐसा हुआ है कि आदित्य सेंटी हो जाए।

"माही, मैं तुम्हें कोई गिफ्ट देना चाहता था, लेकिन समझ नहीं आ रहा था, क्या गिफ्ट दूँ। फिर तुमने ही एक दिन बताया तुम्हें चुनरी बहुत पसंद है, मैं यहीं चाहता हूँ कि तुम अपनी शादी में मेरी दी हुई चुनरी ही पहनो।"

"और कोडवर्ड?" मैंने पूछा।

"अगर तुम जानना ही चाहती हो तो सुनो!" उसका मतलब।

"मैं सिंगल हूँ और पूरी तरह मिंगल होने के लिए तैयार हूँ। मैं सच में अच्छा इंसान हूँ। मैं हमेशा तुम्हे खुश रखूँगा, मेरा पास्ट फ्लोलेस है, और फ्यूचर तुम्हारे साथ क्रिस्टल एन्ड क्लियर होगा।"

"तो क्यों ना हम अभी अपना प्रेजेन्ट परफेक्ट बना लें। मुझे क्रिकेट और सॉकर बिल्कुल पसंद नहीं, तो हम साथ मिलकर क्रॉकरी, डेली सोप देखा करेंगे, खूब सारी षॉपिंग करेंगे और सप्ताह के अंत में घूमने जाया करेंगे। मुझे नॉवेल पढ़ना, पोइट्री और स्केच बनाना बहुत पंसद है।"

"लेकिन बाद में तो सिर्फ मैं तुम्हारी ही तस्वीर बनाया करूँगा। मेरी हर कविता बस तुम्हारे लिए ही होगी। मैं खाना बनाने में भी अच्छा हूँ, बस रोटी मुझे गोल बनानी नहीं आती, तो वो तुम देख लेना। बाकी तुम जैसा कहोगी वैसा कर लेंगे।"

"आदित्य यह क्या है?" मैंने चौंकते हुए पूछा।

"मैं नहीं जानता शायद तुम मेरी बात पंसद करो, या ना करो। जिसे तुम कोडवर्ड समझ रही हो, वह अलग-अलग लैंग्वेज जापानी, डेनिश, पुर्तगाली, फारसी, फ्रैंच में 'आई लव यू' लिखा था।"

मैं इतनी देर से आदित्य की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी, लेकिन इस आखिरी लाइन ने मेरे दिमाग के गेंग्लिया हिला दिये। मैं थोड़ी देर तक चुप रही। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। आदित्य भी कुछ नहीं बोल रहा था, सिर्फ साँसों की आवाज सुनाई दे रही

t.me/HindiNovelsAndComics

थी। आदित्य मेरे जवाब का इंतजार कर रहा था।

"तो क्या कहती हो?"

"बताओ क्या कहूँ?"

"माही इतना सब तो कह दिया। अब उसका कुछ तो जवाब दो।"

"सोचने दो," मैंने खिलखिला कर हँसते हुए कहा।

"यह तो बताओ तुम्हारा दिल मेरे लिये क्या महसूस करता है?" आदित्य ने पूछा।

"क्या कहूँ मेरे पास दिल ही नहीं है। हाँ, एक एक्स्ट्रा किडनी जरुर है। भगवान ना करें कभी तुम्हें जरुरत पड़े, तो दे दूँगी, एकदम मुफ्त," मैंने हँसकर बात टाल दी, और जहाँ तक मेरा अंदाजा है, आदित्य अपना सर पीट कर रह गया।

"माही कुछ तो कहो।"

"आदित्य मैं जवाब कैसे दे सकती हूँ? मेरा मतलब है कि हमने एक-दूसरे को देखा तक नहीं है। ये इक्कीसवीं सदी है, तुम बिना देखे कैसे प्यार कर सकते हो?" मैंने बड़ी हैरानी से कहा।

"लेकिन मैं करता हूँ। माही कोई जल्दबाजी नहीं है। तुम आराम से सोच के बता देना।"

"मैं भी तुम्हें पंसद करती हूँ।"

"तुमने तो मेरी दिल की बात कह दी। मैं भी यहीं महसूस करता था कि तुम भी मुझे चाहती हो। तुम और मैं डोसा और इडली जैसे रहेंगे," आदित्य ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा।

"नहीं आदित्य, हम साम्भर और चटनी की तरह रहेंगे।" मैंने भी आदित्य के सुर में सुर मिला दिया।

"माही, मैंने तुम्हारे लिए कुछ लिखा है।"

"तो पढ़कर सुना दो।"

"देखों मैं तुमसे कह रहा हूँ।
हाँ तुमसे ही,
रहती हो तुम जहाँ भी,
मुझे नहीं पता कहाँ,
लेकिन,
इतना जान लो कि
जिसके बारे में तुम इतना सोचती हो,
जिसके ख्यालों मे तुम खोयी रहती हो दिन रात,
वो मैं ही हूँ
हाँ मैं ही।
बस देर है हमें मिलने भर की।
वरना मैं जानता हूँ तुम्हें सदियों से।
बस केवल देखा भर नहीं है।
समझ नहीं आता कैसे पहचानूँगा, जिस दिन देखूँगा तुम्हें,

t.me/HindiNovelsAndComics

क्या तुम कहोगी,
कि।
हाँ तुम ही हो वो जाने पहचाने अजनबी।
कैसे खोजूँगा तुम्हें, ये जानते हुए भी
कि तुम मेरी हो बस मेरी,
और किसी की नहीं।
तुम्हें मिलना ही है, मुझसे आखिर में
पर,
तब तक कैसे समझाऊ खुद को,
कैसे करूँ मैं इंतेजार,
बस बता दो इतना ही,
बस बता दो इतना ही,

"वाह! आदित्य तुम तो कमाल के शायर हो, तुमने तो मेरा दिल ही जीत लिया, क्या समा बाँधा है तुमने।"

"मैं, तुम्हारा दिल ही तो जीतना चाहता हूँ," आदित्य ने खुश होते हुए कहा।

"और रही बात एक दूसरे को देखने की तो तुम मेरा ऑरकुट एकाउन्ट पासवर्ड ले लो। मेरी पूरी डिटेल्स, फोटो बगैरह है, तुम देख सकती हो।"

"ठीक है और मैं भी अपना फोटो ऑरकुट पर अपलोड कर दूँगी।"

"भानगढ़, कॉलेज दोस्त, एनाटोमी के डायग्राम और भी बहुत सारे पिक्स है, तुम देखना," आदित्य ने कहा।

"हाँ।"

"आदित्य अभी दादी आती होंगी, पास के पार्क में गयी है " मैंने कहा।

"माही, मैं बहुत खुश हूँ ये जानकर कि तुम भी मुझे पंसद करती हो।" आदित्य ने खुशी से चहकते हुए कहा।

"आमी तो माके भालो वाशी"

बुधवार 9 जुलाई, 2003

मैं, आदित्य के दिल का हाल जानकार बहुत खुश हुई। मैं भी आदित्य को बहुत पंसद करने लगी थी लेकिन आदित्य के जितना खुश नहीं हूँ। आदित्य ने अपनी मम्मी से बात करवाई, वो खुले विचारो का हैं लेकिन मैं ये सब बातें दादी से कैसे कह सकती हूँ कि मैं किसी लड़के को पंसद करती हूँ। हिम्मत जुटाकर मैं दादी को सच-सच बता देना चाहती हूँ, मैं दादी के आने का इन्तजार करने लगी।

"माही, अब तेरा दर्द कैसा है?" दादी ने आते ही पूछा।

"ठीक है अब, लेकिन मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ,"

"हाँ बोलो," दादी ने कहा।

"नहीं, मुझे कुछ बताना है।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"हाँ, मैं सुन रही हूँ," दादी ने कहा।

"दादी मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ," मैंने दादी की गोद में अपना सर रख दिया। मैं दादी को सब कुछ बताने की हिम्मत नहीं जुटा पायी। मुझे डर लग रहा था। दादी तो मुझे समझेगी लेकिन जब दादू को बताएंगी तो वो बहुत गुस्सा होंगे। मैंने फैसला किया कि जब तक ऐसा चल रहा है, चलने दो। जब सही वक्त आयेगा तब बता दूँगी।

मैं दादी की गोद में सर रखकर पता नहीं क्या-क्या सोच रही थी और दादी मेरे बालों को सहला रही थी। रह-रहकर आदित्य की बातें दिमाग में घूम रही थी। खासकर वह बात 'प्यार तो देखने वाले की आँखों में होता है, प्यार चेहरे और हुस्न से नहीं होता, दिल से होता है।' हम इन सालों में बहुत अच्छे दोस्त बन गये।

हम ऑरकुट पर खूब सारी पिक्चर्स, हॉबीज एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानने लगे। पहले लगता था कि शायद वो मुझे पंसद करें या ना करें, लेकिन आदित्य छोटी सोच वाला इन्सान नहीं है। इन सालों में हम कभी नहीं मिल पाये। बस पहले के जैसे हम मोबाईल से सम्पर्क में थे। मैं और आदित्य दोनों सेकण्ड इयर में थे। आदित्य मेडीकल कॉलेज फर्स्ट ईयर के बाद आदित्य और उसके दोस्तों की मस्तियाँ बहुत कम या यूं कहो न के बराबर रह गयी। अब ना तो यह मिडनाईट मिशन पर जाते हैं ना वॉक पर और ना ही डिसेक्शन हॉल के आस-पास भटकते हैं।

हाँ, पहले की तरह चारों एक दूसरे को डबलबैट्री, चिंतामणि, ए2 साईलेन्ट मोड कहने से बाज नहीं आते। चारों में बहुत अच्छी दोस्ती है और सभी में बोंडिग कमाल की है। अब साईलेन्ट मोड, साईलेन्ट मोड नहीं रहा, बहुत बोलता है। एक बार आदित्य को फोन किया तो साईलेन्ट मोड ने फोन उठाया, मैंने बात की तो ये इतना बोलता है, कि पता नहीं इसका नाम साईलेन्ट मोड किसने रखा। अब चारों फ्रेंड ग्रुप में पढ़ाई करते हैं। अब मस्ती करते हैं पर फर्स्ट ईयर मे जो मस्ती करते थे वैसी मस्ती नहीं रही। अब तो ये अपने लिए भी टाईम नहीं निकाल पाते, तो मिड नाईट वॉक और डिसेक्शन के लिए कहाँ से टाईम निकालेंगे और वैसे भी मेडीकल कॉलेज का तो सिद्धान्त है, स्टडी, स्टडी, एण्ड मोर स्टडी, इस कारण कई-कई दिनों तक हम दोनों बात तक नहीं कर पाते लेकिन आदित्य की फाइल और उसकी यादों का अहसास ही काफी है।

अब इनको किसी सिनियर्स का डर नहीं हैं। अब ना तो इन्हें पॉकेट में प्रेंगनेंसी किट रखनी पड़ती है और ना सिगरेट लेकिन वो दिन याद करते हैं, जब सोनू रितेन बॉस को गाली देता हुए सीनियर्स हॉस्टल पहुँचा था। इस घटना को याद कर सब मिलकर सोनू की टांग खीचने का मौका नहीं छोड़ते।

अब तो आदित्य के रविश टिफिन सेन्टर ने भी कुछ ही दिनों में अपना दम तोड़ दिया। वह ज्यादा दिन अस्तित्व में नहीं रह पाया और आदित्य ने मुझे लजीज व्यंजन खिलाने का अपना वादा अभी तक पूरा नहीं किया। ना ही हम दोनों मिले और ना ही गवर्नमेन्ट ने फूड एटीएम. जैसी कोई स्कीम निकाली। अब तो बस इंतजार है, भगवान ने हमें मिलाया तो फूड एटीएम की जरूरत नहीं पड़ेगी।

फाइल

t.me/HindiNovelsAndComics

रविवार **20** जुलाई**, 2003**

सोनू का प्यार परवान चढ़ा भी नहीं था कि दम तोड़ गया।

रितिका पढ़ाई के लिए कोलकाता चली गयी। दोनों डबलबैट्री ना आपस में मिल पाए और ना चारबैट्री बने।

नव अभी तक नीता मैम को पंसद करता है। अब उसकी फैमली नव की शादी के लिए जबरदस्ती नहीं करती। उन्हें यकीन भी हो गया कि उनका बेटा कॉलेज में जाकर बिगड़ा नहीं है।

मैंने व्हिस्की ना पीने का जो वादा किया था वो कायम रखा और मेरे साथ-साथ दोस्तों ने भी व्हिस्की को हाथ नहीं लगाया। दोस्तों ने भी साथ में व्हिस्की से सन्यास ले लिया।

शुक्रवार **01** अगस्त**, 2003**

"माही बेटा कल तेरा कॉलेज तो नहीं है ना?" दादी ने पूछा।

मैंने हाथ में रखी प्लिडिंग की बुक एक तरफ रखते हुए दादी की ओर देखा।

"क्या हुआ माही?"

"दादी कल का दिन मैं कैसे भूल सकती हूँ, मेरी मम्मी का जन्मदिन है," मैं दादी से लिपट गयी, "हम कल का पूरा दिन मम्मी के साथ गुजारेंगे।"

"हाँ माही।"

"अच्छा तो आओ मेरे साथ," मैं दादी को अपनी अलमारी तक ले गयी। "बताओ दादी मैं कल क्या पहनू?" मैंने दादी के सामने अलमारी खोलकर रख दी। "ये रेड वाला" मैंने दादी की तरफ देखा। "नहीं, नहीं रेड नहीं।" "दादी ये पिंक वाला चिकन सूट ठीक है ना।" मैंने कहा।

"हाँ, मेरी माही हर ड्रेस में अच्छी लगती है, ये क्या है?" दादी ने मेरी अलमारी में रखी चुनरी की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"दादी इस सूट पर मैं यहीं चुनरी ओढ़ कर मम्मी को दिखाऊँगी कि उनकी बेटी अब बहुत बड़ी हो गयी है। अब तो जागो और मुझे चुनरी ओढ़ाओ, मैं आपके बिना शादी नहीं करूंगी।"

"हाँ," दादी की बड़ी-बड़ी आँखों के किनारों पर पानी की बूँदे उभर आई।

"दादी, इस बार मम्मी को ठीक होकर घर वापस आना ही होगा" मैं अपने कपड़ां को सलीके से अलमारी में जमाने लगी। दादी अपने आँसू पोछते हुए कमरे से ओझल हो गयी।

तभी मेरे मोबाईल पर स्क्रीन फ्लेश हुआ, आदित्य का फोन था।

"हलो डॉ॰ साहब।"

"हाय माही, एक न्यूज सुनो, तुम सुनोगी तो खुशी से पागल हो जाओगी,"

"हाँ, मुझे भी कुछ कहना है। चलो पहले तुम कहो, ऐसी क्या न्यूज है, जिससे मैं पागल हो जाऊँगी।"

"माही, मैं दिल्ली में हूँ," आदित्य ने हँसते हुए कहा।

"क्या!" मैंने चहकते हुए पूछा और आइने के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

"हाँ,"

t.me/HindiNovelsAndComics

"कब आये?"

"दो दिन हो गये," आदित्य ने कहा।

"दो दिन हो गये और तुम मुझे अब बता रहे हो," मैंने गुस्से में कहा। अगर आदित्य उस वक्त मेरे सामने होता, तो उसके सर के बाल नोंच लेती।

"सॉरी यार, एकदम से प्रोग्राम बना," आदित्य ने डरते हुए कहा। जैसे कि मैं सचमुच में उसके बाल नोंचने वाली हूँ।

"यहाँ आने का कैसे प्रोग्राम बन गया?" मैंने बडी उत्सुकता से पूछा।

"यहाँ एम्स में प्रोग्राम है, जिसमें पूरे इण्डिया के डॉक्टर्स और मेडिकल स्टूडेन्ट आते हैं। इस बार हम ये प्रोग्राम अटेण्ड करने आये हैं, हर साल ये प्रोग्राम होता है।"

"ओह.... तो एम्स में क्या-क्या प्रोग्राम हो रहे हैं?" मैंने पूछा।

"सभी कल्चर एक्टीविटीज होती है, सभी तरह के प्रोग्राम होते हैं। पाँच दिन तक प्रोग्राम है।"

"अभी तो यहाँ रूकोगे ना?"

"हम्म।"

"तो बताओ कब मिल रहे हो?" मैंने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा।

"माही, क्या हम कल मिल सकते हैं? मैंने मिलने के लिए ही तो फोन किया है।"

"आदित्य कल नहीं मिल पाएंगे," मैंने कहा।

"यार कल क्यों नहीं? कल रात मेरी 9 बजे की ट्रेन है," आदित्य ने कहा।

"कल मेरी मम्मी का जन्मदिन है।"

"ओह.....अब कैसे मिलेंगे?" आदित्य की आवाज एक दम उदासी भरी लग रह थी, थोड़ी देर पहले वाली हँसी कहीं खो गयी थी।

"पूरा दिन हम सब मम्मी के पास रहेंगे, यही एक दिन होता है साल का जिसमें हम मम्मी के बेहद करीब होते हैं।"

आदित्य खामोश था।

"अच्छा आदित्य ऐसा करते हैं कि हम हॉस्पीटल के पास वाले ग्रीनपार्क गार्डन में मिलेंगे," मैंने आइने के सामने आँखे मिचमिचाते हुए कहा।

"हाँ।"

"सिर्फ आधा या एक घण्टे के लिए," मैंने कहा।

"थैंक्स माही, कल हम पहली बार मिलेंगे, मैं तो तुम्हें एक बार देखने के लिए बेताब हूँ, इन सालों में हम एक-दूसरे से मिले भी नहीं हैं।"

"मैं भी मिलना चाहती हूँ।"

"तो बताओ कितने बजे मिल रही हो?" आदित्य ने बेसब्री से पूछा।

"लंच टाईम, एक बजे। लंच टाईम में जब सब लंच के लिए जाएँगे तो मैं तुमसे मिलने आ जाऊँगी। वैसे भी ग्रीनपार्क, एम्स के बहुत ही पास है, मैं 10 मिनट में आ जाऊँगी।"

"तो क्या तुम लंच नहीं करोगी?" आदित्य ने पूछा।

"मैं बाद में देख लूंगी,"

"तुम आ जाना हम साथ में लंच करेंगे, मैं कुछ पैक करके ले आऊँगा।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"कल का दिन मेरे लिए बहुत यादगार होगा, मम्मी का जन्मदिन भी सेलीब्रेट करेंगे और हम मिलेंगे भी। आदित्य हम हमेशा यहीं डेट सेलीब्रेट किया करेंगे। हमारा यादगार दिन, हम चाहे किसी और दिन मिले-ना-मिले, लेकिन हर साल इस दिन जरूर मिला करेंगे।" मैंने खुश होते हुए कहा।

"माही एक वक्त ऐसा भी आयेगा हमारी जिंदगी में, जब हमें मिलने के लिये साल में एक दिन का इंतजार नहीं करना पडेगा। हम हमेशा साथ होंगे, एक दूसरे के साथ रहेंगे," आदित्य ने कहा।

"वो वक्त कब आयेगा?" मैंने कहा।

"वो तो मैं भी नहीं जानता," आदित्य ने कहा।

"अच्छा पहले तुम ये बताओ तुम्हारे लिए मैं क्या बनाकर लाऊँ?" मैंने कहा।

"अच्छा तो तुमको कुछ बनाना भी आता है," आदित्य ने चिढ़ाते हुए कहा क्योंकि आदित्य जानता है कि मुझे कुछ भी बनाना नहीं आता है।

"मैं तो ऐसे ही पूछ रही थी। मेरा मतलब था कि दादी से कुछ बनवाकर ले आऊँगी," मैंने मासूमियत भरी अवाज में कहा।

"नहीं, कुछ भी बनाकर मत लाना, हमेशा मैं ही बनाकर खिलाया करूँगा।"

"ठीक है, लगता है अब बातों से ही पेट भर दोगे।कल मम्मी के जन्मदिन का केक लेकर आऊँगी।"

"हाँ, थोड़ा ज्यादा लेकर आना," आदित्य ने खी खी हँसते हुए कहा।

"हाँ, खूब सारा लेकर आऊँगी, चलो अब रात हो गयी है।क्या कहते हो तुम फ्रेंच में?" मैंने कहा।

"वोन्ने न्यूट," आदित्य ने कहा।

मैं फोन को एक तरफ रख कर बिस्तर पर लेट गई और आने वाले कल के लिए हजारों सपने बुनते-बुनते सो गयी।

शनिवार 2 अगस्त, 2003

अगले दिन सुबह मैं जल्दी ही उठ गई। जब मैं उठी तो मुझे लगा आज भी रोज की तरह जरूर 09 बजे गये होंगे। मैं हड़बड़ाकर उठी और दीवार पर टंगी घड़ी पर निगाह गयी जिसमें अभी सुबह के 5.30 बज रहे थे। मैं फटाफट उठकर किचन में गई जहाँ दादी पहले से ही थी। वो केक का बेस तैयार कर रही थीं। मैं दादी के पास जाकर बोली, "दादी...।"

"उठ गया मेरा सोना बेटा, आज इतनी जल्दी कैसे उठ गयी?"

"मैं भी आपके साथ केक बनाऊँगी," मैं दादी के साथ केक बनाने में जुट गई।

"केक बहुत यमी दिख रहा है," मैंने दादी से कहकर बड़ा केक बनाया क्योंकि आदित्य के लिए ले जाना था।

"माही केक पैक कर और थोड़ा जल्दी कर। देख कितना टाईम हो गया," दादी ने जल्दी-जल्दी कहा।

मैंने किचन में रखी घड़ी पर नजर दौड़ाई, घड़ी में 9 बज रहे थे, "ओह... दादी कितना टाईम हो गया पता ही नहीं चला," मैंने दादी की तरफ देखते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"कैसी है मेरी बहू?" दादू फोन पर बात कर रहे थे।

"अब फोन पर क्या पूछ रहे हो, हम वहाँ जा ही तो रहे हैं। जरा आकर गाड़ी में सामान रखवा लो," दादी ने किचन से ही आवाज लगाते हुए कहा।

"चल मोटू, हम थोड़ी देर में आ ही रहे हैं," दादू ने फोन पर कहा। दादू, डॉ॰ अंकल को प्यार से मोटू ही कहते हैं, उनके बचपन का लंगोटिया यार जो हैं।

आज हम बहुत खुश हैं, बल्कि ये कहना ठीक रहेगा कि हमारे लिए मम्मी का जन्मदिन किसी त्यौहार से कम नहीं है। मेरे दादू-दादी भी उन्हें अपनी बेटी से बढ़कर प्यार करते हैं। हमने मम्मी की जरूरत का सारा सामान और जन्मदिन सेलीब्रेट करने का सामान गाड़ी में रख लिया। दादू गाड़ी चला रहे थे। मैं, और दादी पीछे बैठे थे। वैसे मेरी प्यारी डायरी, तुमको बता दूँ कि मेरे दादू की ड्रायविंग बहुत कमाल है। मैं जब छोटी थी तो मैं और दादू हमारी पुरानी कमाण्डर जीप से पूरा जंगल घूमते थे। उस वक्त हमारे पास रायफल हुआ करती थी। मुझे बहुत अच्छा लगता था, दादू के साथ शिकार पर जाना और जब घर वापस आते थे, तो मम्मी की डाँट खाते थे। मम्मी को हमारा शिकार पर जाना बिल्कुल भी पसंद नहीं था।

थोड़ी ही देर में हम एम्स पहुँच गये। मेरे ख्याल से डॉक्टर के अलावा कोई हॉस्पीटल जाकर खुश नहीं होता है, लेकिन हम यहाँ आकर, मम्मी से मिलकर बहुत खुश होते हैं। हम हॉस्पीटल के गेट से अंदर पहुँचे ही थे कि दादू के दोस्त खड़े थे। दादू जब भी अपने दोस्त से मिलते हैं, तो गले लगकर मिलते हैं, लेकिन आज डॉ॰ अंकल गंभीर लग रहे थे। आगे-आगे डॉ. अंकल और दादू बात करते जा रहे थे। मैं और दादी उनके पीछे-पीछे मम्मी के वॉर्ड तक जा रहे थे। दादू और अंकल किसी गंभीर मुद्दे पर बात कर रहे हैं, आज दोनों हमेशा की तरह गर्मजोशी से नहीं मिले और यहाँ तक कि बात करते वक्त जो उनके चेहरे पर हँसी होती है, आज वह भी गायब थी। दादू थोड़ी देर पहले तो बहुत खुश लग रहे थे। मैं, दादू और अंकल को बड़े ध्यान से देख रही थी। धीरे-धीरे किसी गंभीर टॉपिक पर बात कर रहे थे कि उनकी आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी।

"दादी, दादू एकदम से गंभीर हो गये," मैंने पूछा।

"मुझे भी कुछ समझ नहीं आ रहा," दादी ने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

"होगी कोई दोस्तों के बीच की बातें, हमें क्या। जल्दी चलो जन्मदिन सेलीब्रेट करना है," मैंने चहकते हुए कहा।

दादू डॉ॰ अंकल से बात करके, हमारे पास आ गये और हमें देखने लगे। "अब वापस क्यों आ गये? घर पर तो बहु के हालचाल जानने की बहुत जल्दी थी, अब नहीं है क्या?" दादी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तुम दोनों घर पर जाओ," दादू का चेहरा अब भी गंभीर था।

"लेकिन क्यों दादू?" मैंने चौंकते हुए पूछा।

"मैंने कहा ना जाओ," दादू ने चीखते हुए कहा।

दादू की तेज आवाज से हॉस्पीटल में मौजूद सभी लोग हमारे तरफ देखने लगे। मैं एकदम सकपका गयी, आखिर दादू ऐसा क्यों कह रहे हैं।

डॉक्टर अंकल ने दादू के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा "तुम दोनों जाओ, शालिनी से

t.me/HindiNovelsAndComics

मिल लो।”

“मेरी समझ में नहीं आ रहा ये हो क्या रहा है?” दादी ने कहा।

“ये तू क्या कह रहा है?” दादू ने अपने दोस्त से कहा।

“क्या तू एक बार भी इन दोनों को शालिनी से मिलने नहीं देगा?” डॉक्टर अंकल ने कहा।

हम नजरें झुकाये दादू की बातें ध्यान से सुन रहे थे।

“ये चल क्या रहा है?” दादी ने पूछा।

“लेकिन माही अभी बच्ची है वो कैसे ये सब...! दादू अपनी बात पूरी किये बिना ही सुबक-सुबक के रोने लगे।

अब तो मेरा दिल बहुत जोरों से धड़क रहा है, पता नहीं इन सबको आज क्या हो गया है?

“दादू क्या हुआ, आप क्यों रो रहे हो?” मैंने दादू के करीब जाते हुए कहा। लेकिन दादू ने एक शब्द भी नहीं कहा और पास रखी कुर्सी पर बैठ गये।

मैं और दादी, दादू को वहीं छोड़कर तेज कदम बढाते हुए मम्मी के रूम तक जाने लगे और ना जाने क्यों मन में अजीब-अजीब ख्याल दिमाग को परेशान कर रहे थे। दादी मेरे साथ ही चल रही थी।जब मैंने साथ में चल रही दादी की ओर देखा तो उनकी आँखों में आँसू थे। उनके कपकपाते होठ और गंभीर चेहरा, जिसने मुझको अंदर तक सहमा दिया। ये स्थिती बहुत दर्दनाक थी। मैं कुछ भी अप्रिय होने की कल्पना भी नहीं कर सकती। पहले ही मेरे साथ इतना कुछ हो चुका है, कि अब और नहीं। भगवान को याद करते-करते मम्मी के वॉर्ड तक पहुँची। मेरा दिल मानो ऐसे धड़क रहा था, जैसे की हाथ में आ जाएगा। मम्मी जिस रूम में थी, हम उस रूम के गेट पर पहुँचे जो पहले से खुला ही था, जैसे ही हम रूम में पहुँचे, रूम में कोई भी नहीं था। 10 साल से मम्मी इसी रूम में थी लेकिन आज यहाँ पर नहीं है। मैंने चौकन्नी निगाहों से पूरे रूम का ब्योरा किया। बैड, मशीन, सब कुछ अपनी जगह पर है, बस मम्मी नहीं थी।

“मम्मी कहाँ हैं?” मैंने दादी का हाथ पकड़ते हुए पूछा, जो अभी तक अपने आँसुओं को नहीं रोक पाई थी।

“चलो डॉक्टर से पूछते हैं?” दादी की आवाज आंसूओ से भीगी हुई थी।

“दादी आप रो क्यों रही हो?” मैंने दादी से इतना पूछने पर भी, दादी ने कोई जवाब नहीं दिया। वो अब भी चुप थी।

मैं बस कुछ देर दादी को ही देखती रही। हम लिफ्ट से उसी फ्लोर पर वापस आ गये, जहाँ हमने दादू और डॉ॰ अंकल को छोड़ा था। वो अभी भी वहीं खड़े थे, उसी गंभीर हालत में। मैंने दादू के पास जाकर कहा “मम्मी अपने रूम में नहीं हैं।”

“मेरे साथ आओ,” डॉक्टर अंकल ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा।

मैं डॉ॰ अंकल के साथ, जहाँ वो ले जा रहे थे, उनके साथ चली जा रही थी, मेरे पीछे दादू-दादी आ रहे थे।

डॉ॰ अंकल मुझे तलघर में ले गये, जहाँ बहुत अंधेरा था। यहाँ एक ऐसा बड़ा हॉल है, जहाँ पर रोशनी कम है और मुझे इसी अंधेरे टेबल के पास लाकर खड़ा कर दिया और टेबल

t.me/HindiNovelsAndComics

पर व्हाईट चादर से ढकी हुई लाश की तरफ इशारा किया।

मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं चादर उठाकर देखूँ। मैं चुपचाप मुँह पर हाथ रखे सिर्फ खड़ी होकर एकटक टेबल को देख रही थी। दादी टेबल के पास आयी और उन्होंने चादर हटाई।

चादर हटने के बाद टेबल पर मम्मी का बेजान चेहरा देखकर मैं जोर से चीखी।

मैं, मम्मी के पास जाकर मम्मी को जोर-जोर से हिलाने लगी! "मम्मी आज आपका बर्थडे है। हैप्पी बर्थडे मम्मी, प्लीज उठो," मैंने रोते हुए मम्मी से कहा।"प्लीज मम्मी उठो, हम घर चलेंगे। बहुत रह लिये यहाँ पर, अब घर चलकर रहो।" मैं मम्मी को हिलाती रही लेकिन मम्मी नहीं उठी। दादी ने मुझे खीचते हुए अपने गले लगा लिया, "दादी प्लीज मम्मी से कहो कि मुझे उनसे बहुत सारी बातें करनी है। इन 10 सालों में बहुत सारी बातें हैं, जो मुझे कहना है," मैंने दादी से कहा।

"दादी, मैं मम्मी को बताना चाहती हूँ कि मैं उनको बहुत प्यार करती हूँ। हर पल उनके लिये तरसती हूँ। एक बार तो मुझसे बात की होती। आपने इन दस सालों में, एक बार तो मुझसे प्यार किया होता। क्या आपको मुझ पर तरस नहीं आया? जो अपना प्यार नहीं दिया। माँ बता दो मेरी क्या गलती थी? हमेशा हॉस्पीटल में ही सोती रही और आज हमेशा के लिये सो गयी। बता दो माँ मेरी क्या गलती थी जो मुझे आपका प्यार नहीं मिला?" मैं दादी से लिपटी रोये जा रही थी। पहले एक उम्मीद थी कि कभी ना कभी तो माँ मुझसे बात करेंगी, लेकिन अब तो वो आखिरी उम्मीद भी टूट गयी।

"राजवीर, शालिनी अब नहीं रही, तू जल्दी आजा," दादू ने फोन पर कपकपाती आवाज में कहा।

मैंने और दादी ने दादू की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। हम दोनों अभी भी एक दूसरे से लिपटे हुए रोये जा रहे थे।

डॉ॰ अंकल थोड़ी देर के लिये हमें अकेला छोड़कर बाहर चले गये। इस बीच कितना वक्त हुआ हमें कुछ नहीं पता, लेकिन कम्पाउन्डर की तेज आवाज ने हमारा ध्यान तोड़ा।

"क्या रोना धोना मचा रखा है तुम लोगों ने हॉस्पीटल में, लाश लेकर जाइए आप लोग। ये हॉस्पीटल हैं, शांत रहे" कम्पाउन्डर चिल्लाते हुए बोला।

"तुम कौन होते हो ऐसा बोलने वाले, किसी से बात करने की ये क्या तमीज है।" डॉ॰ अंकल ने कम्पाउन्डर को उसकी बत्तमीजी के लिये डांटा और अंदर हॉल में हमारे पास आ गये।

"सॉरी डॉ॰, मुझे नहीं पता था ये आपके रिश्तेदार है," कम्पाउन्डर ने सर झुकाकर कहा।

"अब जाओ, अपना काम करो," डॉ॰ अंकल ने कहा।

"हम राजवीर का इंतजार कर रहे हैं। मेरी अभी उससे बात हुई है, वो फ्लाईट से आ रहा है। उसके आने के बाद ही अंतिम संस्कार होगा," दादू ने कहा।

इसके आगे वह कुछ नहीं बोल पाए, दादू की आवाज कपकपा रही थी।

डॉ॰ अंकल ने दादू के कंधे पर हाथ रख दिया। पता नहीं कितनी देर तक हम इस अंधेरे हॉल में बैठे रहे। मैं एकटक माँ को ही देख रही थी।

t.me/HindiNovelsAndComics

दादू रात होते-होते बार-बार हॉल में दीवार पर टंगी घड़ी देख रहे थे और पेरशान होते हुए अपने आप से बड़बड़ाते हुए बोले, “राजवीर कहाँ रह गया? उसने तो कहा था सिर्फ 6 घण्टे लगेंगे फ्लाईट से दिल्ली आने में, लेकिन अब तो राजवीर से बात किए 11 घण्टे हो गये।” दादू ने फोन भी लगाया, पर फोन नहीं लगा।

सुबह 5 बजते ही दादू खड़े हुए और डॉ. अंकल से कहने लगे। “अब और कितना इंतजार करें, हमें अंतिम संस्कार की तैयारी करनी चाहिए।”

“नहीं दादू,” मैं चीखते हुए दादू के पैरों में जा गिरी, “दादू प्लीज मेरी मम्मी को कहीं मत ले जाओ। आप यही समझो कि वो सो रही है। मेरी माँ को हमेशा यहीं रहने दो” मैंने रोते हुए कहा।

दादू ने मुझे उठाया “माही ऐसे नहीं होता, मेरे बच्चे” दादू ने मेरे आँसुओं को पोछा और खुद को संभालते हुए टेबल की ओर बढ़ने लगे।

दादी ने फिर से मुझे अपने गले लगा लिया। “माही,” इसके अलावा दादी कुछ नहीं कह पायी। सुबह 6 बजे एम्बुलेंस में बैठे थे। सामने दादू, डॉ॰ अंकल दोनों बैठे थे, बीच में स्ट्रेचर पर मम्मी लेटी थी और इस तरफ मैं, दादी के कंधे पर सर रखे रो रही थी और मम्मी को देख रही थी। मम्मी स्ट्रेचर पर तसल्ली से लेटी थी, जैसे गहरी नींद में सो रही हो। मुझे मम्मी को देखकर बस एक ही उम्मीद थी कि मम्मी एक बार तो उठकर मुझसे बात करेंगी, मुझे गले लगाएगी, मुझे खूब प्यारा करेंगी और मैं मम्मी से अपने एक-एक सवाल का जवाब मांगूगी, लेकिन मम्मी नहीं उठी। एक घण्टे में हम शमशान पहुँचे, जब तक सूरज निकल आया था।

हर सुबह हमें जीने की एक नयी राह दिखाती है, लेकिन आज के उगते सूरज ने मुझसे मेरी माँ को हमेशा के लिये छीन लिया, फिर मैं माँ को कभी नहीं देख पाऊँगी।

दादू अभी भी बार-बार पापा को फोन लगाए जा रहे थे। फोन ‘ऑउट ऑफ कवरेज एरिया‘ बता रहा था। मम्मी लकड़ी की बनी शैया पर लेटी हुई थी। दादू को अभी भी यही लगता है पापा आएंगे और मम्मी को आग देंगें, लेकिन पापा नहीं आए, दादू ने ही मम्मी को आग दी।

देर रात तक हम घर आये।

घर आने के बाद भी आँखों के सामने सिर्फ माँ का चेहरा याद आ रहा था। ऐसे वक्त में मेरे दिमाग को संभाल पाना बहुत ही मुश्किल होता है। माँ को लेकर मैं बचपन से ही भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई हूँ। मन में भावनाओं का एक सैलाब है। जिसमें मैं बहकर चली गयी, मेरी ख्वाहिश थी कि मम्मी मुझसे बात करेंगी, गले लगाएँगी लेकिन मेरी सारी खुशियाँ, मेरी सारी ख्वाहिशें, तिनके की तरह मेरे आँसुओं के सैलाब में वह गयी। मैं अपने आप को अनाथ महसूस कर रही हूँ, मेरा कोई नहीं है। तभी दादी मेरे रूम में मेरे पास आयी और मुझे गले लगा लिया।

रविवार 3 अगस्त, 2003

मैं अपने रूम के कोने में चुपचाप बैठी थी उस दिन के बाद मेरा दादू-दादी से बात करना कम हो गया। मैं किसी से भी बात नहीं करना चाहती, बस अकेले रहना चाहती हूँ,

t.me/HindiNovelsAndComics

तभी पास में रखे मोबाईल में स्क्रीन फ्लैश हुआ। मैंने मोबाईल हाथ में लेकर देखा, उसमें आदित्य का कॉल आ रहा था। मैं आदित्य से बात नहीं करना चाहती थी, फिर भी मैंनें आदित्य का कॉल रिसीव कर लिया।

"हेलो"

"हाय माही कहाँ हो यार तुम? पता है मैं उस दिन ग्रीन पार्क में दिन के 1 बजे से रात के 8 बजे तक वहाँ तुम्हारा इंतजार करता रहा। मैंने, तुम्हें कितने फोन किये, लेकिन तुम्हारा फोन बंद आ रहा था। रात को नव और सोनू मुझे बुलाने आये, उस वक्त हमारी ट्रेन का टाइम हो गया था लेकिन मैं तुमसे बिना मिले जयपुर वापस नहीं जाना चाहता था। मुझे सोनू और नव के कहने पर जाना पड़ा। माही तुम क्यों नहीं आयी मैंने बहुत इंतजार किया, क्या हुआ तुम्हें?" आदित्य ने कहा।

मैं सिर्फ सुनती रही कुछ बोल नहीं पायी।

"माही बोलो न क्या हुआ, तुम चुप क्यों हो?" मैं फिर भी शांत थी।

"माही तुम ठीक तो हो ना?"

"हाँ," मैं इतना ही कह पाई। मेरी आँखों से झर झर आँसू बहने लगे।

"झूठ, तुम्हारे रोने की आवाज आ रही है। सॉरी मैं फौन करते ही तुमसे ना जाने क्या-क्या कह गया, कितने सारे सवाल पूछ लिए, जरूर कोई वजह होगी ना आने की, अब बताओ क्या बात है?"

"आदित्य," मैंने रोते-रोते कहा, मैंने अपने आँसू पोंछ लिए लेकिन मेरी आवाज बहुत भारी हो गयी। मैं आदित्य के अलावा और कुछ नहीं कह पायी।

"हाँ बोलो।"

"आदित्य, मम्मी से मैं कभी नहीं मिल पाउँगी। उनका बर्थ डे भी हम सेलीब्रेट नहीं कर पाए," सारी बातें आदित्य से कह गई। मैं अब भी जोर से रो रही थी।

"ओहह माही," आदित्य सिर्फ इतना ही कह पाया कि दादी मेरे रोने की आवाज सुनकर मेरे रूम में आ इतं जिससे मैंने फटाफट फोन काट दिया।

"माही, तू अकेले यहाँ बैठे-बैठे क्या कर रही है? बेटा अब बाहर चलो," दादी मेरा हाथ पकड़ कर बाहर रूम में ले गयी।

चार महीने बाद

मंगलवार 2 दिसम्बर, 2003

माँ की डेथ के बाद कई महीनो तक मैंने डायरी नहीं लिखी। मेरा आदित्य से बात करना एकदम बंद हो गया। पहले हम बात नहीं तो कम-से-कम चैट किया करते थे। ऐसा कोई दिन नहीं जाता था जब हम चैटिंग न करते हो! मैंने इस डायरी में खास उन्हीं लम्हों, उन्हीं बातों को अहमियत दी जो लिखना जरूरी था। अगर मेरे आदित्य की रोज की बातों को लिखने बैठूँ तो ना जाने ऐसी कितनी-कितनी डायरियाँ भर जाए। माँ के गुजरने के बाद मैं एकदम से अकली हो गई हूँ। यह अकेलापन मुझे अंदर-ही-अंदर खोखला कर रहा है। ये चार महीनों का समय मुझे घोर अंधेरे की ओर ले गया और यही वजह है आदित्य से ना बात करने की, ना चैटिंग करने की, लेकिन मैं आदित्य को बहुत मिस करती हूँ।

t.me/HindiNovelsAndComics

गुरूवार 4 दिसम्बर, 2003

"ओह, आज तुम्हें फोन तो लगा। तुम जानती हो। चार महीने हो चुके हैं। तुमने बात करना तो दूर एक मेसेज भी नहीं किया। तुम्हारा मोबाईल भी बंद आता था, मैंने तुम्हें बहुत मिस किया। मैं तुम्हारे हालात समझ सकता हूँ, तुम किन परिस्थितियों से गुजर रही हो, लेकिन इस तरह से तुम्हारी परेशानियाँ कम नहीं होंगी। अपने आप को तकलीफ मत दो, बाहर आओ इन परिस्थितियों से।"

"आप कौन बोल रहे हैं? आपको किससे बात करनी है?" दादी ने आदित्य के लम्बे चौड़े भाषण को विराम देते हुए कहा।

"आँटी, मुझे अकांक्षा से बात करनी है," आदित्य ने हडबड़ाकर जवाब दिया।

"बेटा, गलत नम्बर पर आपने कॉल किया है," अपनी बात पूरी कहकर दादी ने फोन रख दिया।

"दादी अभी किसी का फोन आया था क्या?" मैंने अपने रूम से बाहर आते ही पूछा।

"हाँ, किसी आकांक्षा से बात करनी थी, गलत नं. था।"

"दादी फोन दो, देखूँ कौन था?"

दादी मुझे फोन देकर सोने चली गयी।दादी जल्दी 9 बजे तक सो जाती हैं।

"आदित्य," मैंने फोन पर धीमे आवाज में कहा।

"ऐसा लग रहा है, जैसे एक अरसे बाद तुम्हारी आवाज सुन रहा
हूँ, कैसी हो?"

"मैं ठीक हूँ।"

"इतने दिनों से बात क्यों नहीं की?" आदित्य ने पूछा।

"मैं अकेले रहना चाहती थी।"

"सब ठीक है ना?"

"हऽऽम"

"मैं माफी चाहता हूँ मैंने दादी से बात की, लेकिन बाद में मैंने गलत नम्बर लग गया, कहकर बात सम्भाल ली।"

"तुम कैसे हो?"

"जैसा तुमने पहले मुझे छोड़ा था, वैसा ही हूँ। इन दिनों में, मैं तुम्हारी आवाज सुनने के लिये तरस गया था।"

"माही बेटा।"

जब मैंने अपना नाम सुना तो मुड़कर देखा। दादू मेरे रूम के गेट पर ही खड़े थे, मेरे जवाब ना दे पाने के कारण अंदर चले आ रहे थे। मैं बहुत डर गयी थी। दिल की धड़कने बढ़ने लगी, मिरगी के मरीज की तरह कांपने लगी।

"माही बोलो, क्या हुआ? तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही? तुम फोन पर ही हो ना?" आदित्य ने पूछा।

"हाँ दादू।"

"क्या कह रही हो माही, दादू क्या!" आदित्य ने फोन पर कहा।

"माही तुम किससे बातें कर रही हो? हर वक्त अकेले इस कमरे में ही रहती हो, थोड़ा

t.me/HindiNovelsAndComics

बाहर भी निकलो। सुना है दादी के साथ भी तुम कहीं नहीं जाती, ना पार्क ना मॉर्केट। बेटा इस तरह अकेली रहोगी तो घुट जाओगी, फोन पर कौन है?" दादू ने अपना कहना जारी रखते हुए कहा और मेरे पास आकर बैठ गये।

"वो मैं परी से बात कर रही हूँ।"

"बेटा तू इतना कांप क्यों रही है? तेरी तबियत तो ठीक है ना?" दादू ने मेरे सर पर हाथ रखते हुए पूछा।

"मुझे आज शाम से ठण्ड लग रही है," मैंने कपकपाती आवाज में कहा।

"पहले क्यों नहीं बताया, डॉक्टर के पास चलते हैं, चलो" दादू ने कहा।

"नहीं दादू, मैं अभी सो जाऊँगी तो ठीक हो जाऊँगी। डॉक्टर की कोई जरूरत नहीं है।"

"परी से कल बात कर लेना, आराम कर और तेरी दादी को भी तेरे पास भेज देता हूँ। ये मोबाईल मुझे दे, बहुत वक्त हो गया है।मैंने परी से बात नहीं की है, ला फोन" दादू ने मेरे हाथ से फोन ले लिया।

"हैलो बेटा परी कैसी हो? हैलो परी," दादू मुझे संदेह की दृष्टि से देखने लगे, "माही फोन तो कट गया है।"

"नेटवर्क नहीं मिल रहा होगा।" मैंने डरते हुए कहा।

"कोई बात नहीं थोड़ी देर में, मैं फोन कर लूंगा, तुम आराम करो।"

"दादू फोन तो दे दीजिये।"

"फोन नहीं मिलेगा। फिर से परी का फोन आया तो तुम दोनों बातें करने लगोगी, आज तुम्हारी तबियत कुछ ठीक नहीं है। कल बात कर लेना।"

"दादू, पक्का मैं बात नहीं करूंगी और जैसे ही परी का फोन आएगा, मैं आपकी बात करवा दूंगी।"

"ठीक है, परी से बात करते रहा करो। तुम्हें अच्छा लगेगा। दादी को भेजता हूँ।" मेरा मोबाइल देकर दादू कुछ ही सेकेण्ड में रूम से बाहर चले गये।

आज बाल-बाल बची वरना बहुत डांट पड़ती। अभी भी डर के कारण हाथ-पैर कांप रहे है। मैं, आदित्य को अब दोबारा फोन करने के बारे में सोच भी नहीं सकती।

"क्या हुआ सोना तुझे? तेरी तबियत ठीक नहीं है" दादी ने कहा। और दादी अपने साथ हाथ में काढ़ा भी ले आयी।

दादी को जब मुझ पर बहुत प्यार आता है या जब उन्हें मेरी फिक्र होती है, तो मुझे सोना कहकर बुलाती हैं।

"माही काढ़ा पी ले। तेरे दादू ने बताया कि तेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं हूँ ना तेरे साथ, मैं आज यहीं तेरे पास सो जाऊँगी।"

"नहीं दादी, मैं अकेले सो जाऊँगी, काढ़े की भी जरूरत नहीं है," मैंने कहा।

मुझे काढ़ा बिल्कुल भी पसंद नहीं है और ऊपर से मैं बीमार भी तो नहीं हूँ। मेरे लाख मना करने के बाद भी दादी ने जबरदस्ती काढ़ा पिला ही दिया, और मुझे चुपचाप नाक बंद करके काढ़ा पीना पड़ा।

शुक्रवार **5** दिसम्बर**, 2003**

t.me/HindiNovelsAndComics

करवट बदलते-बदलते रात के 2 बज चुके थे, लेकिन मेरी आँखों में जरा भी नींद नहीं है। दादी गहरी नींद में सो गयी हैं। मैं चुपके से उठी ताकि दादी की आँख ना खुल जाए। मोबाईल लेकर बालकनी में आ गयी और टहलने लगी। इसी उधेड़बुन में थी कि आदित्य को कॉल करूँ या नहीं। पता नहीं वो मेरे बारे में क्या सोच रहा होगा कि दादू से मैंने झूठ बोला कि फोन पर आदित्य नहीं परी है। मैं सच कहने से डर गयी थी।

आखिर मैंने आदित्य को कॉल किया। छह रिंग के बाद आदित्य ने फोन रिसीव किया, ना ही मैंने कुछ कहा और ना ही आदित्य ने। कुछ सेकंड की खामोशी के बाद मैंने ही बोलना शुरू किया।

“आदित्य सो गये हो क्या?”

“माही फोन पर तुम ही हो ना।”

“हाँ” मैंने जवाब दिया।

“मैं जाग रहा हूँ, मैं घबरा गया था, मैंने सोचा शायद दादू ने फोन किया इसलिये मैं चुप था, माही सब ठीक तो है ना?”

“हाँ, गड़बड़ तो कुछ नहीं हुई। अगर दादू को पता चल जाता कि मैं परी से नहीं किसी लड़के से बात कर रही हूँ तो मेरी बहुत बुरी हालत होती।”

“क्या तुम्हें डांटते?” आदित्य ने धीरे से पूछा।

“बहुत डांटते, दादू को बिल्कुल भी पंसद नहीं है कि मैं किसी लड़के से बात करूँ। वो थोड़ा पुराने खयालात के हैं और मुझसे बहुत प्यार करते हैं शायद इसलिए भी। खैर मुझे तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहिए। दादू की आवाज सुनते ही तुमने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।”

“जब दादू तुमसे बात कर रहे थे तब मैंने फोन पर सब सुन लिया था, इसलिए दादू के हैलो कहने पर ही फोन काट दिया था।वैसे आज मैंने तुम्हें दो बार बचा लिया।”

“सो तो है।”

“माही तुमने मेरा मोबाईल नं. किस नाम से सेव किया है?”

“परी।”

“ओह, तभी आज तुम बच गयी लेकिन आगे से ध्यान रखना,” आदित्य ने सलाह देते हुए कहा।

“जी जरूर, तुम क्यों नहीं सोये अभी तक?”

“मैं पढ़ रहा था और मुझे तुम्हारी फिक्र भी हो रही थी, क्या हुआ होगा? यही सोच रहा था।”

“हुआ तो कुछ नहीं, मैं डर के कारण कपकपा रही थी। दादी को लगा बुखार है। दादी ने बिना बुखार के मुझे कड़वा काढ़ा पिला दिया।”

आदित्य ने कुछ नहीं कहा। ठहाका लगाकर हँसने लगा।

“तुम मेरी जगह होते तब तुम्हें पता चलता कैसी हालत थी उस वक्त मेरी।”

“..हऽऽम।”

फाइल

t.me/HindiNovelsAndComics

बुधवार **10** दिसम्बर**, 2003**

"कल क्या होगा?" नव ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए कहा और फिर से अपनी बुक में आँखें गड़ा-गड़ा कर देखने लगा।

नवदीप एग्जाम के एक दिन पहले ऐसे ही सायको की तरह बिहेव करता है।

मैंने नव की आवाज सुनते ही उसकी तरफ देखा और बिना कुछ कहे, मैं कल के एग्जाम की तैयारी करने लगा।

"कैसी है नव तेरी तैयारी?" पास में बहुत देर से शांत बैठे प्रताप ने कहा।

"प्रताप, मेरा क्या होगा, मैं तो फेल हो जाऊँगा। मुझे कुछ भी याद नहीं है," नव ने हमेशा की तरह अपनी दयनीय आवाज में कहा।

"अबे आइन्सटीन की औलाद, तू पहले प्रोफेशनल में भी यही बोला था, लेकिन 80 प्रतिशत मार्क्स लाता है तू। सिर्फ हमें दिखाने के लिये ये मगरमच्छ के आँसू बहाता है। कोई इस नवाबज़ादे का मुँह बंद करो, कल हमारा भी एग्जाम है।" सोनू ने नव को घूरते हुए कहा।

"तुम दोनों को एक कमरे मे बंद कर देना चाहिए ताकि तुम सोच सको तुम्हें करना क्या है? हमे पढ़ने दोगे या यूँ ही कुत्ते बिल्ली के जैसे लड़ते रहोगे।" मैंने पूरी तरह से खिसियाते हुए कहा क्योंकि मैं इस वक्त सिर्फ पढ़ने के मूड में हूँ।

उस वक्त नव की शक्ल देखने लायक थी।

"हाँ बिल्कुल सही कह रहा है सोनू तू, नव के मार्क्स हम चारों में सबसे अच्छे आते हैं। एग्जाम हॉल से बाहर निकलते वक्त भी ये प्राणी तुझे रोता हुआ ही मिलेगा," प्रताप ने कहा और सोनू का साथ देने के लिये उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

"अब बहुत हो गया, अब तुम लोग अपना मुँह बंद रखो और मुझे कल के एग्जाम के लिये पढ़ने दो," मैंने कहा।

"अब मैं क्या कहूँ? पता नहीं कैसे अच्छे मार्क्स आ जाते हैं।" नव ने अनमने होकर कहा और चंद सेकेण्ड के लिये मुझे घूरने लगा।

"तेरे कहने का मतलब है कि यहाँ मेडीकल कॉलेज में तुझे यूँ ही मुफ्त के मार्क्स मिल जाते हैं और हमसे क्या दुश्मनी है! हमें क्यों तेरे जैसे मार्क्स नहीं मिल पाते" सोनू ने अपने चश्मे पर जमी धूल साफ करते हुए कहा।

"अब रात के एक बजे क्या हंगामा मचा रहे हो तुम दोनों। अब पढ़ने दोगे या नहीं, मॉर्निंग में पेपर है। कल माइक्रोवायो का पेपर है। जानते हो सीनियर्स क्या कहते हैं? माइक्रोवायो के सर बहुत टाइट कॉपी चैक करते हैं।" मैंने कहा।

"वैसे नव तू अपने आप को समझता क्या है?" मैंने झल्लाते हुए पूछा।

"सबसे बड़ा खिलाड़ी" प्रताप ने कहा।

"तो हमें इससे संभल कर रहना होगा," सोनू ने कहा।

"तुम सब मेरा एक काम करोगे" मैंने कहा।

"हाँ" सोनू ने कहा।

"जहन्नुम में जाओ और मुझे पढ़ने दो। रही बात नव की तो तुम वेफिक्र रहो ये खुद को सिर्फ समझता है पर है नहीं।" मेरी बातों ने सभी पर काफी हद तक प्रभाव डाला और सभी

t.me/HindiNovelsAndComics

कुछ मिनटों के लिये वापस अपनी बुक्स में आँखें गड़ा कर पढ़ने लगे।

"बहुत हो गया। तुम लोग मेरा बहुत मजाक बनाते हो। तुम हमेशा मुझे नजर अंदाज नहीं कर सकते।" नव ने कहा और उठकर खड़ा हो गया।

"तुझे क्या हो गया बे?" मैंने पूछा।

"मैं बाहर जाकर पढ़ लूंगा।"

"बाहर बहुत सर्दी है, क्यों अपने आधार थका रहा है?" सोनू ने अपनी नाक सिकोड़ते हुए कहा।

"आधार मतलब..., तू कहना क्या चाहता है?" नव ने मासूमियत से पूछा।

"अबे तेरा पिछवाड़ा! आजा, यहाँ आकर बैठ, बाहर जाएगा तो कल पेपर नहीं दे पाएगा।"

नव हमारे बीच अपना मन मसौस कर बैठ गया।

रात के 4 बज चुके थे। हम चारों पढ़ाई में जुटे हुए थे जैसे तो टॉप हमें ही करना है।

"आदित्य 2 घण्टे हो चुके हैं पढ़ते-पढ़ते, एक छोटा सा ब्रेक तो बनता है" सोनू ने कहा।

"नहीं, मेरी पूरी एक यूनिट बाकी है।" मैंने किताब में देखते हुए कहा।

"सुन तो।"

"नहीं, मैं कुछ नहीं सुनता चाहता।" मैंने कहा।

"तुझे पता है क्या?" सोनू ने कहा, जबकि मैं उसकी कोई भी बात सुनने में दिलचस्पी नहीं रखता।

"हाँ बोल, ले रख दी मैंने बुक एक तरफ। जब तक तेरी बात सुन नहीं लूंगा तब तक कान खाएगा, अब बोल जल्दी।"

"पता है कल अपने कॉलेज में नेत्रदान शिविर लगा है।

एग्जाम के बाद चलेंगे।"

"ठीक है और कुछ है तो जल्दी बक दे।"

"हमारे आई डोनेट करने का एक सबसे बड़ा फायदा है कि हम आगे आने वाली जनरेशन की लड़कियां को देख सकेंगे।" सोनू अपने दाँत दिखाते हुए हँसने लगा, "तो क्या कहते हो दोस्तों?" सोनू ने पूछा।

मुझे आज तक यह समझ नहीं आया सोनू के सामने हालात चाहे जो भी हो लेकिन ऐसी बकवास भरी बातें उसका दिमाग सोच भी कैसे लेता है, सोनू खुद तो बिना चश्मे के देख नहीं सकता और ख्वाब नेत्रदान करने का ...।

"सोनू तुझे क्या लगता है कि तेरी इन बेहुदा बातों से हम खुशी से नाचेंगे और तू ज्यादा खुश ना हो अभी तेरे सात नं. का चश्मा लगा है। तू तो इसी जनरेशन की लड़कियों को देख ले यही काफी है," नव ने कहा।

"तुम लोग चिंता मत करो मैं अपनी आँखों का ऑपरेशन करवा लूंगा, फिर बिना चश्में के भी साफ देख सकूंगा।" सोनू ने कहा।

"हमें इसकी बेहूदा बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। चार बजकर तीस मिनट हो चुके हैं।" नव ने मेरी आँखों में घूरते हुए कहा।

इसके बाद हमने सुबह आठ बजे तक ना ही कोई ब्रेक लिया और ना ही सोनू की कोई

t.me/HindiNovelsAndComics

बेहूदा बात सुनी। जिस हाल में थे उसी हालत में एग्जाम देने पहुँच गये।

एग्जाम के एक दिन पहले की हमारी यहीं दर्दभरी दांस्ता है। ना हम सोते हैं और ना ही औरों को सोने देते हैं। पूरी रात लाइट चालू रखकर, 'रट्टा' कहो या कुछ भी, बस लगे रहते हैं।

फाइल

सोमवार **05** जनवरी**, 2004**

हमें कॉलेज की तरफ से डॉ॰ एस. के. मेनन हॉस्टल मिला है। एग्जाम के दरमियान हॉस्टल में शिफ्ट होना, पूरी तरह टाइम की बर्बादी है, लेकिन हम बहुत खुशनसीब हैं कि हमें इस स्थिति से गुजरना नहीं पड़ा। एग्जाम के बीच 15 दिनों की छुट्टियों ने हमारे एग्जाम और पढ़ाई का टाइम टेबल बिगड़ने नहीं दिया, लेकिन हम अपने आशियाने जे-86 से हमेशा के लिए दूर हो गये। अपने आशियाने जे-86 को आज हमने अलविदा कह दिया लेकिन दिल में इसकी यादें हमेशा बरकरार रहेंगी।

जे-86 में बिताए एम.बी.बी.एस. का फर्स्ट इयर और इतनी सारी मस्ती ताउम्र भुलाएं नहीं भूल सकते। जे-86 में हमारे रबिश टिफिन सेंटर ने यहाँ आने के बाद अपना अस्तित्व खो दिया। अब हमें हॉस्टल की मेस में ही खाना पड़ता है। इसे मेरी खुशकिस्मती कहें या बदकिस्मती नव हॉस्टल में भी मेरा ही रूम मेट है। सोनू और प्रताप दोनों मेरे बगल वाले रूम में ही है। कहने का मतलब है, इस डबलबैट्री की बकवास हमें एम.बी.बी.एस. पूरी होने तक सहनी होगी।

एम.बी.बी.एस. के बाकी साल डॉ एस.के. मेनन हॉस्टल के नाम।

बुधवार **21** जनवरी**, 2004**

"माही मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मैं तुमसे मिले बिना मरना नहीं चाहता। मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ" आदित्य ने फोन पर हांफते हुए कहा।

"आदित्य सब ठीक तो है ना, तुम इतना हांफ क्यों रहे हो? और आज सुबह सात बजे ही कैसे कॉल किया?" मैंने पूछा।

"माही, मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ।"

"वो सब ठीक है, तुम्हें हो क्या गया है? हम मिल लेंगे तुम्हारे एग्जाम हो जाने दो और सुबह-ही-सुबह क्या तुमने मिलने की रट लगायी हुयी है आखिर बताओ भी हुआ क्या है?"

"माही, आज मैंने बहुत बुरा सपना देखा।" आदित्य ने बड़ी ही दयनीय आवाज में कहा।

"अच्छा बताओ क्या सपना देखा?"

"मैंने देखा कि मैं निजामुद्दीन ट्रेन से दिल्ली जा रहा था और मेरे साथ एक दोस्त था। वो दिल्ली से पहले ही स्टेशन पर उतरने वाला था ट्रेन में बिल्कुल भी जगह नहीं थी। हमने जो रिजर्वेशन करवाया वो भी वेटिंग में था, जनरल में तो दम घुटने वाली स्थिति थी और वहाँ वायो गैस का हद से ज्यादा प्रकोप था इसलिए हम गेट के पास ही थोड़ी सी जगह में बैठ गये। मेरा दोस्त एक स्टेशन पहले ही उतर गया। सपने में जिंदगी लोकल ट्रेन की तरह लग रही थी, कुछ लोगों को आगे जाना होता है, कुछ लोगों को जल्दी उतरना होता है; मैं इस सफर में तुम तक पहुँचना चाहता था। मैं दिल्ली जाकर तुम से मिलूंगा, तुम्हें पहली

t.me/HindiNovelsAndComics

बार देख पाऊँगा, यही सोचकर बहुत रोमांचित महसूस कर रहा था। तभी अचानक मैं ट्रेन से फिसल गया। मैंने ट्रेन का हैण्डल कस कर पकड़ लिया लेकिन ट्रेन में चढ़ पाने में पूरी तरह नाकामयाब रहा, मैंने अपने दूसरे हाथ से जेब में से मोबाईल निकाला और तुम्हें मैसेज टाइप करने लगा। तभी देखा, सामने से उलटी दिशा में एक ट्रेन अपनी पूरी रफ्तार से मेरी ओर बढ़ रही थी, जिसे देखकर मैं बहुत घबरा गया, ऐसा लगा जैसे मौत मेरे सामने खड़ी है। यह बहुत ही दर्दनाक स्थिति थी। मैं बस तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था कि दिल्ली के इतना पास आकर भी तुमसे बिना मिले मर जाऊँगा, मैंने जल्दबाजी में मैसेज लिखकर भेज दिया। "मैं मरने वाला हूँ 'अलविदा'" और तुम्हारे मैसेज का इंतजार करने लगा, सोचा मरने से पहले तुमसे मिल न सका लेकिन तुम्हारा मैसेज तो पढ़ लूंगा।"

"हूँ," मैंने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा। "हम डेली चैट करते हैं यह सब उसका ही नतीजा है। तुम सपने में भी चैटिंग कर रहे हो, कमाल है यार। अब लगता है चैटिंग कम या बंद करना पड़ेगा। फिर आगे क्या हुआ?"

"फिर, सामने तेजी से ट्रेन आयी। मुझे लग ही रहा था कि अब तो मैं गया। मैंने अपनी आँखे कसकर बंद कर ली, देखा तो ट्रेन गुजर चुकी थी। मैं जिंदा हूँ, फिर दूसरे हाथ में मोबाईल पकड़ा हुआ था, जल्दी से मैसेज टाइप किया कि मैं जिन्दा हूँ, मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ।"

"ऐसा भी कभी होता है क्या? कि एक हाथ से हैण्डल थामकर दूसरे हाथ से मैसेज टाइप करना, यह तो मुमकिन ही नहीं है।" मैंने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा।

"सपनों में कुछ भी हो सकता है, फिर सुनो तो क्या हुआ।"आदित्य नेकहा।

"ट्रेन निकल जाने के बाद सामने ब्रिज आ गया और मैं उसकी दीवार से टकराकर गिर गया। तभी मेरी आँख खुल गयी, माही उठने के बहुत देर बाद तक भी मैं दहशत में था। मैंने अपने आप को मरते हुए महसूस किया और उसी जल्दबाजी में मैंने फोन कर दिया।"

"हऽऽम, वैसे मेरी दादी कहती है, अगर अपनी या किसी की मौत का सपना देखो तो उसकी उम्र लम्बी हो जाती है।"

"क्या ऐसा सच में होता है?" आदित्य ने संदेह जताते हुए पूछा।"

"हाँ, दादी तो ऐसा ही कहती है और यह तो सुबह का सपना हैं" मैंने कहा।

"मैं, एग्जाम के बाद पक्का तुमसे मिलने आऊँगा। इस जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है, अभी तुम क्या कर रही हो?" आदित्य ने पूछा।

"कॉलेज के लिये निकलने ही वाली हूँ।"

"आदित्य, टाइम हो गया" नव ने कहा।

"आ रहा हूँ।" आदित्य ने कहा।

"क्या हुआ, किस काम का टाइम हो गया।" मैंने कहा।

"कल रात को हॉस्टल के एक दोस्त को बाइक से स्टेशन छोड़ने गया था, जब लौटकर आया तो बस से छोटा सा एक्सीटेन्ट हो गया।"

"कैसे बाइक चलाते हो, ज्यादा चोट तो नहीं आयी?" मैंने पूछा।

"नहीं, बस थोड़ी सी खरौंच हैं चिंता वाली कोई बात नहीं है, कभी-कभी ऐसा हो जाता है। "

t.me/HindiNovelsAndComics

"फोन मुझे दे।" नव ने आदित्य से कहा।

मैं फोन पर नव की आवाज साफ-साफ सुन पा रही हूँ।

"क्यों?" आदित्य ने कहा।

"तेरी हरकतों के लिए, तेरे झूठ के लिए, ला फोन दे मुझे।" नव ने लगभग चिल्लाते हुए कहा।

"माही, मैं नव बोल रहा हूँ।"

"हाँ नव, बोलो।"

"माही, आदित्य को कोई मामूली खरौंचे नहीं आयी है। सिर में कई टांके आये है। हम रात 3 बजे हॉस्पीटल से हॉस्टल आये हैं। रात के चार बजे तुमसे मिलने की जिद करने लगा। बड़ी मुश्किल से सोया है। और तुमसे झूठ कह रहा है कि सिर्फ मामूली खरौंचे हैं। सीधा हाथ बुरी तरह जख्मी हो चुका है।"

"ये सब कैसे?" मैंने रूंआसे होकर कहा लेकिन अगले ही पल अपने आप को संभाल लिया।

"ये तीनों दोस्त बाईक से स्टेशन गये थे। लौटकर आते वक्त जो दोस्त बाईक चला रहा था वो नशे मे था लेकिन कसम से माही आदित्य ने एक बूँद भी ड्रिंक नहीं की थी। बस आदित्य की यही गलती है कि वो उस ड्रिंक किए हुए दोस्त के साथ बाइक पर पीछे बैठा था।" नव ने कहा।

"जरा आदित्य को फोन देना" मैंने कहा।

"आदित्य, ले बात कर।" नव ने आदित्य से कहा।

"आदित्य इतनी चोटी आयी हैं और कह रहे हो मामूली खरौंचे हैं" मैंने कहा।

"मैं, अपनी यह हालत बताकर तुम्हें तकलीफ नहीं देना चाहता था लेकिन तुमसे बात किए बिना नहीं रह सका," आदित्य ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"अब अपना ख्याल रखो एग्जाम टाइम है।"

"हाँ, मैं अपना पूरा ख्याल रखूंगा और जल्दी ठीक हें जाऊँगा।"

"और वो सपना?" मैंने पूछा।

"वो सपना शायद इसलिये आया क्योंकि मैं तुम्हारे बारे में बहुत सोचता हूँ। कहते भी हैं जिसके बारे में हम ज्यादा सोचते हैं वहीं हमें सपने में दिखता हैं। इस एक्सीडेन्ट के बाद कल रात में यही सोचकर सोया था कि मैं तुमसे बिना मिले मरना नहीं चाहता।"

t.me/HindiNovelsAndComics

29 फरवरी

शनिवार **28** फरवरी**, 2004**

"कैसी हो?" आदित्य ने पूछा।

"अच्छी हूँ।"

"अब तुम्हारे सिर की चोट कैसी है?"

"मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ।"

आदित्य के जख्म तो वक्त के साथ-साथ भर गये, लेकिन कहीं-ना-कहीं हम दोनों के जहन में एक ही बात थी, क्या हम कभी मिल भी पायेंगे या नहीं?

"क्या कर रही थी?" आदित्य ने पूछा।

"तुमने जो कॉमिक्स के नाम बताए थे वही पढ़ रही थी, 'ध्रुव और शहर मुसीबत में'।"

"माही, ये कॉमिक्स तो मैं बचपन में पढ़ा करता था," आदित्य ने अपनी बात को लम्बा खींचते हुए कहा।

"बड़े होकर पढ़ना गुनाह है क्या?" मैंने रूम से बाहर झांकते हुए कहा, क्योंकि मुझे डर लगा रहता है कि रूम के बाहर कहीं दादू, दादी, मेरी बातें सुन ना ले, वरना बैठे बिठाए आफत खड़ी हो जाएगी।

"गुनाह तो नहीं कह सकते। लीव दिस टॉपिक, मैं तुम्हें कुछ बताने वाला हूँ," आदित्य ने बड़ी बेसब्री से कहा।

"हाँ, तो बताओ," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"माही, आज मैं अपने फ्रेण्ड के साथ उसका पासपोर्ट बनवाने गया था, तो बीच में रेलवे स्टेशन आता है। वहाँ पर मैंने एक लड़की को देखा। वो बहुत अच्छी लग रही थी। वो कुछ सोच रही थी। मैंने रूम पर आकर उसका स्कैच बनाया। उसका स्कैच बहुत ही उम्दा बना है। अभी तक उसकी सूरत आँखों से हटती नहीं है।"

"तो जाकर प्रपोज कर देते," मैंने रूखे स्वर में कहा।

"अब इसमें प्रप्रोज वाली बात कहाँ से आ गयी? तुम लड़कियाँ भी ना किसी छोटी सी बात को भी बस बढ़ा-चढ़ा देती हो," आदित्य ने कहा।

"अच्छा," मैंने कहा।

"हाँ मैंडम, बिल्कुल" आदित्य ने बड़े गर्व से कहा।

"आदित्य एक बात बताओ?" मैंने पूछा।

"हाँ पूछो, मैं पूरी ईमानदारी से जवाब दूंगा।"

"क्या तुम्हें, मुझसे मिलने से पहले किसी से प्यार हुआ है?"

"क्या माही, तुम भी ना कैसे-कैसे सवाल पूछती हो?"

"अब शरमाओ मत, बता भी दो।"

"मैं बता तो दूँ लेकिन पता नहीं तुम क्या समझोगी मेरे बारे में।"

"कुछ भी नहीं समझूगी, अब बताओ," मैंने कहा।

"माही, जब मैं 5वीं क्लास में था तो मुझे मेरी हिंदी वाली मैम बहुत अच्छी लगती थी। एक अच्छी दोस्त की तरह मुझसे विहेव करती थी। मैंने तो अपने दोस्तों से कह दिया था

t.me/HindiNovelsAndComics

कि मैं बड़ा होकर इनसे ही शादी करूंगा।"

"मैंने एक दिन मैम को जाकर कह दिया कि मैम मैं आपसे शादी करूंगा, आप मुझे अच्छी लगती हो।"

"फिर," मैंने चौंकते हुए पूछा।

मुझे विश्वास नहीं हुआ कि कोई छोटा बच्चा मैम को ऐसे भी कह सकता है, लेकिन बच्चे तो बच्चे हैं, कुछ भी कह सकते हैं।

"फिर क्या कुछ नहीं, मैम मुझे देखकर हँसने लगी। उन्होंने कुछ नहीं कहा। उनकी हँसी का राज, मेरे सिर पर एक महीने बाद जाकर ब्लास्ट हुआ। एक महीने बाद ही मैम ने अपनी शादी का कार्ड पूरी क्लास को दिया। मुझे बहुत बुरा लगा, उस वक्त मैं अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहा था। मैम ने मुझे पास बुलाया, "बेटा, तुम्हें मुझसे भी अच्छी लड़की मिलेगी, उदास क्यों होते हो," मैम ने मेरे गाल खींचते हुए कहा।"

"मैम ने मुझे चॉकलेट और पूरी क्लास को पार्टी दी। मैम एक महीने बाद ही स्कूल छोड़कर चली गयी। मैंने मैम को बहुत मिस किया। कुछ महीने का समय लगा मुझे अपने सदमें से बाहर आने में," आदित्य ने सारी बातें बड़े ही सीरियस ढंग से कह डाली।

"ओह! ये तो बहुत बुरा हुआ।"

"माही," इस शब्द के आगे आदित्य ने कुछ नहीं कहा, बस दानवों के जैसे हँसने लगा।

"क्या हुआ?" मेरी समझ में नहीं आया कि एकदम से आदित्य को हुआ क्या, "हँस क्यों रहे हो?" मैंने पूछा।

"हँसू नहीं तो बोलो क्या करूँ? स्कूल की मनगढंत कहानी पर तुमने विश्वास कर लिया। अच्छा बकरा बनाया मैंने तुम्हारा और तुम स्टूपिड बन भी गयी, तुम ना बहुत बड़ी वाली पागल हो।"

"नहीं, नहीं मुझे पता था तुम झूठ बोल रहे हो," मैंने हकलाते हुए कहा। मुझे भी समझना चाहिए था कि आदित्य मजाक कर रहा है। मैं भी ना आदित्य की बातों पर कुछ ज्यादा ही विश्वास करने लगी हूँ। आदित्य जो भी कहता है दिमाग बंद कर सारी बात मान लेती हूँ इसलिए आज मेरा बकरा बन गया।

"सच, तुम्हें पता था" आदित्य फिर हँसने लगा। "अब बकरा बन गया तुम्हारा। अब तुम सो जाओ और अपना ख्याल रखना बहुत देर हो गयी।" आदित्य ने कहा।

"नहीं" मैंने घड़ी की तफर देखते हुए कहा।

घड़ी में अभी 12 बजने में 2 मिनट की देर थी और मैं 12 बजने का बड़ी बेसब्री से इंतजार करने लगी। 12 बजे के बाद 29 फरवरी है। 29 फरवरी को आदित्य का बर्थडे है और मैं नहीं चाहती कि आदित्य को बर्थडे मुझसे पहले कोई और विश करें। आखिर आदित्य का बर्थडे 4 साल में एक बार जो आता है।

"हाँ बोलो क्या सोचने लगी," आदित्य ने कहा।

"कुछ नहीं, सोच रही हूँ थोड़ी देर तुमसे बात कर लूं।"

"हाँ बोलो, वैसे भी कल सन्डे है, तुम कहो तो मैं पूरी रात बात कर सकता हूँ...।"

"नहीं, पूरी रात बात करने की जरूरत नहीं, बस थोड़ी देर बात करनी है।"

मैंने आदित्य की बात बीच में काटते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

जैसे ही घड़ी में 12 बजे, मैं जोर से चिल्लाई ”यिप्पी।”

“क्या हुआ तुम्हें?” आदित्य ने कहा।

“हैपी बर्थडे आदित्य,” मैंने चहकते हुए कहा।

“ओह! तो 12 बजने का इंतजार था।”

“हाँ,” मैंने कहा।

“शुक्रिया माही, लेकिन तुम्हें कैसे पता चला कि 29 फरवरी को मेरा बर्थडे है?”

“तुम्हारी आइडी से पता चला, वैसे आदित्य सबसे पहले मैंने ही विश किया है ना तुम्हें,” मैंने कहा।

“हाँ, तुमने ही किया है,” आदित्य, ने कहा।

“ये कौन सा बर्थडे है तुम्हारा?”

“छठा बर्थडे है मेरा, अब 2008 में बर्थडे सेलीब्रेट करूंगा।”

“अभी तो तुम बहुत छोटे हो,” मैंने खिलखिलाकर हँसते हुए कहा।

“हाँ, मैं धीरे-धीरे बड़ा हो रहा हूँ और कोई ऑप्शन भी तो नहीं है।”

“हम्म।”

“पर पता नहीं पूरा बड़ा कब होऊँगा, ना बच्चों में जगह मिलती है, ना बड़ों में।”

“अभी तुम 6 साल के हुए हो। अच्छा मैं एक कहानी सुनाती हूँ, तुम ध्यान से सुनना” मैंने कहा।

“सुनाओ।”

“ये कहानी एक नामी हकीम आदित्य की है। जिसे ध्रुव, नागराज और बांकेलाल से प्यार हो गया। इस वजह से आज तक उसकी कॉलेज में कोई गर्लफ्रेण्ड नहीं हुई। ‘मेरा बर्थडे 4 साल में एक बार आता है‘ बस यह कहकर वो हर बात दोस्तों को पार्टी देने से बच जाता है। एक कपल को देखकर कहता है कि सब बेकार की बातें हैं। मगर स्टेशन पर दिखाई देने वाली एक लड़की का स्कैच बना लेता है,” मैंने कहा।

“इस बार तो बड़ी खौफनाक परिस्थितियाँ बनती नजर आ रही हैं। कोई बहाना भी नहीं चलने वाला, तुम आ जाओ पक्का पार्टी करेंगे। वैसे तुम्हारी बातों ने पुराने दिनों की याद दिला दी, जब मैं पैसे इक्कटठे करके कॉमिक्स लेकर आया करता था। माही तुम्हें पता है कि पैसे इक्कट्ठे करके में कौन सी पहली कौमिक्स लेकर आया था?”

”कौन सी?”

“‘शहर मुसीबत में‘ और फिर दूसरी थी ‘आर.डी.एक्स.‘ अभी भी रखी है, मेरे पास।”

“तब शहर मुसीबत में था और अब तुम हो,” मैंने हँसते हुए कहा।

“थैंक्यू माही, तुमने मुझे विश करके सरप्राइज ही दे दिया,” आदित्य ने कहा।

“मिलकर तुम्हें विश करना चाहती हूँ और तुम्हारे फेस पर केक लगाना चाहती हूँ,” मैंने कहा।

“मोहतरमा, अभी तो ये बन्दा आपकी ख्वाहिश पूरी नहीं कर पायेगा, जब मिलेंगे तब सारा हिसाब कर लेना,” आदित्य ने कहा।

“कहने की जरूरत नहीं है वो तो मैं क्लियर कर ही लूंगी। चलो इंजाय करो आज का दिन।”

t.me/HindiNovelsAndComics

"वैसे माही अब तो मिलने का कोई इंतजाम करना पडेगा, तुम तो जानती ही हो। बिना मिले मुझे कैसे-कैसे सपने आते हैं?

मैं आदित्य की बात पर ठहाका लगाकर हँसने लगी।

हँसी के जोरदार ठहाकों के बीच, ये रंगीन शाम बीत गयी कई खुशियाँ देकर।

t.me/HindiNovelsAndComics

आदित्य की एक सबजेक्ट में बैक

शुक्रवार 5 मार्च, 2004

"माही,"

"हाँ बोलो।"

"माही।"

"अब आगे भी तो कुछ कहो, जब से फोन किया है, तब से सिर्फ माही माही कह रहे हो, आदित्य आज तुम कुछ बदले-बदले से लग रहे हो।"

"माही कुछ नहीं बस यूँ ही पूछ रहा था कैसी हो, क्या कर रही हो?"

"मैं ठीक हूँ, कुछ नहीं बस अपने रूम में ही पेंटिंग कर रही थी"

"क्या बना रही हो?"

"एक बंजारन औरत का एम्ब्रोज बना रही हूँ," मैंने कहा।

"माही, आज मैं तुम्हें बहुत मिस कर रहा हूँ।"

"हम्म बोलो, तुम कुछ अपसेट लग रहे हो।"

"अब तो तुम मेरी फीलिंग्स भी समझने लगी हो" आदित्य ने कहा।

"अब बातें मत बनाओ, क्या बात है?" मैंने गंभीरता से पूछा।

"माही, मेरा सेकेण्ड ईयर का रिजल्ट आ गया है।"

"कैसा रहा?"

"मेरी एक सब्जेक्ट में बैक लग गयी है।"

"क्या! तुम सच कह रहे हो, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है," मैंने चौंकते हुए कहा।

"माइक्रो में सप्लीमेंट्री आयी है।" आदित्य आज बहुत उदास लग रहा है।

"एग्जाम अच्छा नहीं हुआ था?"

मैं बार-बार गेट पर ध्यान दे रही थी कि कहीं दादू ना आ जायें। पिछली बार जब दादू आ गये थे मैंने फटाफट फोन डिसकनेक्ट कर दिया था। मैं बार बार उस परिस्थिती का सामना नहीं कर सकती।

"हाँ, एग्जाम थोड़ा ठीक नहीं गया था, लेकिल इतना बुरा भी नहीं गया कि फेल हो जाऊँ। माही इस वक्त मैं बहुत बुरा महसूस कर रहा हूँ, जब घर पर बताया तो पापा ने थोड़ा डांटा। मैं इस वक्त बहुत बुरी स्थिति से गुजर रहा हूँ।"

"आदित्य, डॉ॰ होकर थोड़ा पेसेन्स रखो। अब जब बैक का एग्जाम हो तब बहुत अच्छे से तैयारी करना," मैंने आदित्य को सांत्वना देते हुए कहा।

"मेडीकल कॉलेज में अन्य कॉलेज की तरह बैक का सिस्टम नहीं होता कि थर्ड ईयर में आ गये और सेकेण्ड ईयर के एग्जाम दे रहे हैं।"

"तो फिर?" मैंने पूछा।

"बैक मतलब अपनी बैच से 6 महीने पीछे पहुँच जाऊँगा।"

"ओह नो!" मैंने मुँह पर हाथ रखते हुए कहा।

"अब मेरी क्लास मेरे जूनियर्स के साथ लगा करेगी और मुझे डबल क्लास लेनी पड़ेगी। डबल सब्जेक्ट पढ़ना होगा, दिन रात एक करके पढ़ना होगा, तब जाकर मैं अपने बैच के

t.me/HindiNovelsAndComics

साथ आ पाऊँगा। ये कहना बहुत आसान है लेकिन उतना ही कठिन है। इसलिये मुझे 6 मन्थ बहुत हार्ड वर्क करना पड़ेगा।"

"हाँ, हार्ड वर्क करना," मैंने कहा।

"मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि जब तक मेडीकल कॉलेज नहीं मिला था, तब तक मेडीकल कॉलेज का बहुत क्रेज था। लेकिन अब मैं सोचता हूँ कि मेडिकल कॉलेज में पागलों की तरह दिन-रात पढ़ाई करनी पड़ती हैं। मेडिकल में ऐसे इंसानों की जरूरत है जो पूरी तरह किताबी कीड़ा हो, परफेक्ट हो, पेसंस हो। मेडिकल में आकर अपनी लाईफ तो पूरी तरह भूल ही जाओ। अपनी हॉबीज बगैरह सब कुछ भूल जाओ। ना ही अब मैं कुंकंग कर पाता हूँ, ना ही पोईट्रेट, स्केच बना पाता हूँ।"

आदित्य बहुत ही दुःखी लग रहा था। उसकी आवाज भी थोड़ा कपकपा रही थी। वह काफी परेशान भी है। उसकी परेशानी मैं साफ-साफ फोन पर महसूस कर सकती हूँ। आदित्य बात करते-करते बीच-बीच में चुप हो जाता है।

"आदित्य रिलेक्स, तुम इस तरह हिम्मत नहीं हार सकते," मैंने कहा।

"बैक क्लीयर नहीं हो पायी तो मेरी एम.बी.बी.एस. 6 साल में पूरी होगी और मेरी डिग्री..."

मैंने आदित्य की बात बीच में काटते हुए कहा, "आदित्य ऐसा क्यों सोच रहे हो, संभालो अपने आप को।"

"माही" दादू ने जोर से आवाज लगाई।

मैंने नजर उठाकर देखा तो दादू मेरे रूम के गेट पर ही खड़े हैं और बहुत गुस्से में तेज कदमों से मेरी तरफ ही चले आ रहे हैं।मैं सिर्फ आँखे फाड़-फाड़ के दादू को देखती रही। दादू को गुस्से की हालत में देखकर मेरे हाथ कपकपाने लगे।

"माही, तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही?" आदित्य ने फोन पर कहा।

मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, मेरे हाथ से फोन गिर गया। दादू ने जमीन पर पडा फोन उठा लिया। "हैलो, हैलो" दादू ने फोन पर बहुत गुस्से में कहा, लेकिन आदित्य ने कुछ भी रिप्लायी नहीं दिया।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे? मुझे तुमसे बात करनी है," दादू ने फोन पर चिल्लाते हुए कहा। आदित्य चुप ही रहा। दादू ने फोन देखा आदित्य का नम्बर अभी भी परी के नाम से सेव था।

"माही, मुझे पता है ये परी का नं॰ नहीं है। क्या नाम लिया अभी तुमने आदित्य, हाँ आदित्य ही है ना?" दादू ने मेरी तरफ घूर कर देखा।

"लो मोबाईल और इससे कहो ये मुझसे बात करें," दादू ने गुस्से में कहा। मैं अभी भी डरी हुई थी।

दादू के चीखने की आवाज सुनकर दादी मेरे रूम में आ गई और मेरी ऐसी हालत देखकर मेरे पास आकर बैठ गई। "क्या हुआ? क्यों माही पर इतना गुस्सा कर रहे हो?" दादी ने दादू से पूछा।

"तुम ही पूछो इससे, ये किससे बात कर रही थी?" दादू ने गुस्से में कहा।

"मैं जानती हूँ, ये किससे बात करती है।"

t.me/HindiNovelsAndComics

"कौन है वो?" दादू ने पूछा।

"वो जो भी है बहुत अच्छा है। माही के इतने बुरे दिनों में उसी लड़के ने माही का साथ दिया। दोनों अच्छे दोस्त हैं। वो अपने आँसू, अपनी तकलीफ हमें तो नहीं बता सकती, क्योंकि अपनी तकलीफ बताकर वो हमें दुःखी नहीं देखना चाहती थी। वो लड़का बहुत अच्छा है" दादी ने मेरा हाथ थामते हुए कहा।

मैंने दादी की तरफ डबडबाई आँखों से देखा। दादू का गुस्सा दादी की बातें सुनकर और बढ़ गया,

दादू को दादी से ये उम्मीद नहीं थी कि वो उनसे घर की बातें छिपाती हैं।

फोन अभी भी चालू था आदित्य ने हमारी सारी बातें सुन ली होगी। दादू ने एक बार फिर फोन हाथ में लिया और बात करने की कोशिश की। "हैलो, क्या नाम है तुम्हारा?" दादू को देखकर यही लग रहा है कि आदित्य भी फोन पर बात कर रहा है और दादू सवाल पर सवाल पूछते हुए रूम से बाहर चले गये।

हमें नहीं पता, दादू ने आदित्य को डाँटा है या कुछ भला बुरा कहा है।दादू की आदित्य से बात हो गयी, लेकिन क्या बात हुई, ये नहीं जानते। दादू के चले जाने के बाद मैंने दादी की ओर देखा, "दादी आपको कैसे पता चला? मैंने तो आपसे कभी कुछ नहीं कहा," मैंने दादी से कहा।

"तुझे क्या लगा, तू फोन पर बात करेगी और एक ही छत के नीचे रहते हुए मुझे पता नहीं चलेगा। कई बार मैंने तुम दोनों को बात करते हुए सुना," दादी ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए कहा।

"तो आपने दादू की तरह मुझ पर गुस्सा क्यों नहीं किया?" मैंने पूछा।

"मैंने ये भी देखा कि मेरा सोना उससे बात करके बहुत खुश हो जाती है। जब तू परेशान होती है तो वो तेरा साथ देता है।"

"मतलब आपको सब कुछ पता है," मैं रोते-रोते दादी के गले से लिपट गयी और दादी मेरे बालों को सहलाने लगी।

"क्या नाम है उसका?" दादी ने पूछा।

मैंने दादी से लिपटते हुए ही कहा, "आदित्य।"

"अच्छा, आजकल क्या कर रहा है?"

"मेडीकल कॉलेज में है।"

"ओह! तो डॉ॰ है," दादी ने कहा।

"नहीं, अभी नहीं।उअभी तो पढ़ रहा है।"

"अब मुझे क्या पता, तू ही फोन पर उसे डॉ॰ साहब कहती है, तो मुझे लगा कोई डॉ॰ है," दादी ने कहा।

मैं दादी से लिपटी रही मैंने कुछ भी नहीं कहा। दादी, मेरे और आदित्य के बारे में जानकर नाराज नहीं थी।

"दिखने में भी लड़का बहुत स्मार्ट लगता है," दादी ने हँसते हुए कहा।

मैं अचानक दादी की बात सुनकर, दादी के गले से दूर हट गई।

"दादी! आपको ये कैसे पता चला?" मैंने चौंकते हुए पूछा।

t.me/HindiNovelsAndComics

"रूक तो, मैं बताती हूँ कैसे पता चला?" दादी बैड से उठकर अलमारी की तरफ गयी और अलमारी टटोलने लगी। दादी मेरी अलमारी में रखा बॉक्स उठा कर मेरे पास ले आयी। बॉक्स खोलकर पोइट्रेट दिखाते हुए बोली "यही है ना तेरे डॉक्टर साहब?"

"ओह, तो मतलब आपको सब पता है," मैंने दादी की गोद में सिर रखकर कहा।

"हाँ, सब पता है उस दिन परी का पार्सल नहीं, आदित्य का पार्सल आया था। मैं उस पर जयपुर का एड्रेस देखकर ही समझ गयी थी। इस पार्सल में उसका पोइट्रेड और तेरे लिए चुनरी थी।"

मैंने शरमा कर अपने मुँह को दोनों हाथों से ढक लिया।

"माही उस बॉक्स में एक लेटर भी था। जिसमें इंग्लिश में कुछ लिखा हुआ था, उसमें क्या लिखा था?" दादी ने पूछा।

"दादी वो इंग्लिश नहीं थी, वो तो अलग-अलग लेंग्वेज में..." मैं अपनी बात कहते-कहते रूक गयी।

"हाँ बोल माही, अलग-अलग लेंग्वेज में क्या?" दादी ने पूछा।

तभी दादू कमरे में आये और गुस्से में फोन बैड पर पटक कर बाहर चले गये। मैं फिर दादी की गोद से सर उठाकर बैठ गई। "दादी, दादू बहुत गुस्सा हैं," मैं रूआसे होकर दादी की तरफ देखने लगी।

"तेरे दादू से मैं बात कर लूंगी, तेरे दादू को गुस्सा बहुत जल्दी आता है, लेकिन तू चिंता ना कर, मैं संभाल लूंगी।"

"अब तू आदित्य से बात कर ले, पता नहीं गुस्से में उस बेचारे को क्या-क्या कह दिया होगा। तेरे दादू को गुस्से में कुछ ध्यान नहीं रहता, कुछ भी बोल जाते हैं।" दादी मुझे बात करने के लिए अकेला छोड़कर बाहर चली गयी।

मैंने आदित्य को बहुत कॉल किये, बहुत मैसेज किये, लेकिन आदित्य ने ना ही मेरा कॉल रिसीव किया और ना ही किसी मैसेज का रिप्लायी दिया। देर रात दादी मेरे रूम में खाना लेकर आयी।

"कौन है?" मैंने बिस्तर पर लेटे-लेटे पूछा।

"माही खाना लेकर आयी हूँ, अब कुछ खा ले और रूम में अंधेरा करके क्यों बैठी है?" दादी ने लाईट चालू कर दी।

मैंने अपने आँसुओं को बहुत छुपाने की कोशिश की लेकिन दादी ने देख लिया। दादी ने खाना टेबल पर रख दिया।

"माही क्या हुआ, तू रो क्यों रही है? आदित्य ने कुछ कहा क्या?" दादी ने मेरे आँसू पोछते हुए पूछा।

"नहीं दादी, अगर वो कुछ कहता भी तो मैं चुपचाप सुन लेती, लेकिन उसने मेरा फोन ही रिसीव नहीं किया," मैंने रोते-रोते कहा।

"तू पहले कुछ खा ले, मैं उससे बात करती हूँ।"

"नहीं, मुझे भूख नहीं है" मैंने कहा।

"क्यों भूख नहीं है? ला फोन दे मैं बात करूँ," दादी ने फोन लेकर कई बार नम्बर डायल किया, लेकिन आदित्य ने फोन रिसीव नहीं किया। मैंने मैसेज भी किया कि दादी

t.me/HindiNovelsAndComics

तुमसे बात करना चाहती हैं, प्लीज आदित्य मेरा फोन रिसीव करो। मैं एक बार बात करना चाहती हूँ, प्लीज मुझसे बात करो। ना ही मेरे मैसेज का कोई जवाब आया और ना ही आदित्य ने मेरा फोन रिसीव किया।

शनिवार **20** मार्च**, 2004**

मैंने मोबाईल देखा जिसमें स्क्रीन फ्लैश हुआ।

"माही, मैं जा रहा हूँ तुम्हारी जिन्दगी से हमेशा के लिये दूर, मुझे भूल जाओ।"

आदित्य का मैसेज था जिसे पढ़कर मैं जड़वत अपनी जगह पर खड़ी रही जैसे मुझे कुछ होश ही नहीं है। मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरी उम्मीद इस तरह से टूटकर बिखर जाएगी। जो अभी-अभी मैंने पढ़ा वो सच था या भ्रम। मैं बार-बार मोबाईल में आदित्य का मैसेज पढ़ने लगी, शायद अपने आप को यकीन दिलाने के लिए कि आदित्य चला गया, हमेशा के लिए।

"एक बार मुझे बता देते, मेरी गलती क्या है? मुझे यह तक बताना जरूरी नहीं समझा, क्या मैं इसके भी लायक नहीं थी?" मेरे अंदर उठती हुई टीस से बार-बार यही चीख मेरे मुँह से निकलती रही "आदित्य मुझे छोड़कर मत जाओ। मुझे एक मौका तो दो साथ निभाने का।"

"मुझे छोड़कर मत जाओ," मैं फिर से चीखी। इस बात की परवाह किए बिना कि मेरे अलावा दादी भी इस रूम में हैं। मैंने आँसू पोछे और कम्प्यूटर पर आदित्य की फाइल देखने लगी। एक आखिरी उम्मीद अभी भी बाकी थी, शायद आदित्य मुझसे बात करें। इसे आदित्य का आखिरी मैसेज कह सकते हैं, इसके बाद आदित्य ने कोई मैसेज नहीं किया।

t.me/HindiNovelsAndComics

आखिरी फाइल

फाइल

इस वक्त जो मेरी मन स्थिति है उसके बारे में खुद नहीं समझ पा रहा हूँ, मैं बहुत विचित्र परिस्थितियों से गुजर रहा हूँ। मेडीकल कॉलेज में आने के बाद फर्स्ट इयर हमने बहुत मस्ती की। जैसे-जैसे मेडीकल में साल बीतते गये हमारी मस्तियों का ग्राफ कम हो गया, अब हम सिर्फ पढ़ते हैं। लेकिन अब मैं पढ़ भी नहीं रहा हूँ। मेरा कन्संट्रेशन मेरी इस बैक ने बिगाड़ दिया है। यही बैक मेरी एम.बी.बी.एस. की डिग्री खराब कर सकती है। मैं बैक के बाद मेंटली बहुत डिप्रेस रहने लगा हूँ और कुछ भी सोचने समझने की स्थिति में नहीं हूँ।

माही जब मैंने तुमसे बात करना शुरू किया था। मुझे तुमसे बात करना बहुत अच्छा लगा। उसके बाद बात करने का सिर्फ एक ही मतलब था कि हम एक दूसरे की भावनाओं को बहुत अच्छे से समझते हैं। शुरूआत में हमारी बातें कुछ ठीक नहीं थी। मैंने गलती से तुमको भला-बुरा कह दिया। फिर वक्त के साथ हमारी गलतफहमी दूर हो गयी। हम अच्छे दोस्त बने, जब भी तुमसे बात होती मैंने महसूस किया कि तुम लाईफ को लेकर बहुत सीरियस हो। मैं तुमसे डायरेक्ट नहीं पूछ पाता था लेकिन वक्त के साथ-साथ तुम अपनी लाईफ से जुड़ी हर बात मुझसे कहने लगी; तब मुझे अहसास हुआ आखिर तुम लाईफ में इतनी कम उम्र में, इतनी मैच्योर कैसे हुई?

दुनिया को समझने का तुम्हारा अपना तरीका, किसी अनुभवी व्यक्ति से कम नहीं था। फिर जाना कि बचपन से तुम किस मानसिकता से गुजरी हो। तुमने अपनी जिंदगी को बहुत करीब से देखा है, माँ-पापा के प्यार के बिना तुमने अपने आप को मजबूती से खड़ा किया, बहुत कुछ खोया है तुमने। मैं समझता हूँ कि मेरे जाने के बाद भी तुम अपने आप को संभाल लोगी। तुम्हारे साथ बिताये ये साल मेरी जिंदगी के सबसे अच्छे दिन हैं। हम कभी मिले नहीं पर मुझे ऐसा कभी नहीं लगा कि मैं तुमसे मिला नहीं हूँ। तुम मेरे लिए किसी साहित्यकार की कल्पना के रूप में थी। मैं हमेशा तुम्हें अपने कल्पनाओं के संसार में देखता रहता; सोचता कि तुम ऐसी दिखती हो या वैसी। मेरे दिल और दिमाग में सिर्फ तुम हो और हमेशा रहोगी। मैं बेसब्री से तुम्हारे कॉल का, मैसेज का इंतजार करता था। तुम्हें अपने हाथ का बना खाना खिलाना चाहता था। मैं तुम्हें अपने सामने बिठाकर बाँसुरी सुनाना चाहता था। पर मेरी ये सारी तम्मना मेरे दिल में रह गयी। मैं हमारे रिलेशनशिप के लिए बहुत सीरियस था। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। मेरा दिल 8 एम एम का नहीं है.... तुम्हें भुला पाना, दिल से निकाल देना मेरे लिये मुमकिन नहीं हैं। भारी दिल को हल्का करने का एक आसान तरीका है माही, प्यार को, अपनी भावनाओ को, अपने दर्द को दिल में ही दफन कर दूं...

ख्वाबों के महल खड़े कर लिए थे लेकिन सभी सपने कहाँ सच होते हैं। तुमसे साफ-साफ कहने में डर लगता था, इसलिये मैंने ये सभी लेंग्वेज सीखी और उन लेंग्वेज में 'आई लव यू' बोलता था। हमने थोडा समय साथ में गुजारा, चाहे थेड़ा कम ही समय था, लेकिन तुम हमेशा मेरी यादों में रहोगी।

t.me/HindiNovelsAndComics

माही, मैं चाहता हूँ कि जब तुम्हारी शादी हो, तब तुम वहीं चुनरी ओढ़ना जो मैंने तुम्हें दी थी। जानता हूँ कि मैं ये कहने का हक खो चुका हूँ। मैं तुम्हें चाहता था लेकिन मैं कभी भी तुम्हारे लायक नहीं था और वैसे भी हम एक दूसरे से बिल्कुल अपोजिट हैं। तुम यही सोच लेना कि तुम्हारा और मेरा कोई मेल ही नहीं, तुम एडवोकेट और मैं डॉ॰। तुम समझ सकती हो कि डॉ. और वकील ये दो ऐसे अलग-अलग प्रोफेशन हैं जिनमें जमीन आसमान का अंतर है। चाहे वो व्हाईट या ब्लैक एप्रिन हो या हमारे प्रोफेशन में अपने-अपने क्लाइंर्ट को ट्रीट करने का तरीका। अब तुम चाहे कुछ भी समझो। बस मुझे भूल जाओ।

माही तुम मुझे भूल जाओ, मैं अब कोई फाइल नहीं लिखूँगा, मैं तुमसे, तुम्हारी यादों से दूर जा रहा हूँ।

तुम्हारा,

“आदित्य, डॉ॰ साहब।”

मैंने आदित्य की आखिरी फाइल पढ़ी।

आदित्य की बातों ने मेरे अंदर भावनाओं का सैलाब ही ला दिया। यह एक ऐसी बात थी, जिससे मैं जिंदा तो थी, लेकिन जान चली गयी थी। मैं प्राणहीन हो गयी; जब आदित्य की आखिरी फाइल पढ़ी। अब सिर्फ जिंदा लाश बनकर जीना था। आँखों में अथाह पीड़ा और अनगिनत आँसू लिए। मैंने टेबल पर रखी माँ की तस्वीर को देखा।

उसके बाद मैंने अपने कमरें से निकलना भी बंद कर दिया। कभी-कभी दादी की जिद पर बाहर गार्डन में चली जाया करती थी। दादी मुझे अपने पास बिठाकर घण्टों बातें किया करती, लेकिन हँसी तो जैसे मेरा साथ ही छोड़ चुकी थी, मैं कुछ नहीं बोलती। कुछ महीनों तक मैंने बोलना तक बंद कर दिया क्योंकि जीने की कोई इच्छा नहीं थी। अब तो सिर्फ एक इंतजार था, आदित्य के वापस आने का।

गुरूवार **4** सितम्बर**, 2008**

“इस बात को पूरे चार साल हो चुके हैं,” मैंने कहा।

“क्या तुम दोनों की फिर कभी बात नहीं हुयी?” परी ने मेरी डायरी वापस करते हुए पूछा।

“नहीं, हमारी इन चार सालों में फिर कभी बात नहीं हुयी। ये प्यार, दिल को प्रेक्टीकल कहाँ होने देता है। आज भी आदित्य से बात करने की हसरत दिल में है, तुमसे ये सारी बातें कहकर मन हल्का हो गया।”

“तुमने इस डायरी में आगे कुछ नहीं लिखा?” परी ने पूछा।

“जब आदित्य ही मेरी जिंदगी में नहीं था और आदित्य ही मेरे लिखने की वजह था। उसके चले जाने के बाद मैं क्या लिखती? अपना अकेलापन, अपनी बेबसी?” मेरी आँखों के किनारे से पानी की कुछ बूँदे गालों तक लुढ़क आयी। हम दोनों कुछ मिनट तक एकदम शांत थे। मैं इस वक्त कुछ ज्यादा ही भावुक हो गयी।

“तुमने कभी उसे फोन नहीं किया,” कुछ मिनटों की खामोशी के बाद परी ने मेरा हाथ अपने हाथ में थामते हुए पूछा।

“मैंने उसे कई बार फोन किया, लेकिन आदित्य ने फोन रिसीव नहीं किया, फिर कुछ

t.me/HindiNovelsAndComics

दिनों बाद उसका मोबाईल नं॰ चेन्ज हो गया। ऑरकुट का पासवर्ड भी चेंज हो गया। अब आदित्य की सुनहरी यादें सिर्फ यह डायरी है। उसके दिए हुए तोहफे चुनरी, पोइट्रेट मैंने संभाल कर रखे हैं।"

"तुम उससे मिलने जयपुर क्यों नहीं गयी? तुम्हें उससे मिलने जाना चाहिए। फिर पूछती आखिर उसके ऐसा करने के पीछे वजह क्या है?" परी ने मेरी आँखों में देखते हुए पूछा।

"परी, मुझे पूरा यकीन है, आदित्य जरूर वापस आयेगा, मुझसे बात करेगा। जैसा तुम कह रही हो ऐसा करके मैं आदित्य को तकलीफ नहीं देना चाहती, आदित्य बहुत समझदार है। उसने जो भी किया होगा सोच समझकर किया होगा। मुझे उस पर पूरा विश्वास है," मैंने कहा।

"ठीक है माही, लेकिन अपने अहम रिश्तों के लिए कुछ मजबूत कदम भी उठाने पड़ते हैं; नहीं तो यही रिश्ते वक्त के साथ अपनी अहमियत खो देते हैं और जब रिश्ते अहमियत खोते हैं तो उस रिश्ते का कोई वजूद नहीं रह जाता, इसलिये रिश्तों को संजोकर रखना पड़ता है।"

"माही, दादू और तुममें दो पीढ़ियों का लम्बा फासला है, दादू ने आदित्य से कुछ कह भी दिया तो जायज है। दो पीढ़ियों का फासला, दो पीढ़ियों की सोच एक नहीं हो सकती। तुम दोनों को मिलाकर दादू को समझाना चाहिए। दादू को पूरा यकीन दिलाना चाहिए कि तुम गलत नहीं हो। यह सिर्फ अपने-अपने सोचने का नज़रिया है। आदित्य ने जो किया गलत था।" परी ने कठोर आवाज में कहा।

"नहीं परी, आदित्य उस वक्त बहुत बुरी परिस्थितियों से गुजर रहा था। ऐसे में उसे जो ठीक लगा, वही किया," मैंने कहा।

"माही, किसकी लाइफ में परेशानी नहीं आती है, मुझे इतना बताओ" परी ने बिस्तर से खड़े होते हुए कहा।

मैं चुप चाप नजरें झुकाये बैठी रही।

"माही ठण्डे दिमाग से सोचो, परिस्थितियों से भागना तो कोई हल नहीं है। यह तो कायरता है। परिस्थितियों का सामना करो, जिंदगी में जो भी सामने आये, डटकर सामना करो। यह गलती एक बार मैं कर चुकी हूँ, इसलिये तुझसे कह रही हूँ। इस तरह भागने से कुछ नहीं होगा। यह बात तो साफ जाहिर है, तुम दोनों एक दूसरे से प्यार करते हो तो प्रोब्लम क्या है?"

"मैं क्या करूँ परी? मुझे कुछ समझ नहीं आता। एक तरफ लगता है कहीं दादू का दिल ना दुखा दूँ और एक तरफ लगता है, आदित्य के वापस आने का इंतजार करुँ।" मैंने अपना सिर झुका लिया, मेरी हालत ऐसी हो गयी थी कि अगर परी ने कुछ और कहा तो मैं रो दूंगी।

"कुछ मत कर, तू अब मेरे साथ जयपुर चल, बाकी सब मैं देख लूंगी।"

"तू पागल हो गयी है एक अजनबी शहर में हम कैसे जाएंगे?"

"हम एक अजनबी शहर में अपने खास को ढूँढेंगे।" परी ने कहा।

"ऐसा करना आदित्य के साथ जबरदस्ती होगी। ऐसी स्थिति में जब वो खुद मुझसे बात

t.me/HindiNovelsAndComics

भी नहीं करना चाहता।

"तो क्या हम इसी तरह बैठे रहेंगे, चार साल गुजर गये हैं। ऐसे तो चालीस साल और गुजर जाएंगे इंतजार करते-करते," परी ने भारी आवाज में कहा।

"उसका कोई फोटो है तो मुझे दे, मैं उसे जयपुर तो क्या आसमान पाताल से भी ढूँढ़ निकालूंगी," परी ने मुझे दिलासा देते हुए कहा।

"हाँ, मैं तुझे दिखाती हूँ" मैं अलमारी से एक फोटो निकालकर लायी और परी के हाथ पर रख दिया।

"यह किसकी बर्थडे फोटो है?" परी ने फोटो हाथ में लेते हुए पूछा।

"आदित्य के बर्थडे का फोटो है।"

मैं तकिये का सहारा लेकर परी के करीब बैठ गयी।

"ये ब्लू पजामें में जो लड़का है वो आदित्य है और जो नीचे बैठा है, चश्मा लगाये ये सोनू है। ब्राउन बालों वाला ये प्रताप है।" और एक तरफ उंगली रखते हुए कहा "ये नवदीप है।"

"और बाकी सब...?"

"वो मुझे नहीं पता," मैंने अपने कंधे उचकाते हुए कहा और आदित्य को गौर से देखने लगी।

"तुम आदित्य को बहुत मिस करती हो ना?" परी ने मेरी तरफ देखते हुए पूछा।

"हाँ" मैं सिर्फ इतना ही कह पाई, इसके आगे और कुछ कह पाना मुमकिन नहीं था।

"तुम मेरी बात सुनती क्यों नहीं हो? चलो, जयपुर चलते हैं," परी ने फिर वही राग अलापना शुरू कर दिया जिसे कुछ देर पहले मैंने बंद कर दिया था।

"परी तुम नहीं समझोगी कि मैं तुम्हारी बात पर ध्यान क्यों नहीं दे रही हूँ। मैं दादू की मर्जी के खिलाफ कहीं नहीं जाना चाहती और आदित्य भी नहीं चाहेगा।"

"जब आदित्य ऐसा नहीं चाहता तो उसे भूल जाओ, भूलने में ही तुम्हारी भलाई है। माही जब तुम दोनों मिल ही नहीं सकते तो जैसा आदित्य ने किया तुम भी वैसा ही करो। तुम भी उसे भुला दो।"

"मैं उसे नहीं भुला सकती। इस अकेलेपन ने मुझे अपने बारे में और भी ज्यादा सोचने समझने का वक्त दिया है। क्या वजह थी आदित्य के मुझसे दूर जाने की? यह बात जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक मुझे अंदर से तोड़ती रहेगी। इसके लिये मैं हमेशा अपने आप को दोष देती रहूंगी। मुझे तो ऐसा लगता है एक सपना देख रही हूँ, आदित्य अभी भी मेरे साथ है," मैंने सुबकते हुए कहा।

"माही सपने और हकीकत में बहुत फर्क होता है और हकीकत भी यही है कि वो इंसान अब तुम्हारी जिंदगी में नहीं है। कब तक अपने आपको इस तरह तकलीफ देती रहोगी। ना ही गुजरे वक्त में जीने की जरुरत है और ना ही भविष्य में... जीना ही है तो आज खुलकर खुशी के साथ जियो, बिना आज और कल की परवाह किये... तुम सुन रही हो ना मैं क्या कह रही हूँ?" परी ने कहा।

मैं चुप थी कुछ भी नहीं कहा।

"इंसान के सामने कभी भी, कैसे भी हालात हो, कोई भी मुसीबत आये, तो उसमें भी

t.me/HindiNovelsAndComics

सिर्फ अच्छा पहलू ही देखना चाहिये। यही जिंदगी का फलसफा है। माही तुम मेरी बातों को इत्मिनान से सोचो। आदित्य के साथ बिताया वक्त तुम्हारी सुनहरी यादें हैं जिन्हें संवार कर रखो, लेकिन अब वो तुम्हारी जिंदगी में नहीं है ये बात भी तुम समझ जाओ, तुम्हारे लिये यही बेहतर है। हालात से समझौता कर लेना ही बेहतर है और इन दकियानूसी हालात के लिये खुद को दोष मत दो। अपने आप को इन हालातों से बाहर निकालो," परी ने कहा।

परी बैड से उतरकर खड़ी हो गयी और बाहर गेट की तरफ देखने लगी।

"क्या हुआ परी, तुम खड़ी क्यों हो गयी? और गेट पर क्या है? क्या देख रही हो?" मैंने उत्सुकता से पूछा और मैं भी पलट कर वहीं देखने लगी, जहाँ परी देख रही थी।

"कोई था अभी वहाँ गेट पर। मैंने किसी की परछाई देखी," परी ने कहा।

"कोई भी तो नहीं है," मैंने गेट की तरफ देखते हुए कहा।

"नहीं माही कोई था, मैंने खुद देखा, चल बाहर चल," परी मेरा हाथ पकड़कर बाहर ले गयी लेकिन बाहर देखा तो कोई नहीं था।

"माही, परी चलो, अब अगर तुम्हारी बातें पूरी हो गयी हैं, तो कुछ खा भी लो," दादी ने किचन से बाहर आते हुए कहा।

"दादी, अभी थोड़ी देर पहले यहाँ पर कोई था क्या? मतलब कोई यहाँ से निकला है क्या?" परी ने दादी से पूछा।

"अभी तुम्हारे दादू जल्दी-जल्दी में कहीं चले गये है।"

"परी तुम्हें यहाँ देखकर मैं बहुत खुश हूँ...। अब लगता है तुम्हारे साथ रहकर मुझे मेरी पुरानी वाली माही मिल जायेगी। चलो तुम लोग डाइनिंग टेबल पर बैठो, मैं अभी खाना लेकर आई। पहले थोड़ा खा लो, फिर पूरी रात पड़ी है बातों के लिए," दादी कहते-कहते किचन में चली गई।

परी ने मेरी तरफ देखते हुए कहा, "इसका मतलब दादू ने हमारी सारी बातें सुन ली, अब क्या होगा?"

"दादू पहले से थोड़ा बहुत जानते हैं लेकिन आज अगर उन्होंने हमारी बातें सुन ली होंगी तो सब कुछ जान जाएंगे और इस वक्त पता नहीं कहाँ गये होंगे? रात के 9 बज रहे हैं।" मैंने परेशान होते हुए कहा।

"तू परेशान मत हो, दादू घूमने गये होंगे। थोड़ी देर में आ जाएंगे।"

"मुझे बहुत फ़ि क्र हो रही है। मेरी जिंदगी में सिर्फ दादा, दादी ही हैं जो मेरी जीने की वजह हैं" मैंने कहा।

"माही, लगता है इन बीते सालों में तेरी टेंशन लेने की आदत बहुत बढ़ गयी है। हर छोटी-छोटी बात पर सेंटी हो जाती है, सुना नहीं दादी ने क्या कहा। चलो मैडम कुछ खा लो, लगता है तुझे भूख नहीं लगती है लेकिन मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।" परी ने झूठी हँसी हँसते हुए कहा।

मैं परी को जानती हूँ, परी कुछ कहेगी नहीं पर शायद उसे मेरी हालत पर तरस आ रहा है। जब मैं उसे अपने बीते सालों के बारे में बता रही थी तो बीच-बीच में परी भावुक हो जाती। मैं मम्मी और आदित्य को बहुत मिस करती हूँ। अब परी भी यही चाहती है कि

t.me/HindiNovelsAndComics

मैं सब भूल जाऊँ।

“माही, अब क्या सोचने लगी?” परी ने मुझे देखते हुए पूछा।

“कुछ नहीं।”

“माही मैं समझ रही हूँ इन बीते सालों में तेरे साथ बहुत कुछ हो चुका है। जिसने तेरी जिंदगी को इस तरह बदल दिया है कि मुझे मेरी बचपन वाली माही कहीं नजर नहीं आती।”

मेरा गला भारी हो गया, आँसुओं की बूँदें मेरे गाल पर लुढ़क आयी।

“माही रोने से क्या होगा? जो है नहीं उसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता, पर अगर तू एक बार आदित्य से मिलना चाहती है, बात करना चाहती है, तो हम जयपुर चलेंगे या दूसरा विकल्प यही है कि तू उसे भूल जा, जो तुझसे होगा नहीं,” परी ने कहा।

“नहीं परी। दादू को पता चला तो गुस्सा होंगे, मैं कभी दादू के खिलाफ नहीं जाउँगी।”

“डिनर किये एक घंटा हो गया, पर दादू अभी तक नहीं आये।” मैंने दीवार पर टंगी घड़ी देखते हुए कहा।

“हाँ और मुझे बता कर भी नहीं गये, कभी बिना बताए कहीं जाते नहीं हैं,” दादी ने कहा। दादी, दादू के बिना बताए चले जाने से परेशान थी।

“दादी रूको, मैं फोन लगाती हूँ,” मैंने सोफे से उठते हुए कहा। मैंने दादू को फोन लगाया पर दादू का फोन बंद आ रहा है।

“क्या हुआ?” दादी ने पास आते हुए पूछा।

“दादी, फोन बंद आ रहा है,” मैंने कहा।

“चलो परी” मैंने कहा।

“कहाँ?” दादी ने कहा। “दादू को ढूढँने।”

“नहीं, तुम दोनों इतनी रात को कहाँ जाओगी? बैठो यहीं, अभी आते ही होंगे।”

हम तीनों सोफे पर बैठे दादू का इंतजार करने लगे। हमने कई बार दादू को फोन लगाया लेकिन दादू का फोन बंद आ रहा था। इंतजार करते-करते रात के 12 बज चुके हैं पर दादू का कहीं कोई पता नहीं।

“दादी, हम कब तक यूं ही बैठे रहेंगे? हमें कुछ करना चाहिए,” मैंने सोफे से उठते हुए बेचैनी से कहा।

“हम क्या करें?” दादी ने कहा और दादी की आँखों में आँसू आ गए।

“माही, तेरे दादू कभी बिना बताए इतनी रात तक बाहर नहीं रहे। बाहर गाड़ी भी नहीं है, पता नहीं इतनी रात को कहाँ गये होंगे? मुझे बहुत घबराहट हो रही है” दादी का बी.पी. बढ़ गया।

दादी को मम्मी की डेथ के बाद हाई बी.पी. की प्रेब्लम हो गई थी।

“दादी सम्भालो अपने आप को,” मैंने दादी को सोफे पर बिठाते हुए कहा।

“परी, जा जल्दी से दादी के कमरे से दवाइयों का पूरा डब्बा लेकर आ।उसमें बी.पी. की टेबेलेट है।”

परी दौड़ते हुए दादी की दवाइयाँ ले आयी ।

“दादी आप तसल्ली से बैठो मैं डॉ॰ अंकल को फोन करती हूँ, उन्हें जरूर पता होगा”

t.me/HindiNovelsAndComics

मैंने कहा ।

मैं फोन करती उससे पहले ही फोन की घंटी बजी, मैंने फटाफट फोन रिसीव कर लिया ।

“हलो!”

“हलो बेटा,” सामने से डॉ॰ अंकल की आवाज थी ।

“अंकल, मैं अभी आपको ही फोन करने वाली थी। अंकल क्या आपको पता है दादू कहाँ है?”

“वो यहीं है,” अंकल ने कहा।

“दादी, दादू डॉ॰ अंकल के पास गये हैं।” मैंने फोन पर हाथ रखते हुए कहा।

यह सुनकर दादी की साँस में साँस आयी।

“अंकल, दादू बिना बताये घर से चले गये, किसी को कुछ भी नहीं बताया और दादी का बी.पी. बढ गया” मैंने कहा।

“दादी को जो मैंने दवाई दी थी वो दे दो,” डॉ॰ अंकल ने कहा।

“हाँ टेबलेट दे दी है।”

“तुम लोग अभी एम्स आ जाओ” डॉ॰ अंकल ने कहा।

“एम्स क्यों?” मैंने पूछा।

“मैं और तेरे दादू यहीं पर हैं।”

“आप दोनों इतनी रात को एम्स में, मुझे लगा आप अपने क्वार्टर में होंगे” मैंने बेचैनी से पूछा।

“तुम लोग अभी आ जाओ, मैंने ड्राइवर गाडी के साथ भेज दिया है। वो थोडी ही देर में घर पर पहुँचता होगा तुम लोग आ जाओ,” तभी डोरबेल बजी।

“परी, जाकर देख कौन है?” डॉ॰ अंकल का ड्राइवर होगा। मैंने परी की तरफ देखते हुए कहा।

“ठीक है अंकल, हम आते हैं,” यह कहकर मैंने फोन रख दिया।

“क्या कहा?” दादी ने सोफे से उठते हुए पूछा।

“कुछ भी नहीं हुआ, आप भी बस वैसे ही घबरा रही थी। दादू और डॉ॰ अंकल साथ में है और डॉ॰ ने अपना ड्राईवर गाड़ी के साथ भेजा है और हमें फौरन हॉस्पीटल बुलाया है।”

“हास्पीटल क्यों, सब ठीक तो है ना?”

“हाँ दादी और डॉ॰ अंकल तो हास्पीटल में ही मिलेंगे, कोर्ट में थोड़े न और उनके दोस्त भी उनके साथ ही तो होंगे अब चलो।

”हम तीनों डॉ॰ अंकल की गाड़ी से एम्स हास्पीटल पहुँचे। डॉ॰ अंकल एम्स के बाहर ही खड़े हमारा ही आने का इंतजार कर रहे थे।

हम गाड़ी से उतरकर डॉ॰ अंकल के पास गये।

“भाई साहब, आपने इतनी रात को हमें यहाँ क्यों बुलाया? और आप अकेले यहाँ खड़े हैं। आपके दोस्त कहाँ है?” दादी ने अंकल से पूछा।

तभी मेरी निगाह पास खड़ी एक टूटी गाड़ी पर गयी। मैं गाड़ी के पास जाकर गाड़ी को ध्यान से देखने लगी, तब पता चला “ये तो हमारी ही गाड़ी है,” मैंने चीखते हुए कहा।

t.me/HindiNovelsAndComics

दादी, डॉ॰ अंकल और परी मेरे पास आये।

“माही क्या हुआ?” परी ने पूछा।

“ये तो हमारी गाड़ी है लेकिन टूटी कैसे? इसके कांच बगैरह सब टूटे हैं” मैंने कहा।

“हाँ, ये हमारी ही गाड़ी है। गाड़ी को देखकर ऐसा लगता है कि बहुत बुरा एक्सीडेंट हुआ है,” दादी ने कहा ।

“अंकल, दादू कहाँ है? दादू ठीक तो है ना?”

“हाँ,” अंकल ने भारी आवाज में कहा।

“दादू जा कहाँ रहे थे?”

“वो जयपुर जा रहा था, उसका मेरे पास 9 बजे फोन आया,” अंकल ने कहा ।

“लेकिन जयपुर क्यों जा रहे थे?” दादी की हालत इस वक्त बदहवास हो रही थी ।

मैं और परी एक दूसरे को देखने लगे, शायद हमारी बातें सुनने के बाद ही दादू गाड़ी लेकर निकले।

”वो नहीं पता, लेकिन वो बहुत उदास लग रहा था। जब मेरी उससे बात हुई तो पता चला कि वो किसी जरूरी काम से जा रहा था।”

“तो फिर ये गाड़ी...” मैंने भारी आवाज में कहा, दिल कर रहा है मैं चीख-चीख कर रोऊँ, दादू मेरे ही कारण जयपुर जा रहे थे।

“दिल्ली से थोड़ी दूर ही निकले थे कि...” डॉ॰ अंकल चलते-चलते अपनी बात कह रहे थे, हम तेज कदमों से दादू के पास जा रहे थे।

“हाँ, बोलो” दादी ने अंकल से कहा।

“उसका एक्सीडेंट हो गया है, उसके सिर में चोटें आयी हैं। भाभी आप फिक्र न करें, मैं उसे ठीक करके जल्दी घर भेजता हूँ।”

“जल्दी हमें उनके पास ले चलिए,” दादी ने कहा।

मैं और दादी भागते हुए दादू के रूम तक पहुँचे। हमने अपने आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा पोंछ लिया। दादू बैड पर लेटे थे। उनका सफेद कुरता, उनके खून से लाल हो रहा था। एक पैर में फैक्चर था और सिर पर पट्टियाँ बंधी थी जो खून से लाल हो रही थी और पास में ही ब्लड की ड्रिप, दादू के हाथ में लगे केनुला में लगी थी।

हम दादू के पास जाकर बैठ गये। मैंने दादू का दूसरा हाथ थाम लिया, जिसमें भी कुछ खरोंचे थी।

“माही मेरा बच्चा,” दादू ने आँखे खोलते ही कहा।

“हाँ मैं यहीं हूँ।”

“माही और मीना मैं तुम दोनों से कुछ कहना चाहता हूँ।”

“हाँ, मैं सुन रही हूँ आप बोलो,” दादी ने कहा।

“तुम राजवीर को माफ कर देना, मैंने तुम दोनों से एक बात अब तक छुपा कर रखी थी। तुम उसे गलत मत समझना। ये मत सोचना शालिनी के अंतिम संस्कार के दिन वो नहीं आया, वो आया था, जिस प्लेन से वो आ रहा था लैंडिंग टाइम प्लेन क्रेश हो गया। जिस दिन तेरी माँ का अंतिम संस्कार करके घर पहुँचा, तो एम्स से फोन आया, राजवीर एडमिट है। मैं उससे मिलने गया, राजवीर ने यही कहा कि वो अपनी माँ और बेटी को

t.me/HindiNovelsAndComics

बहुत प्यार करता है। जब से उसने शालिनी के बारे में सुना तो वह अपने जीने की आस खो चुका था। वह और नफरत साथ लेकर जीना नहीं चाहता था। उसने अपने अंतिम समय में यह भी कहा कि मैं उसकी बेटी को खुश रखूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाया। जिस शमशान में माही तेरी माँ का अंतिम संस्कार किया, वहीं जाकर राजवीर का अंतिम संस्कार किया। घर आकर मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं तुझे और मीना को सब कुछ बता पाता। उस वक्त तुम दोनों की हालत बहुत नाजुक थी इसलिये मैं कुछ कह भी ना सका। लेकिन आज सिर्फ इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मेरी जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं, मैं जयपुर आदित्य को ढूढ़ने...”

मैंने दादी को देखा, दादी लगभग बेहोश हो चुकी थी।

“दादी,” मैंने चीखते हुए कहा।

“डॉ॰ अंकल देखो, क्या हुआ मेरी दादी को?”

“नर्स स्ट्रेचर लेकर आओ।” डॉ॰ अंकल ने नर्स को आवाज लगाई, दादी को स्ट्रेचर पर लिटाकर चेकअप किया। “भाभी का ब्लड प्रेशर बहुत बढ़ गया है, इसलिए बेहोश हो गई हैं।”

“माही, तुम हिम्मत रखो सब ठीक हो जाएगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ,” डॉ॰ अंकल ने मेरी बदहवाश हालत को देखते हुए कहा। आज दादू और दादी की इस हालत की जिम्मेदार मैं हूँ, मैं अपने आप को दोषी महसूस करने लगी। मुझसे जुड़े हुए लोगों के साथ ही यह सब क्यों होता है? मैं चीख-चीख कर रोना चाहती हूँ। मैं अपने आप में घुटने लगी।

“परी” मैंने परी को आवाज लगाते हुए कहा।

“हाँ, मैं यहीं हूँ माही।”

“परी, मेरे दादू-दादी का ख्याल रखना,” मैंने अपने आपको संभालते हुए कहा।

“हाँ।”

“मैं घर जा रही हूँ।”

“लेकिन घर क्यों?”

“मुझे बहुत जरूरी काम है।”

“दादू-दादी से भी जरूरी कोई काम है?” परी ने मुझे पूरी तरह झकझोरते हुए कहा।

“परी मुझे जाने दो, मेरे जाने के बाद ही सबकुछ ठीक होगा, जब तक मैं रहूंगी तब तक सब ऐसे ही चलता रहेगा। मैं किसी के लिए भी लकी नहीं हूँ।”

“माही सँभाल अपने आपको, क्या कह रही है तू।”

मैंने अपने आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा साफ किया और दादू, दादी को देखने उनके पास गयी। मैंने महसूस किया मैं उनको आखिरी बार देख रही हूँ, फिर कभी उन्हें नहीं देख पाऊँगी। मेरा दिमाग पूरी तरह सुन्न हो चुका था।

मैं कुछ भी सोचने समझने की स्थिति में नहीं थी। मैंने परी से सिर्फ इतना कहा “मेरे दादू-दादी का अच्छे से ख्याल रखना, मैं घर जाकर चैन से सोना चाहती हूँ।“

उसके बाद मैं एम्स से घर के लिए पैदल ही चल पड़ी। बचपन से लेकर आज तक जो कुछ भी मेरे साथ हुआ वो सब कुछ दिमाग में चल रहा था। जिंदगी के तकलीफ देने वाले हिस्से चैनल्स की तरह दिमाग के सामने घूम रहे थे। जितना इन चैनल्स को बंद करती,

t.me/HindiNovelsAndComics

उतना ही माइंड उलझता जाता था।

तभी सामने एक फुल स्पीड से आती हुई गाड़ी मेरे एकदम करीब आकर रुकी। मैं टकराते टकराते बची थी इसके बावजूद भी मुझको कुछ भी होश नहीं था। ना मुझे किसी की आवाज़ सुनाई दे रही थी ना ही कुछ दिखाई दे रहा था। मैं एक अंधकार में आगे बढ़ती चली जा रही थी।

"मेरी ही गाड़ी के आगे मरने का शौक है क्या? अजीब पागल है," गाड़ी से बाहर निकल कर एक आदमी जोर से चिल्लाया।

एकाएक गाड़ी बीच रास्ते में रुकने से उस गाड़ी के पीछे ट्रैफिक बढ़ता चला गया।

मैं सड़क क्रोस कर जा चुकी थी। लेकिन पीछे छोड़ गयी थी गाड़ियों के तेज हॉर्न और सड़क पर बढ़ता जाम।

मुझे याद आ रहे थे वो दिन जब मैं अपने माँ पापा के साथ झील के बहते पानी में वोटिंग कर रही थी। उस झील का नाम माही था। मेरे माँ पापा पहली बार इसी जगह पर मिले थे इसलिए ही उन्होंने मेरा नाम माही रखा था। मैं अपने माँ पिता के बीच में इठलाते हुए बैठी थी जैसे मुझे सारे जहान की ख़ुशी मिल गयी हो तब मैं 5 साल की थी। अपने बचपन की यादों में ये लम्हा मेरा सबसे ख़ास पलो में से एक था। और एक वो दर्दनाक पल था जब मेरे पापा मुझे और मेरी माँ को छोड़कर हमेशा के किये चले गए थे।

मेरे ज़हन में परी के साथ बिताया बचपन का किस्सा याद आ गया। जब मैं अपने माँ पापा के अलग हो जाने से दुःखी थी।

मैं और परी स्कूल के बाद एक पार्क में बैठी थी कि अचानक परी ने कहा। "माही, मैं हमेशा तेरे साथ रहूंगी।" परी ने अपना हाथ मेरे हाथ में रख दिया था। मुझे लगा था कि जैसे कोई तो है जो हमेशा मेरे साथ रहेगा लेकिन परी ट्रांसफर के बाद हमेशा के लिए मुझसे दूर हो गयी।

फिर मेरी जिंदगी में आदित्य आया जिसने मेरी जिंदगी में नये ही रंग भर दिए थे। एक उमंग थी मेरे मन में जो मुझे गुदगुदाए रखती थी। याद आया मुझे आदित्य का किया वादा। जिसे मैंने एक सच की तरह जिया था। आदित्य ने कहा था "एक छोटा सा घर होगा जिसमे तुम और मैं होंगे। मैं अपने नाती पोतो को हमारे प्यार के किस्से सुनाऊंगा। उन्हें बांसुरी बजाना सिखाऊंगा। तुम मेरे सामने बैठी रहोगी और मैं सिर्फ तुम्हारे लिए बांसुरी बजाऊंगा।"

मैंने कितना हसीन सपना जी लिया था लेकिन आदित्य जब मुझे छोड़ कर चला गया तो ये सपना मोती की माला की तरह टूट के बिखर गया।

अब मेरी जिंदगी में सिर्फ दादू और दादी थे। जिसे मैं अपनी आँखों के सामने हॉस्पिटल में स्ट्रेचर पर बेसुध पड़ा हुआ देख कर आई थी।

मैंने घर पहुँच कर सबसे पहले दादू के दवाईयो के बोक्स से नींद की गोलियाँ निकाली और पत्र लिखने बैठ गयी।

t.me/HindiNovelsAndComics

आखिरी लम्हें

5 सितम्बर शुक्रवार, 2008

दादी, दादू

मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ। दादी आपने कहा था मैं अपनी जिंदगी के अधूरेपन को अपने जीने की वजह बनाऊँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाई। मैंने आप दोनों को बहुत निराश किया है, मुझे माफ कर देना। मैं हमेशा आप दोनों को खुश देखना चाहती हूँ, लेकिन आप हमेशा मेरी फिक्र में लगे रहते हैं। अपनो के कहीं खो जाने के बाद इंसान के पास जीने की कोई वजह नहीं रह जाती। मेरे पास भी जीने का कोई मकसद नहीं था सिवाय आपके। मैं आपकी ऐसी हालत नहीं देख सकती। दादू, दादी मैं जा रही हूँ आप दोनों से हमेशा के लिए दूर।

आपकी माही

फिर मैंने दूसरा लेटर आदित्य के लिए लिखा।

डॉ॰ साहब,

मेरे लिए लोगों को भुला पाना बहुत मुश्किल होता है, खासकर वो लोग जिनसे मैं बहुत प्यार करती हूँ। तुम, परी, माँ, दादू-दादी इन सबसे दूर रहना या खो देना मेरे लिए असहनीय है। लेकिन मैंने इन सबसे दूरी सहन की है, तुम्हारे बिना अकेलापन महसूस किया है। तुम चले गये, तुम सोच भी नहीं सकते इन बीते सालों में, मैं किन हालातों से गुजरी हूँ। मैं उसी दिन मर चुकी थी जब तुम मुझे छोड़कर गये। जिंदा लाश, सिर्फ इस उम्मीद में थी कि तुम वापस आओगे, लेकिन तुम वापस नहीं आये। तुम ठान के बैठे हो कि जाने का फैसला एक बार कर लिया तो बदलोगे नहीं।

कुछ घन्टों की दूरी हम चाहकर भी पार नहीं कर पाये। कितनी भयानक बेवसी है कि तुम्हें एक बार भी ना देख सकी।

मैं तुम्हें खोना नहीं चाहती, मैंने तुमसे दिल से एक रिश्ता कायम किया था, मैं यही चाहती थी तुमसे कि हम सब भुलाकर क्यों ना एक नयी शुरूआत की जाए, लेकिन मैंने तुम्हें इसके लिए मज़बूर नहीं किया। मैं चाहकर भी तुम्हें भुला नहीं पायी। मैं बहुत कमजोर थी।

तुम्हारे अहसास की शक्ति ही थी जिससे मैंने आज तक अपने आप को सम्भाले रखा। अगर हमें पहले ही पता हो जिंदगी कुछ पल की ही है, तो इसे खुल कर जी सकते हैं बजाय बर्बाद करने के, लेकिन मैंने तुम्हारे साथ जो पल बिताये हैं, मैंने उन पलों को खुलकर जिया है। तुम कायर थे जो हमारे रिश्ते को स्वीकार नहीं कर पाये और चले गये, लेकिन मैं तुमसे भी बड़ी कायर हूँ जो अपनी जिंदगी खत्म कर रही हूँ। हमेशा के लिए सोना चाहती हूँ, तुम्हारे ख्वाब के लिए। शायद मरने के बाद भी मैं कभी तुम्हें भुला नहीं पाऊँगी। अब मैं तुमसे बहुत दूर जा रही हूँ, बहुत दूर, एक हारे हुए इंसान की तरह जो अपना मानसिक संतुलन खो चुकी है । एक ऐसी जगह जा रही हूँ जहाँ से मैं तुम्हें देख पाऊँगी, तुम्हें देख पाने

t.me/HindiNovelsAndComics

की हसरत पूरी कर पाऊँगी। आदित्य समय का ही तो फासला था, नहीं जानती कि तुमने देर कर दी या मैंने जल्दी कर दी, तुम्हें तो एहसास भी नहीं है मेरी भावनाओं का।

आकाश को पाने का सपना देख लिया था, लेकिन जो पाया जा सकता है वही तो मिलेगा।

जानती हूँ जब तुम यह सब पढ़ोगे तो मेरी मूर्खता पर हँसोगे, रोना चाहोगे लेकिन रो नहीं पाओगे। आदित्य, मैं हमेशा के लिए जा रही हूँ। वैसे तो जिंदगी बहुत छोटी है, लेकिन किसी के साथ के बिना बहुत लंबी और तन्हा लगती है। इसी तरह मेरी जिंदगी का सफर बस यही तक था।

“तुम्हारी माही”

इस काली रात में मेरा बेचैन दिल थम जायेगा। कई अधूरी ख्वाहिशें अपने अंदर दफनाये हुए। मैंने दोनों लेटर पास रख लिये। बॉक्स में जितनी भी नींद की गोलियाँ थी सब खाकर एक गहरी नींद सो जाने के लिए लेट गयी।